साबी नदी

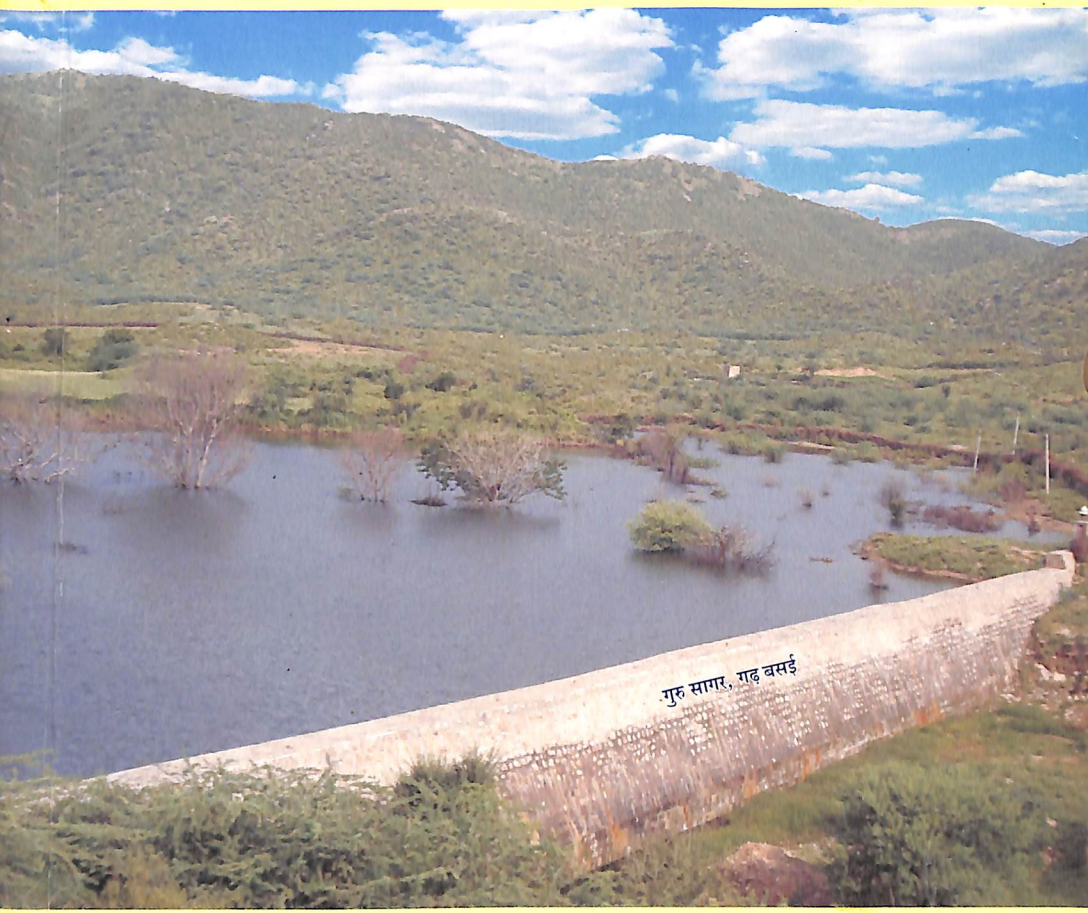

गोपाल सिंह

टोरड़ा ब्राह्मणान का जोहड़

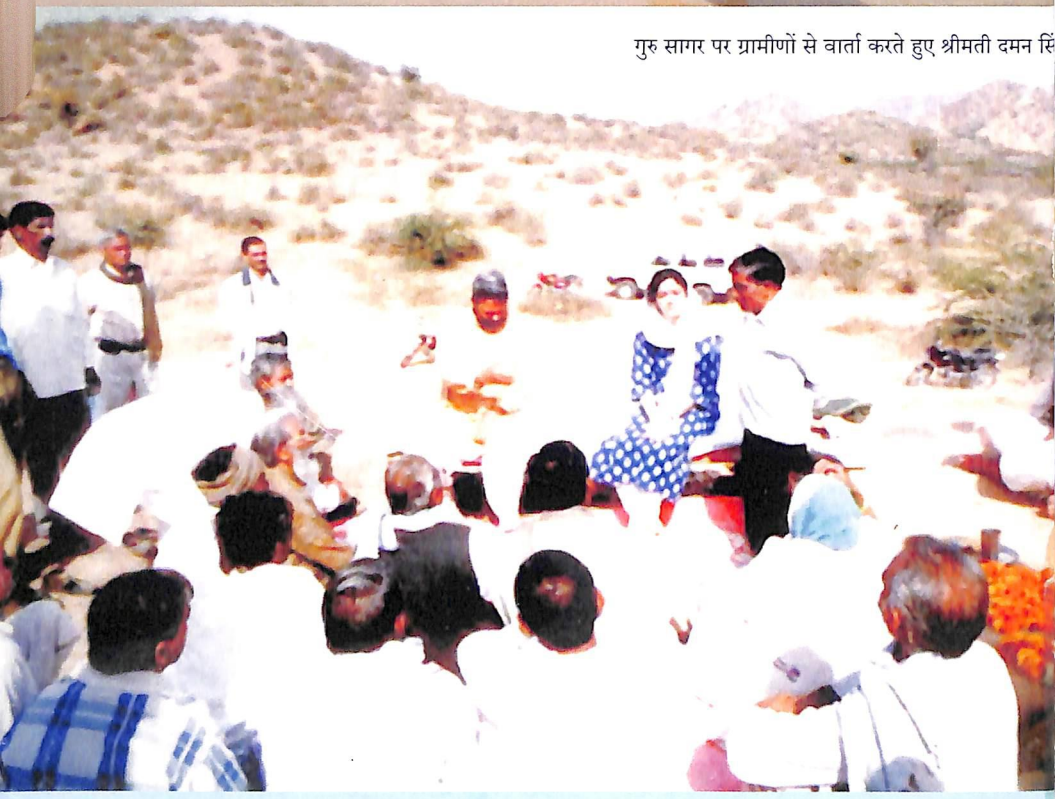

गुरु सागर पर ग्रामीणों से वार्ता करते हुए श्रीमती दमन सिं

साबी नदी

गोपाल सिंह

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, किशोरी, थानागाजी, अलवर–301022
(राजस्थान)

प्रथम संस्करण	:	जून, 2010
द्वितीय संस्करण	:	दिसम्बर, 2016
सम्पादक	:	चिरंजीलाल शर्मा (अध्यापक)
लेखक	:	गोपाल सिंह
सहयोग	:	कन्हैयालाल गुर्जर, जगदीश गुर्जर, श्रवण शर्मा, छोटेलाल मीणा, मुरारीलाल शर्मा, रामेन्द्र सिंह, रामकरण गुर्जर, महेश चन्द्र शर्मा, चिरंजीलाल शर्मा, फतेह सिंह, देवयानी कुलकर्णी, विनोद कुमार
ग्राफिक्स	:	देवयानी कुलकर्णी, विनोद कुमार
प्रकाशक	:	तरुण भारत संघ, भीकमपुरा, किशोरी, थानागाजी अलवर–301022, (राजस्थान) दूरभाष : 01465–225043
वितरक	:	जल बिरादरी 34/46, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर–302020 दूरभाष : 0141–2393178
Email	:	watermantbs@yahoo.com jalpurushtbs@gmail.com
मूल्य	:	100 रुपये
रूपांकन,एवं मुद्रण	:	कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

समर्पण

भारत की नदियों के लिए पूर्ण समर्पित व भागीरथी गंगा के लिए एक 'गंगा भक्त'
के नाते आत्मोत्सर्ग हेतु तत्पर भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. जी.डी. अग्रवाल एवं
एक तटस्थ पर्यावरणीय वैज्ञानिक की भूमिका निभाने वाली, भारत के प्रधानमंत्री माननीय
मनमोहनसिंह सिंह जी की सुपुत्री श्रीमती दमनसिंह तथा ग्रामीण क्षेत्र में
जल, जंगल, जमीन व सामाजिक कार्यों के लिए पूर्ण समर्पित श्रीमती मगन कँवर,
श्री महेशचंद शर्मा, श्री रामकरण गुर्जर, श्री रामगोपाल गुर्जर, श्री शैतानसिंह,
श्री लल्लूराम गुर्जर व श्री जसवंत 'सरपंच' को सादर समर्पित

भूमिका

साबी नदी कभी मेरे गाँव के रास्ते में वजीराबाद पुल के पास जाकर यमुना में मिलती थी। मैंने अपने बचपन के दिनों में इस नदी को स्वयं अपनी आँखों से बहते हुए यमुना में जाकर मिलते हुए देखा था। और आज अपनी जवानी में, मैं इसे नजफ़गढ़ नाले के रूप में देखता हूँ। मैं बचपन में नहीं जानता था कि मैं एक दिन साबी के सबसे ऊपर के गाँव में काम करूँगा। मैं जैसे ही जवान हुआ और शादीशुदा होकर गृहस्थ बना, तभी जयपुर आ गया। यहाँ नेहरू युवा केन्द्र में पहले राष्ट्रीय सेवा कर्मी और बाद में परियोजना अधिकारी बना। फिर नौकरी छोड़ कर मैं थानागाजी के गाँवों में पहुँच गया। यहाँ सूरतगढ़ गाँव के श्री सुमेर सिंह जी से सम्पर्क हो गया। उन्होंने अपने मौंसेरे भाई गढ़बसई गाँव के गोपाल सिंह को हमारे साथ जोड़ दिया।

गोपाल सिंह मेरे एक साथी के रूप में 1987 में मेरे साथ जुड़े थे। इनका सबसे पहला प्रशिक्षण हमने सूरतगढ़ गाँव के 'श्री लक्कड़दास जी महाराज' के स्थान पर किया था। उस पहले प्रशिक्षण के बाद से आज तक ये मेरे साथ हैं और भगवान की मर्जी रही तो लगता है कि यह आजीवन ही साथ रहेंगे। ये एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं। इन्होंने भी अपनी जवानी नदियों को पुनर्जीवित बनाने में ही लगाई है। साबी नदी के राजस्थान में पड़ने वाले हिस्से में नदी को पुनर्जीवित करने का काम इन्होंने अपने गाँव गढ़बसई से ही शुरू किया था। साबी नदी की एक धारा गढ़बसई गाँव से ही शुरू होती है।

इस पुस्तक के पाठक यह जान लें कि कोई भी व्यक्ति अकेला किसी नदी को पुनर्जीवित नहीं कर सकता। लेकिन एक व्यक्ति भी नदी के पुनर्जीवन की प्रक्रिया अवश्य शुरू कर सकता है। ऐसी ही कहानी साबी नदी की भी है। इस नदी का काम तो एक ही व्यक्ति ने शुरू किया, पर इसे पुनर्जीवित करने के प्रयास में लाखों लोगों के हाथ लगे। उन लाखों लोगों के नाम देना तो

यहाँ मुश्किल है, पर सैकड़ों लोगों के नाम देने का मन बहुत हो रहा है। सबसे पहले मैं उन दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देते हुए स्मरण करता हूँ, जिन्होंने अपने जीवन काल में मेरे साथ मिल कर किसी न किसी रूप में इस नदी को सदानीरा बनाने का प्रयास किया। उनमें से कुछ ये हैं:–

सर्व श्री बालकनाथ जी महाराज–स्थान धूणीनाथ जी, दीवान साहब बजरंग सिंह जी, प्रभात गुर्जर (गढ़बसई); दीनदयाल जी पुजारी– मन्दिर कालीदास (सालेटा); बाबा श्री मस्तराम जी महाराज (जादू का बास), मुरारी लाल जी शर्मा (मालूताना), मंगत राम शर्मा, रामेश्वर दयाल शर्मा 'मुकाती' (तिबारा); हनुमान जाट (विजयपुरा); श्री नंछूदास जी महाराज–स्थान मन्दिर पुरुषोत्तमदास जी (नारायणपुर); गणपत लाल बडवाड़ी, ग्यारसी लाल गुर्जर, मूलचन्द शर्मा, हीरा लाल चौधरी, भौंरे लाल शर्मा, कन्हैया लाल (गढ़ी मामोड़); श्रीराम गुर्जर (बिलाळी); मातादीन सिंह (लेकड़ी); घनश्यामदास जी महाराज–मन्दिर फूट्या जोहड़ा, (बास दयाल); छींतर रावत (मोरोड़ी); श्योनारायण गुर्जर, मातादीन जांगिड़ गीदाराम गुर्जर (बबेड़ी); गुरुदयाल गुर्जर, सुरजाराम (झीड़ा की ढाणी); बसावण राम गुर्जर, मोजीराम (मुगलपुर); हनुमान सहाय गुर्जर (देवसन); हरदाराम गुर्जर (नारोळ); सिंहाराम चौधरी (लाडपुर); एवं जीत खाँ 'शायर' (सरहटा) आदि।

इनके अलावा जिन लोगों ने पानी के काम के लिए पूर्व में भी किसी न किसी रूप में सक्रिय योगदान किया तथा आज भी साबी नदी को पुनः जीवित करने के सपने को साकार करने के लिए अपना अमूल्य समय देते हैं, उनमें से ये प्रमुख हैं:–

सर्व श्री भोलानाथ जी महाराज–स्थान धूणीनाथ जी, महेशचन्द शर्मा (मास्टर जी), शान्तनु नरेश शर्मा, चिरंजी लाल शर्मा, राधेश्याम अग्रवाल, फ़तेह सिंह, बाईसा मगन कँवर, नवल सिंह, दलवीर सिंह, मातादीन सिंह, हरसहाय गुर्जर, नन्दा पटेल, भैंरूराम सैनी, शम्भू दयाल सैनी, कैलाश सैनी, हजारी सैनी, हनुमान सहाय धानका, ग्यारसा खटीक, लालाराम रैगर व सुभाष रैगर (गढ़बसई); ईश्वर यादव, रामेश्वर यादव 'सरपंच', भैंरू सिंह यादव व प्रभु दयाल यादव (गोवड़ी); ठा.सा. राजेन्द्र सिंह, सुशीला (सालेटा); शैतान सिंह, कल्लू गुर्जर (नांगलबानी); जगदीश मीणा, महादेव मीणा (झाँकड़ी); बनवारी लाल शर्मा (रूपू का बास); गणपत लाल योगी (नाथूसर); मोहन लाल जोशी, साधूराम शर्मा, हनुमान सहाय शर्मा, सूरजमल शर्मा, प्रहलाद शर्मा, श्याम शर्मा, कैलाश सैन (तिबारा); सुल्तान गुर्जर, छाजूराम गुर्जर, नाथूराम गुर्जर (बसई जोगियान); श्री जनार्दनदास जी महाराज,

रोताश सैनी (नारायणपुर); छोटू सिंह, रामकरण गुर्जर, मातादीन गुर्जर, किरोड़ीमल शर्मा, बद्री प्रसाद सैनी, छोटेलाल तेली, गेंदालाल मीणा, (गढ़ी मामोड़); जगदीश शर्मा, धूणीलाल शर्मा, फूलचन्द दोराता (बड़ागाँव, बिलाळी); शीशराम चौधरी (काँकरियाँ की ढाणी); ओमप्रकाश जोगी, लालाराम जोगी (ज्ञानपुरा); चौथमल गुर्जर (कोठ्याँ); देवकरण गुर्जर, छींतर गुर्जर, हजारी गुर्जर (पाली बुर्जा); लहरी राम गुर्जर, बीरबल गुर्जर, बंशी गुर्जर, कालूराम (जगतपुरा); ताराचन्द टेलर, बिरदाराम गुर्जर, माधाराम गुर्जर, मूलचन्द गुर्जर, राजपाल गुर्जर (चतरपुरा); हरदान गुर्जर 'फूट्या जोहड़ा' (बास दयाल); पाबूदान सिंह, भवानी सिंह, नरेन्द्र सिंह (बीलाट); नारायण सिंह, रत्तीराम, भवानी सिंह, रोताश शर्मा (बिशाळू); रामजीलाल धानका, सूरजभान धानका, रामजीलाल शर्मा (लेकड़ी); ताराचन्द, सरदारा, विमला देवी (छावड़ियों की ढाणी); भागीरथ गुर्जर, सुल्तान गुर्जर, प्रकाश शर्मा (माँची); बनवारी लाल गुर्जर, फूलचन्द धानका, पूरणमल जांगिड़, लालूराम गुर्जर (मोरोड़ी); वैद्य रामकुँवार गुर्जर, जगदीश गुर्जर, धनसी गुर्जर (झीड़ा की ढाणी); महन्त श्री अरुण भारती जी महाराज, जसवंत सरपंच, गणेश गुर्जर, माड़िया गुर्जर, भम्भू गुर्जर, रामशरण कबाड़ी (बबेड़ी);

रामजीलाल गुर्जर, रोताश गुर्जर, पूरण गुर्जर, जगदीश गुर्जर (मुगलपुर); माड़ा राम गुर्जर, प्रकाश गुर्जर, शीशराम गुर्जर (देवसन); गणपत गुर्जर, खेमा गुर्जर, बाबूलाल स्वामी (नारोळ); मूलचन्द गुर्जर (गुवाड़ाँ); रामकुँवार जी शर्मा, अशोक शर्मा (लाडपुर); जसवंत सिंह जी, फूस्या राम (मुकुन्दपुरा); रामजीलाल गुर्जर (कटारियाँ का बास); मामराज चौधरी, भूप सिंह (गुढ़ा कल्याणपुरा); गोपाल गुर्जर, किशनलाल गुर्जर, रामसहाय गुर्जर (बूजा); रणजीत सिंह, राजेश शर्मा, रामजी लाल बलाई, शकुन्तला सोनी (मालूताना); देवकरण गुर्जर, राजू गुर्जर (कांखराना); फूलाराम गुर्जर, हरसहाय गुर्जर, नेतराम गुर्जर (सोठ्याना); मोजीराम शर्मा, रामचन्द्र दायमा, बावरिया परिवार (देवली); रामेश्वर गुर्जर, ख्यालीराम गुर्जर (तालू का बास); लल्लूराम गुर्जर, लीलाराम गुर्जर (जादू का बास); छींतर बलाई (गोगेरा); हरफूल यादव (बहरमपुरा); मक्खन गुर्जर, धर्मकुमार मास्टर, बाबूलाल बलाई (लाखाळा); हनुमान शर्मा, विश्वम्भर दयाल जोशी, चन्दर गुर्जर (छींतोली); रामचन्दर गुर्जर, पालाराम गुर्जर, ग्यारसीलाल गुर्जर (बरड़ा की ढाणी); दग्गड़ (खरबूजी); श्रवण सिंह,

प्रहलाद सिंह (सूरजमल की ढाणी); सुन्दर लाल गुर्जर, रामू गुर्जर, हरफूल, शिम्भू (बयावास); राम प्रताप सरपंच (उदय सिंह की ढाणी) हाजी फजरु, युनूस, लियाकत, हासन, जबरदीन (शादीपुर) हारून (ढाकपुरी), प्रभु (बाझोट) आदि।

इनके अलावा भी बहुत सारे लोग और हैं, जिन्होंने किसी न किसी रूप में साबी नदी को सजल बनाने में योगदान किया है, पर सबके नाम देना सम्भव नहीं है। इनमें से कुछ लोगों ने तो साबी नदी में पानी के काम के लिए अपने आप को समर्पित ही कर दिया है। उनमें से मैं बाईसा मगन कँवर (गढ़बसई) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय मानता हूँ। इन्होंने अपनी रुचि, शक्ति और समझ से साबी नदी के ऊपरी हिस्से को सजल और समृद्ध बनाने में तथा गाँव के जंगल को बचाने में पहल की है। मगन कँवर ने राजपूत परिवार से होने के बावजूद अपने समय, श्रम, व शक्ति को गाँव के साधारण से साधारण व गरीब अमीर सबको संगठित करके पानी व जंगल के काम में ही लगाया है। इन्हीं के साथ श्री महेश चन्द जी शर्मा, चिरंजी लाल जी शर्मा, फ़तेह सिंह जी, रामेश्वर यादव और ईश्वर यादव जैसे अन्य बहुत सारे कर्मठ कार्यकर्ताओं ने भी गढ़बसई और गोवड़ी के लोगों को संगठित कर के इस काम को और आगे बढ़ाने में योगदान किया है।

बूजा गाँव के राम गोपाल गुर्जर, किशन गुर्जर व जादू का बास के लल्लू राम गुर्जर व बरड़ा की ढाणी के रामचन्दर गुर्जर ने भी इसी तरह से साबी नदी को सजीव बनाने का प्रयास किया है। गढ़ी मामोड़ के रामकरण गुर्जर तो एक ऐसे इंसान हैं, जिन्होंने अपने गाँव के लोगों को संगठित करके सबसे पहले उन्हें जल, जंगल व जमीन के काम के साथ ही जोड़ा। इन्हीं के गाँव के छोटू सिंह जी तो पानी के काम के लिए पूर्णरूपेण समर्पित हैं। विजयपुरा के हनुमान जाट आज हमारे बीच नहीं हैं, पर पुस्तक में उनका नाम भूलना बेमानी होगा। उन्होंने अपनी जवानी में जल–क्रान्ति करने का पाठ पढ़ा था, जिसे वह आजीवन करते रहे।

जलागम–क्षेत्र की दृष्टि से साबी नदी हमारी सात नदियों में एक बड़ी नदी मानी जाती है। यह राजस्थान के गाँवों से शुरू होकर हरियाणा होते हुए दिल्ली तक की यात्रा करती

है। भू–जल के कुप्रबन्धन व अत्यधिक शोषण ने इस नदी की हत्या कर दी है। बची–खुची नदी को हरियाणा में इस नदी पर बने बड़े–बड़े बाँधों ने भी इसके रास्तों को बदल दिया है। राजस्थान में इस नदी के ऊपरी हिस्से में हम लोगों ने छोटे–छोटे बाँध बना कर इसे पुनः सजीव बनाया है। इसे सजीव बनाने की प्रक्रिया को चलाने में अन्य जिन लोगों ने सहयोग दिया है, मैं उन सब को भी तरुण भारत संघ की ओर से हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। सरकारी तंत्र द्वारा भू–जल के कुप्रबन्धन व शोषण के कारण मर चुकी साबी नदी को लोगों की मेहनत से गढ़बसई गाँव में एक बार पुनः बहती हुई देखने की बात को याद कर के मेरा मन गद्‌गद् हो उठता है। मेरी तमन्ना है कि गढ़बसई की तरह ही दिल्ली व वजीराबाद में भी साबी नदी में पानी मिले। साबी नदी कहीं निर्जल नाला ही बन कर न रह जाय। यह दुबारा सजीव बने; ऐसी मेरी कामना है। राजस्थान के गढ़बसई व नाँगलबानी गाँवों से शुरू होने वाली यह नदी राजस्थान व हरियाणा के बाँधों को भरती हुई दिल्ली व यमुना में पहुँचे। इसके लिए साबी नदी क्षेत्र के लोग सक्रिय हों। वे अपनी एक 'साबी संसद्' बना कर उसे शुद्ध सदानीरा बनायें और उसे यमुना तक ले जाने का सद्‌प्रयत्न करें। इस काम के प्रति लोगों का यदि निरन्तर प्रयास रहेगा, तो प्रकृति भी उनका सहयोग करेगी और तब साबी नदी फिर से बहने लगेगी। दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान की सरकारें भी इसे पुनर्जीवित करना चाहती हैं। यह राजधानी परिक्षेत्र की नदी है, राजधानी परिक्षेत्र से ही शुरू होती है और अन्त में राजधानी परिक्षेत्र में ही यमुना में मिल कर गुमनाम हो जाती है।

राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष
तरुण भारत संघ

प्रो स. प्र. गौतम
अध्यक्ष
Prof. S. P. Gautam
Chairman

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
(भारत सरकार का संगठन)
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय
Central Pollution Control Board
(A Govt. of India Organisation)
Ministry of Environment & Forests
Phone : 22304948 / 22307233

प्राक्कथन

माननीय श्री राजेन्द्र सिंह जी 'जल पुरुष' द्वारा साबी (साहिबी) नदी पर लिखित पुस्तक एक कर्मयोगी के 'जल संरक्षण एवं नदी पुनर्जीवन' रूपी कर्मयोग की एक झलक को दर्शाती है। जिस प्रकार नदी पानी की एक–एक बूँद को एकत्र कर परोपकार की भावना से ओतप्रोत एक निश्चित दिशा में बहने लगती है, उसी प्रकार 'जल पुरुष' विशेषण से विभूषित श्री राजेन्द्र सिंह जी ने अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को नदियों के पुनर्जीवन की प्रक्रिया में प्राकृतिक उत्थान एवं जन कल्याण की भावना के साथ अपने समस्त परोपकारी मित्रों की (जिनकी एक लम्बी सूची उन्होंने पुस्तक में दी है) टोली के साथ साबी नदी के एक छोर को सहेजने एवं जल संरक्षण में समर्पित किया है, जिसका अपेक्षित परिणाम भी स्पष्टत: परिलक्षित है। साहिबी को सदानीरा बनाने के आपके अथक प्रयास तथा साहिबी के यमुना मिलन–बिन्दु को भी लबालब स्वस्थ पानी की चाहत, दिल्ली वासियों के लिए भी बड़ी राहत दिलायेगी।

आपने लेखनी से सभी जल संरक्षण में कार्य करने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के विचारों और अनुभवों के साथ–साथ ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विविधताओं को समाहित कर अन्य सभी जिज्ञासुओं के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

वर्तमान में, मैं भी दिल्ली निवासी हूँ। साहिबी नदी का पुनर्जीवन राजधानी दिल्ली की जल समस्या के निवारण का एक मुख्य साधन बन सकता है। यमुना से बाढ़ के पानी को साहिबी नदी में भरने से इसका पुनर्जीवन संभव है। ऐसी मेरी मान्यता है।

आशा है जल संरक्षण एवं नदियों के पुनर्जीवन के प्रयास में विभिन्न राज्य सरकारें (जहाँ साहिबी का प्रवाह पथ है) एवं केन्द्र सरकार सहयोग कर साहिबी नदी के साथ–साथ यमुना के पुनर्जीवन को सार्थक स्वरूप देंगे। देश में जल संरक्षण एवं नदियों को पुनर्जीवित करने का प्रयास देश को जल संकट की गंभीर समस्या से मुक्त करने में सहायक होगा। ऐसे पुण्य कार्य में समस्त देशवासियों एवं सरकारों का समुचित सहयोग वांछित है।

मैं तरुण भारत संघ के सभी पदाधिकारियों एवं परोपकारी बंधु–बांधवों के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ एवं इस कार्य की सफलता की कामना करता हूँ।

(प्रो. एस.पी. गौतम)
पूर्व कुलपति
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

'Parivesh Bhawan' C.B.D.-cum-Office Complex, East Arjun Nagar, Delhi-110032
Fax : 22304948 / 22307078 email : cpcb@alpha.nic.in
Website : http://www.cpcb.nic.in

सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण !

मैं लेखक या सम्पादक तो नहीं हूँ, किन्तु शिक्षा जगत् से अवश्य जुड़ा हुआ हूँ। मैं बच्चों को शिक्षा व संस्कार सिखाने के साथ-साथ स्वयं भी उनसे बहुत कुछ सीखते रहने का सतत रूप से प्रयास करता आ रहा हूँ। तरुण भारत संघ ने मुझे 'साबी नदी' पुस्तक के सम्पादन की जिम्मेदारी देकर भावी जल-समस्या पर गम्भीरता से सोचने का एक सुअवसर प्रदान किया है।

मैं तरुण भारत संघ का आभारी हूँ, जिसकी प्रेरणा से मुझे उनके द्वारा किये गये जल, जंगल व भू-संरक्षण जैसे पुनीत कार्य में उनके साथ भागीदारी निभाने का एक अवसर सुलभ हुआ । संस्था से मेरा सम्पर्क सन् 2000 से प्रत्यक्ष रूप से अनवरत बना चला आ रहा है। यह संस्था, समाज के लिए समाज की सहभागिता से ही जल संरक्षण का कार्य करती है, जिससे समाज निरन्तर लाभान्वित होता रहा है ।

'मेरा गाँव पानीदार बने' इस सपने को साकार करने के लिए मैंने अपनी जन्मभूमि से जन्मी साबी नदी के व्यर्थ बहकर जाते जल को संचित करने का प्रयास किया है। तेज बारिश में प्रचण्ड प्रवाह के रूप में बहकर जाते गाँव के वर्षा-जल को हमने गाँव के श्रम से रोका है। हमने पिछले एक-दो दशक से गाँव के सीमा-क्षेत्र में छोटे-बड़े जोहड़-बाँध निर्माण करके अपने गाँव को 'पानीदार गाँव' बनाने का स्वप्न लगभग पूरा-सा कर लिया है। बस ! इन्द्र देव की कृपा की जरूरत है ।

गत वर्षो में जब मनसा सागर, गुरु सागर व गाँव के अन्य बाँधों में पानी लबालब भरा, तो हमारे गाँव व पड़ोसी गाँवों के कुओं का जल स्तर काफी ऊपर आ गया था। यह एक अनूठा किन्तु प्रत्यक्ष प्रयोग था। इससे किसान भाइयों को कई गुणा लाभ हुआ ।

भारतीय दर्शन में पानी 'जीवन' है। जहाँ पानी है, वहाँ सुन्दर प्राकृतिक छटा है। इसे देख–देख कर हृदय आनन्दित होता है। क्यों न हो ? पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, जंगल, लता.....सभी तो पानी का सुख चाहते हैं।

अन्त में मैं तो यही चाहूँगा कि हर गाँव, ढाणी, कस्बा, शहर, प्रान्त व देश की हर नदी में वर्षा जल को संचय करने हेतु विश्व का हर मानव अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझ कर काम करे। हर व्यक्ति इस यज्ञ में अपने हाथों से आहुति देकर अपने जीवन को सफल बनाये। हमारे पुराणों में जल संरक्षित करने हेतु तालाब, सरोवर, कुएँ, बावड़ी आदि संरचनाओं के निर्माण व प्रतिष्ठा की विधियों का बड़ा महत्त्व बताया गया है। तालाब, कुएँ और बावड़ी आदि बनाने के काम को विधि–विधान व श्रद्धा से करते रहने के कारण ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति में युगों–युगों तक जल संरक्षण की जीवन शैली संरक्षित रही है।

मेरी साबी नदी मेरे प्रान्त व मेरे देश के लिए एक वरदान बनकर सभी को प्रफुल्लित करे, ऐसी मनोकामना के साथ यह पुस्तक आपकी सेवा में प्रस्तुत है

चिरंजी लाल शर्मा
(अध्यापक) गढ़बसई

प्रस्तावना

पुस्तक लिखने का यह मेरा पहला प्रयास है। मैं कोई लेखक नहीं हूँ और न ही मुझे कभी लेखन करने का अवसर ही मिला है। मुझे शिक्षा का अवसर भी पर्याप्त नहीं मिला; लेकिन पुस्तकें पढ़ने का शौक़ मुझे बचपन से ही रहा है। पाठ्यक्रमेतर अध्ययन के मेरी रुचि के विषय अध्यात्म, विज्ञान, पर्यावरण, गणित, भाषा–व्याकरण, इतिहास और भूगोल आदि रहे हैं। इन विषयों में अभिरुचि पैदा करने का श्रेय यद्यपि मेरे प्रारम्भिक गुरुजनों को ही जाता है; लेकिन इन विषयों को कार्य रूप में परिणत करने का अवसर मुझे तरुण भारत संघ जैसी संस्था में रह कर ही मिल सका। तरुण भारत संघ के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह जी ने मुझे बार–बार प्रेरित कर पुस्तक लिखने के लिए तैयार किया। उन्हीं की प्रेरणा से यह पुस्तक इस रूप में तैयार हो पाई है।

तरुण भारत संघ इस क्षेत्र में 1985 में आया था। प्रारम्भ में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संगठन के माध्यम से ग्राम स्वावलम्बन का कार्य करने वाली इस संस्था ने कुछ ही दिनों बाद ग्राम–स्वावलम्बन के कार्य हेतु माध्यम के रूप में जन–सहभागिता से वर्षा–जल–संरक्षण के कार्य को चुन लिया था। इस काम से एक तरफ जहाँ इस क्षेत्र की कुछ नदियाँ पुनर्जीवित हुईं, वहीं दूसरी तरफ कुछ नदियों के पुनर्जीवन की सम्भावना भी दिखाई देने लगी।

साबी नदी इस क्षेत्र की एक बड़ी नदी है, जिसका अधिकांश भाग पिछले 30–35 वर्षों पूर्व ही पूरी तरह से सूख गया था। यद्यपि यह नदी आज भी पूरी तरह से सूखी हुई है, किन्तु इसे पुनर्जीवित करने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। बूजा गाँव की 'बूज गंगा' बूजा में बाँध बनने के बाद कई सालों तक बहती रही है। इधर गढ़बसई गाँव की 'गुरु गंगा' यद्यपि वर्षा के अभाव के कारण भले ही अभी तक एक ही बार बहती हुई देखी गई है; लेकिन इसके असर को देखकर एक सम्भावना अवश्य स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आती है कि यदि पूरे नदी जलागम क्षेत्र में ऐसे ही सक्षम

काम हो जाएँ, तो आज भी साबी नदी का पुनर्प्रवाह असम्भव नहीं है। पहली बार जब उक्त दोनों गाँवों के बाँधों में पानी भरा था, तो उसके कारण होने वाले भूमिगत जल–प्रवाह ने अपनी नदी को एक बार फिर से अपने समृद्ध अतीत की याद दिला दी थी।

पिछले दो वर्षों से पड़ रहे अकालों के कारण वर्तमान में पानी की स्थिति यद्यपि भयावह हो गई है, पर दो साल पूर्व का दृश्य याद करके यह स्पष्ट रूप से निश्चय हो जाता है कि यदि इस वर्ष भी बरसात अच्छी हुई होती और ये बाँध भर गये होते तो आज भी यह नदी बह रही होती। तब यहाँ आज का जैसा जल–संकट नहीं होता। पर अब भी यह तो उम्मीद है ही कि जब–जब भी इन्द्र देव की कृपा होती रहेगी, तब–तब इन बाँधों के भर जाने के कारण यहाँ पानी का संकट नहीं आयेगा। इन कामों को देखकर अन्य गाँवों में भी और सघन काम करके इस नदी को पुनर्प्रवाहित करने का प्रयास किया जा सकता है। इसके अलावा जहाँ–जहाँ पानी के काम नहीं हुए हैं, वहाँ के लोग भी इससे पानी के काम की सीख ले सकेंगे।

आज पूरे विश्व में पानी का जो संकट पैदा हुआ है, उसका प्रमुख कारण बरसात का न होना इतना नहीं है, जितना मशीनीकरण के कारण लगातार दिन–रात धरती माता के पेट में किये जा रहे छिद्रों से पानी का अत्यधिक दोहन करते जाने के कारण होता जा रहा है। यह एक ऐसी ज्वलन्त समस्या है, जिसका यदि तत्काल समाधान नहीं किया गया तो सिंचाई के लिए तो दूर, पीने के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं होगा। इस बात का चिन्तन आखिर तो समाज को ही करना पड़ेगा। दूसरी तरफ अकाल के लिए भी तो हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं न। हम बिना सोचे–समझे, रात–दिन लगकर, बचे हुए सीमित जंगलों का भी नाश करते जा रहे हैं और दोष देते हैं प्रकृति को। इस सबका समाधान हमें ही खोजना होगा। हमें हौसला रखना होगा और जिन गाँवों में पानी और जंगल को बचाने के अच्छे काम हुए हैं, उनसे सीख लेकर भावी पीढ़ी को जल–संकट से बचाने का प्रयास करना होगा।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए मेरे मन में इस पुस्तक को लिखने का विचार आया है। इस पुस्तक में अतिशयोक्तियों से यथा सम्भव बचने का प्रयास किया गया है। फिर भी यदि पाठकों को ऐसा कुछ लगे तो उनसे आग्रह है कि वे इसमें से केवल अच्छाइयों को ही ग्रहण करें।

पुस्तक के लिए कार्य–क्षेत्र से सामग्री संकलन व जी.पी.एस. से ग्लोबल पोजीशनिंग लेने के कार्य में सर्व श्री मुरारी लाल शर्मा, जगदीश गुर्जर, श्रवण शर्मा, कन्हैयालाल गुर्जर व छोटेलाल मीणा (तरुण भारत संघ); लल्लूराम गुर्जर (जादू का बास); रामचन्दर गुर्जर (बरड़ा की ढाणी– छींतोली) व रामू गुर्जर (बयावास) आदि का पूरा सहयोग रहा है। मेवात के साबी क्षेत्र में मैं श्री जगदीश गुर्जर व श्री रामेन्द्र सिंह के सहयोग को उल्लेखनीय मानता हूँ। पुस्तक के लेखन कार्य में सहयोग हेतु मैं श्री बिल्लौरे साहब, श्री कन्हैया लाल गुर्जर, सुश्री देवयानी कुलकर्णी (तरुण भारत संघ); श्री महेश चन्द जी शर्मा, श्री चिरंजी लाल जी शर्मा, श्री फतेह सिंह जी (गढ़बसई) एवं श्री रामकरण गुर्जर (गढ़ी मामोड़) का विशेष आभारी हूँ ; जिन्होंने पुस्तक लेखन में समय–समय पर मेरा मार्गदर्शन किया। साबी नदी के मानचित्र व गढ़बसई के राजस्व मानचित्र, कुओं की लोकेशन व फोटो आदि के टंकण कार्य (कम्प्यूटर कार्य) के लिए भी मैं सुश्री देवयानी कुलकर्णी का तथा पुस्तक की लेखन सामग्री के टंकण कार्य (कम्प्यूटर कार्य) के लिए श्री विनोद कुमार का विशेष रूप से आभारी हूँ।

इन सभी ने रात–दिन लगकर पुस्तक को वर्तमान स्वरूप देने में अथक परिश्रम किया है। पुस्तक के सम्पादन के लिए मैं श्री चिरंजी लाल शर्मा (गढ़बसई) का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर इस पुस्तक का सम्पादन कार्य किया। आदरणीय भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी द्वारा साबी नदी की इस पुस्तक हेतु प्रदत्त दायित्व को पहले प्रयास में मैं कहाँ तक पूरा कर पाया हूँ, इसका निर्णय तो वह स्वयं और पाठकगण ही करेंगे। लेखन में उत्साहवर्धन के लिये मैं श्री जी.डी. अग्रवाल साहब (स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद) का विशेष आभारी हूँ; जिन्होंने प्रकाशन से पूर्व पूरी पुस्तक को पढ़कर आवश्यक सुझाव दिये।

गोपाल सिंह
तरुण भारत संघ

साबी नदी : एक परिचय

साबी नदी के भौगोलिक क्षेत्र का इतिहास

साबी नदी का जलागम क्षेत्र पुराणों में वर्णित 'उज्जानक खण्ड' के पश्चिमोत्तर भाग में आता है। उज्जानक खण्ड प्राचीन काल में एक बहुत बड़ा क्षेत्र था। यहाँ पर महर्षि कश्यप की पत्नि दिति से उत्पन्न हुए दैत्य, वीर पराक्रमी हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष का राज्य था। हिरण्यकशिपु के पौत्र दैत्यराज दानी ने महादान से पूर्व ही यह क्षेत्र अपने सेनापति मधु को दे दिया था। हरिवंश पुराण के अनुसार मधु के बाद उसके पुत्र धुन्धु ने यहाँ पर अपनी राजधानी स्थापित की; पर यह राजा बड़ा अत्याचारी और प्रजा–पीड़क था। इसकी अनीतियों से दु:खित होकर महर्षि उत्तंक ने अयोध्या के सूर्यवंशी महाराज वृहदश्व को इधर शांति स्थापना के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने पुत्र कुवलयाश्व को विशाल सेना के साथ इधर भेजा, जिन्होंने धुन्धु को मारकर यह देश अपने राज्य में मिला लिया। अत्याचारी धुन्धु को मार कर राज्य स्थापित करने के कारण ही इस उज्जानक खण्ड का नाम धुन्धुमार (ढुँढाऱ) अथवा 'ढुँढाड़' पड़ा।

इस प्रकार यह क्षेत्र दैत्यवंश की अधीनता से निकलकर सूर्यवंश की छत्रछाया में आ गया। महाराज कुवलयाश्व की 12वीं पीढ़ी में बड़े पुत्र पुरुकुत्स तो अयोध्या के राजसिंहासन पर बैठे और छोटे पुत्र अम्बरीष इस देश के अधिपति हुए। इनकी 17 वीं पीढ़ी में राजा महीधर से मगध देश के चन्द्रवंशी राजा उपरिचर ने यह देश छीन लिया।

राजा उपरिचर के पाँच पुत्र थे, जिनमें से चौथे पुत्र मत्स (मत्सिल) को यह देश सौंपा गया। भागवत पुराण में मत्सिल और कुशाश्व दोनों को चैदी देश का राजा लिखा है, पर महाभारत आदि पर्व अध्याय 64, श्लोक 45 में कुशाश्व को चैदी देश का और मत्स (मत्सिल) को मत्स्य देश का अधिपति माना गया है। राजा मत्स (मत्सिल) ने उज्जानक खण्ड अथवा ढुँढार का नाम अपने नाम पर 'मत्स्य देश' रखा और मत्स्यपुरी (माचेड़ी) नगर बसा कर उसे अपनी राजधानी बनाया। पहाड़ियों से घिरा होने के कारण तथा सामरिक दृष्टि से भी यह स्थान प्राचीन

समय से ही बड़ा महत्त्व का रहा है। उन दिनों इधर बाघेल, पाण्डव और वच्छल आदि व अन्य जातियाँ भी बसती थीं।

राजा मत्स के दो पुत्र थे सत्यसेन और वनसेन। जिनमें सत्यसेन तो अपने नाना के राज्य कलिंग देश का राजा बना और वनसेन (बेनु अथवा बीण) मत्स्य देश का राजा हुआ। बाद में वनसेन का ज्येष्ट पुत्र विराट (महाभारत कालीन) ही यहाँ का राजा हुआ। उसने मत्स्यपुरी (माचेड़ी) से 35 मील पश्चिम के पहाड़ी अंचल में अपने नाम पर 'विराट नगर' नाम का नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। विराट नगर को बैराठ के नाम से भी जाना जाता है। माचेड़ी और बैराठ के बीच गहन बीहड़ जंगलों में वनवास एवं अज्ञातवास के समय पाण्डवों ने निवास किया था, जिसके सम्बन्ध में अनेक गाथाएँ इस अंचल से जुड़ी हुई हैं। यहाँ की भीमगट्टा की पहाड़ी आज भी मशहूर

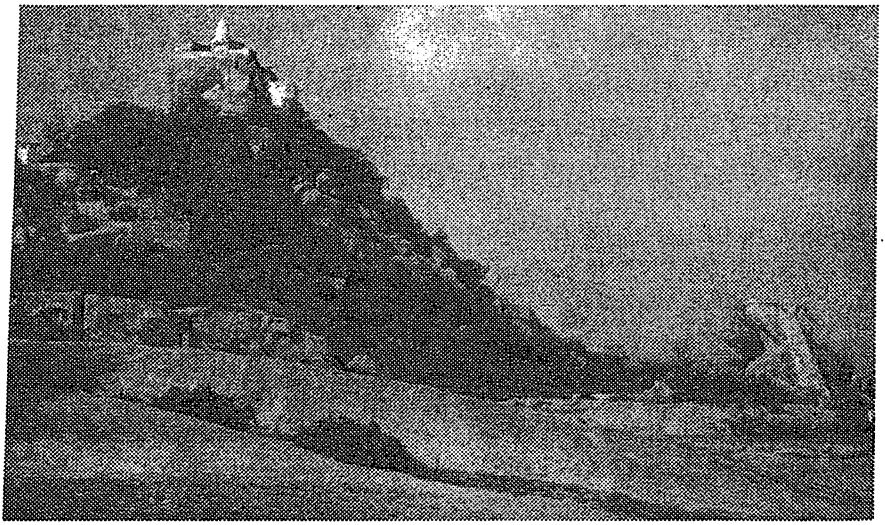

है। कौरव सेना ने राजा विराट की गायें इसी क्षेत्र में घेरी थीं, तब राजा विराट के पुत्र उत्तरकुमार ने अर्जुन की सहायता से कौरव सेना को हराया था।

महाभारत काल में अलवर में उलूक तथा राजा विराट के समीपवर्ती राजाओं में राजा सुशर्मा भी था, जिसकी राजधानी 'श्रोद्विष्ट नगरी' (सरहटा) वर्तमान तिजारा के पास थी। सुशर्मा कौरव युवराज दुर्योधन का मित्र था और उनकी

ओर से ही महाभारत के युद्ध में भाग लिया था। त्रिगर्त देश (तिजारा) छः घटकों से मिलकर बना एक गणराज्य था।

राजा सुशर्मा के वंशधरों का यहाँ बहुत काल तक अधिकार रहा। आर्कोलोजिकल सर्वे भाग–20 में लिखा है कि यदुवंशी राजा तेजपाल ने सुशर्मा के वंशधरों के पास जाकर शरण ली थी और कुछ समय बाद उसने ही 'तिजारा' बसाया था। वर्तमान मेवात क्षेत्र पर इनका बहुत दिनों तक राज रहा।

निकुम्भों ने एक दुर्ग, इन्दोर गाँव (तिजारा के उत्तर में स्थित) में बनवाया। पृथ्वीराज चौहान ने इस क्षेत्र को निकुम्भों से छीनकर अपने वंशजों को दे दिया। किन्तु 1192 ई. में मोहम्मद गौरी से पृथ्वीराज की पराजय के उपरान्त यह क्षेत्र निकुम्भों ने फिर हथिया लिया।

पाँचवीं शताब्दी में मत्स्य देश के पश्चिमोत्तरीय भाग पर ईश्वर चौहान के पुत्र और राजा उमादत्त के छोटे भाई मोरध्वज चौहान का राज बताया जाता है। इसकी राजधानी साहबी नदी के तट पर 'मोरध्वज नगर' (मोरोड़ी) थी। इस प्राचीन बस्ती के चिह्न (अवशेष) नदी के कटाव पर अब भी पाये जाते हैं।

पृथ्वीराज चौहान के वंशजों ने 1194 ई. में माँढण किले को अपनी राजधानी बनाकर वहाँ अपना राजकाज आरम्भ किया। इधर हाजीपुर में जगमाल के वंशज राव दूदा के घर मुग़ल सम्राट अकबर ने भी एक दिन अजमेर जाते हुए ठहरकर आतिथ्य ग्रहण किया था।

महमूद गजनवी के पिता सुबेदीन गजनवी ने इस क्षेत्र को रौंद डाला और जनता को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया और इस क्षेत्र को अपना राज्य बनाया। इस सम्बन्ध में दो शिलालेख प्रकाश डालते हैं। 1261 ई. में गयासुद्दीन बलवंत ने आक्रमण कर इस क्षेत्र में लूटपाट की। 1421 ई. में बहादुर नाहर का बनाया हुआ किला भी नष्ट किया गया। निकुम्भ क्षत्रियों के बाद इस क्षेत्र में खानजादों का शासन स्थापित हुआ। अलावलखाँ खानजादे ने निकुम्भ क्षत्रियों से यह भू–भाग छीनकर सन् 1492 में अलवर दुर्ग का परकोटा बनवाया।

जिस समय दिल्ली पर सुल्तान फिरोजशाह तुगलक राज्य कर रहा था, उस समय बहुत–सी जातियों को मुसलमान बनाया गया। उनमें से जो यादव गोत्र के राजपूत मुसलमान बने थे, वे खानजादा कहलाए।

वास्तव में तो 15वीं शताब्दी के आस–पास से अलवर जिला मुसलमानों की राजनीति से प्रभावित होने लगा था। खानजादाओं का इतिहास अलवर के इतिहास में उल्लेखनीय है।

अलावलखाँ का पुत्र हसन खाँ मेवाती मेवात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व था। उसके खून में हिन्दू रक्त था। वह एक देशभक्त व महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहीम लोदी की ओर से तथा उसके बाद चित्तौड़ के महाराणा साँगा की ओर से मुग़ल आक्रान्ता बाबर से जमकर लोहा लिया और खानवा के युद्ध क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुआ। बाद में बाबर ने बाला किले पर हसन खाँ के पुत्र नाहर खाँ को जीवन निर्वाह के लिए तिजारा देकर वहाँ का जागीरदार बना दिया था। बाबर 3 अप्रेल 1527 से 8 दिवस तक बाला किले में रहा था। उसने अपने पुत्र हुमायूँ को अलवर राज का खजाना सौंपा था और अपने दूसरे पुत्र मिर्जा हिन्दाल को अलवर का किला सौंप दिया था।

हसन खाँ मेवाती के भतीजे जमाल खाँ की बड़ी पुत्री से स्वयं हुमायूँ ने और उसकी छोटी पुत्री से उसके सेनापति बहराम खाँ ने शादी की थी, जिसकी कोख से हिन्दी के सुप्रसिद्ध भक्त कवि और अकबरी दरबार के नवरत्न व सेनापति अब्दुल रहीम खानखाना (रहीमदास जी) ने जन्म लिया। अकबर के शासन काल में यह क्षेत्र उसके बहनोई मिर्जा शरफुद्दीन के अधीन व औरंगजेब के राज्यकाल में यह क्षेत्र आमेर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के अधीन रहा। पतनोन्मुख मुग़ल साम्राज्य के अन्तिम दौर (1756 से 1775 ई.) में यह क्षेत्र भरतपुर के जाट राजा सूरजमल और उसके पुत्र जवाहरसिंह के अधीन भी रहा।

छठी शताब्दी में मत्स्य देश के उत्तरी भाग पर भाटी क्षत्रियों का अधिकार था। शालीवन राजा ने कोट एवं बहरोड बसाया था। तहसील मुण्डावर के सिहाली गाँव में इसके

प्राचीन खण्डहर पाये जाते हैं। इधर तालवृक्ष के पास ग्राम मुण्डावरा से प्राप्त शिव मंदिर के हर पत्थर पर ओम् शब्द गढ़ा हुआ मिलता है जो इस क्षेत्र के तत्कालीन विकास को प्रमाणित करता है।

'उज्ञानक खण्ड' या 'ढुँढार प्रदेश' अथवा 'मत्स्य देश' के नाम से विख्यात इस क्षेत्र के अन्तर्गत इसके पश्चिमोत्तरीय भाग में बहने वाली इस साबी नदी के अतिरिक्त पूर्व दिशा में 'रूपारेल नदी' तथा दक्षिण में 'बाणगंगा नदी' भी बहती हैं। ये सब नदियाँ अन्त में यमुना नदी में जाकर मिल जाती हैं।

साबी नदी का भौगोलिक परिचय

साबी नदी की मुख्य धारा का उद्‌गम राजस्थान के सीकर जिले के कस्बे अजीतगढ़ के पूर्व में दो कि.मी. दूर स्थित 'धाराजी का मन्दिर' से शुरू होता है। यहाँ से चार कि.मी. दूर दक्षिण–पूर्व में चलकर यह धारा यहाँ के प्रमुख धार्मिक स्थल 'त्रिवेणी धाम' तक आती है। वहाँ से यह धारा पूर्वोत्तर की तरफ मुड़कर 'साईवाड़' गाँव के पास एक अन्य धारा, जो पीथलपुर व छींड की तरफ से आती है, को भी अपने में मिला लेती है। फिर वहाँ से तीन किलोमीटर पूर्व में चलकर यही धारा 'बाड़ी जोडी' की तरफ से आने वाली धारा को भी मिलाती हुई आगे बढ़ती जाती है। यहाँ से दो किलोमीटर पूर्व में जाने पर इस धारा में साँवलपुरा, अजमेरी व रायपुरा जागीर की तरफ से आने वाली एक और धारा, रामपुरा के उत्तर में आकर मिल जाती है।

इससे कुछ ही दूर पूर्व दिशा में जाने पर साबी नदी की इसी मुख्य धारा में टटेरा की तरफ से आने वाली दो–तीन अन्य धाराएँ, अलग–अलग जगहों पर आकर मिल जाती हैं। इससे आगे आसपुरा व टाण्डा की ढाणी के बीच में पहुँचने पर इस धारा में मनोहरपुर के उत्तर से शुरू होकर उत्तर दिशा में ही प्रवाहित होता हुआ 'आडा नाला' नामक एक नाला लाखणी, काँट व देवन गाँवों के पानी को समाहित करते हुए शाहपुरा के रास्ते आकर मिल जाता है।

आसपुरा से आगे पूर्वोत्तर में भाभरू होते हुए आगे जाने पर खाँडा की ढाणी के पास (27' 26' 11'' उत्तरी अक्षांश व 76' 00' 36'' पूर्वी देशान्तर पर) साबी नदी की इस मुख्य धारा में, बूजा से आने वाली 'बूज गंगा' जो बूजा, बैराठ, छींतोली होती हुई सूरजमल की ढाणी के पास जाकर बीलवाड़ी व बयावास की तरफ से आने वाली धारा को भी साथ लेकर आती है, वह भी आकर मिल जाती है। यहाँ से आगे आठ कि.मी. उत्तर दिशा में तथा पावटा से दो कि.मी. पूर्व में यह साबी नदी कल्याणपुरा के पास, नीमली, फतेहपुरा, भोणास व पावटा की तरफ से आने वाली धारा को भी अपने में मिला लेती है। वहाँ से आगे पूर्व की ओर मुड़ती हुई यह नदी भाँखरी, मँढा, राजनूँता व तूराना गाँवों के पानी को भी विभिन्न जगहों पर अपने में मिलाते हुए आगे बढ़ती है।

आगे नाँगरीवास के पास (27' 37' 40'' उत्तरी अक्षांश व 76' 14' 45'' उत्तरी देशान्तर.पर) जाकर इस नदी में गढ़बसई के 'गुरु सागर' से आने वाली नदी, जो नाँगलबानी व झाँकड़ी से आने वाले 'गोछ्या नळा' को भोपाळा के पास 'नई गंगा' नामक स्थान पर अपने में मिलाती हुई, ढिगारिया, रामपुर बाँध, बसई जोगियान, नारायणपुर, अजबपुरा, खरखड़ी, गढ़ी, चतरपुरा, फूटा जोहड़ा, बुर्जा, पाली, ज्ञानपुरा, बिलाळी, बड़ागाँव, तालू का बास (रघुनाथपुरा), पाछोडाला, कारोली व कराणा गाँवों की तरफ से आने वाले विभिन्न नालों को अपने में समेटती हुई, एकदम उत्तर दिशा को मुड़ जाती है। आगे कोटपूतली से चार–पाँच कि.मी. दूरी पर इस नदी में पूर्व दिशा में बीलाट, बासना, खोरी, इन्द्राड़ा, श्यामपुरा, खेड़ा व आलमपुर आदि गाँवों की तरफ से आने वाला नाला भी आकर मिल जाता है। बींजेड़ा तक यह नदी सीधे उत्तर को बहती है, फिर वहाँ से पूर्वोत्तर को प्रवाहित होते हुए परसा का बास व मोरड़ी आदि गाँवों के पानी को मिलाती हुई, जलालपुर, जाटाँ की ढाणी के पास (27' 51' 22' उत्तरी अक्षांश व 76' 21' 31' पूर्वी देशान्तर पर) अपनी मुख्य सहायक नदी 'सोता' को अपने में समाहित कर लेती है।

सोता नदी की एक धारा अजीतगढ़ के उत्तर में गढ़ टकणेत व साँवलपुरा के आस–पास से शुरू होकर हाथीदह, जुगलपुरा, चूड़ला, बुचारा होते हुए बुचारा बाँध में जाती

है। दूसरी धारा भी सकराय, चीपलाटा, नीमवाली ढाणी, गूंवार, तेजावाला की ढाणी, चेच्याँवाला की ढाणी, जाटाला, टोडा, तेलीवाला की ढाणी, लोहारवास व किशनपुरा आदि गाँवों के बहुत सारे नालों को विभिन्न जगहों पर समाहित करते हुए बुचारा बाँध में आकर मिल जाती है। बुचारा से आगे पूर्वोत्तर में ही प्रवाहित होते हुए सोता नदी सुजातनगर के पास (27′ 39′ 28″ उत्तरी अक्षांश व 76′ 03′ 20″ पूर्वी देशान्तर पर) तालवा, पोसवालाँ की ढाणी, दाँतिल व द्वारिकपुरा की तरफ से आने वाले नाले को भी अपने में मिला लेती है। इसी से थोड़ा आगे जाने पर इसमें ढाढा, सुदरपुरा, बेरी व पुरुषोत्तमपुरा आदि गाँवों से आने वाले नाले भी मिल जाते हैं। इससे आगे खड़ब, नारेडा के नीचे से होते हुए सोता नदी पूर्वोत्तर में ही गोपालपुरा, गोनेरा, केशवाना राजपूत जाकर वहाँ से दो–ढाई किलोमीटर पूर्व में राष्ट्रीय राजमार्ग के नीचे से बहती हुई जलालपुर व जाटाँ की ढाणी के पास मुख्य साबी नदी में जाकर मिल जाती है।

सोता व साबी के इस संगम से चार किलोमीटर आगे पूर्व दिशा में ही सोडावास के पास (27′ 00′ 54″ उत्तरी अक्षांश व 76′ 24′ 5″ पूर्वी देशान्तर पर) इस संयुक्त नदी साबी में एक और सहायक नदी 'खारनळी' भी आकर मिल जाती है। खारनळी (कारनली) अथवा सुरखनळी में बानसूर क्षेत्र के बालावास, भूपसेड़ा, लाडपुर, मोठूका, फतेहपुर, गूँता, मुग़लपुर, महणपुर, मीरापुर, माँची, बबेड़ी, बाबरिया, देवसरण व तेजपुरा आदि गाँवों का पानी आता है।
यहाँ से आगे ये तीनों धाराएँ (साबी, सोता और खारनळी) संयुक्त होकर प्रवाहित होती हैं। कहावत भी है:– **"साबी, सोता सुरखनळी; तीनूँ चालैं एक गळी।" अथवा "साबी, सोता खारनळी; तीनूँ चालैं एक गळी।"**

एक जगह होने के बाद साबी नदी उत्तर दिशा में बापड़ोली तक जाती है। फिर पुनः नदी की यह मुख्य धारा पूर्वोत्तर में करणीकोट होते हुए हरमाना खुर्द के पास जाकर बाणगंगा नामक एक अन्य धारा, 'जो कि नाथूसर–लोज के पूर्वी पहाड़ के पूर्वी ढाल से शुरू होकर रामपुर चौहान से उत्तर दिशा में हाजीपुर, हरसोरा होकर आती है', को साथ लेते हुए आगे को बढ़ती है। आगे बीजवाड़ चौहान, साचूँड, कोटकासिम व कुतुबपुर जा कर साबी नदी की यह मुख्य धारा उत्तर दिशा में

आकोली गाँव के पास हरियाणा में प्रवेश कर जाती है। फिर तीतरपुर के पास यहाँ के बाँध को भरती हुई, आगे उत्तर दिशा में ही ततारपुर इस्तमरार गाँव के पास से होती हुई आगे को बढ़ जाती है।

साबी नदी की एक धारा खरेटा, जींदोली, ततारपुर और रसगन होती हुई मुहम्मदपुर तथा हाँसपुर खुर्द में सबलगढ़ (बनेटी) व पेहल के नालों को अपने में मिलाती है। हरसौली, बघेरी, खेड़ा होते हुए यह धारा करवर के पास एक अन्य नाले को, जो एक तरफ बागोर व हसनपुर के नालों को तथा दूसरी तरफ आदूपुर, शादीपुर, दमदमा, ढाकपुरी, रूपबास, कुलताजपुर, सरेटा व लपाला आदि गाँवों के नालों को तिजारा के सूरजमुखी तालाब में एकत्रित करती है। फिर तिजारा, जलालपुर व लाडपुर होते हुए यही धारा दाइका के पास बीबीरानी व पुर आदि गाँवों के पानी को भी अपने में मिला कर कोटकासिम के जमालपुर गाँव के पास मुख्य साबी (साहिबी) नदी में मिल जाती है। टपूकड़ा क्षेत्र का पानी भी साबी नदी में ही जाता है।

साबी नदी ततारपुर इस्मरार से आगे जाकर नजफगढ़ ड्रेन में मिल जाती है। यह ड्रेन दिल्ली के पास जाकर यमुना में मिल जाती है। यमुना नदी अन्य बहुत सारी नदियों को अपने में समेटती हुई प्रयाग (इलाहाबाद) में जाकर ''राष्ट्रीय नदी गंगा'' में समाहित हो जाती है। गंगा नदी भी अन्य छोटी बड़ी नदियों को अपने में विलीन करती हुई अन्त में 'गंगा सागर' में समा कर सागर–स्वरूप हो जाती है।

कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने भी अपने शासन–काल में साबी नदी में बाँध बना कर इसे रेवाड़ी की तरफ मोड़ कर ले जाने की कोशिश की थी। पर वह भी इसके प्रचण्ड प्रवाह को रोकने में असफल रहा था। इस सन्दर्भ में एक लोक कहावत प्रसिद्ध हैः–

अकबर बाँधी ना बँधूँ ना रेवाड़ी जाऊँ,
कोट तळा कर नीकसूँ साबी नाँव कहाऊँ।

साबी नदी अधिकांशतः समतल क्षेत्र से होकर गुजरती है। यह अन्य नदियों की अपेक्षा अधिक चौड़ाई में बह कर जाती है। साबी नदी राजस्थान की अन्य नदियों की तरह ही अन्त: प्रवाहित नदी है जो बरसात के बाद कुछ महीनों तक ही जमीन की ऊपरी सतह पर

बहती रही है। लेकिन पिछली लगभग तीन दशाब्दियों से इस नदी का प्रवाह लुप्तप्राय हो गया है। जमीन के नीचे अभी पानी है, पर उसे भी बहुत तेजी से निकाला जा रहा है जो इस क्षेत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इस क्षेत्र की मिट्टी विभिन्न प्रकार की है, जो बहुत उपजाऊ है। यहाँ फसल बहुत अच्छी होती है।

राजस्थान क्षेत्र में साबी नदी जलागम क्षेत्र 4350 वर्ग किलोमीटर तथा दिल्ली में साबी–यमुना संगम तक इसका कुल जलागम क्षेत्र 4442 वर्ग किलोमीटर है। अपने उद्गम स्थान पीथलपुर व बाड़ी जोड़ी से राजस्थान की पूर्वोत्तरी सीमा तक इस नदी की लम्बाई 175 किलोमीटर तथा साबी–यमुना संगम तक कुल लम्बाई 300 किलोमीटर है। साबी नदी का जलागम क्षेत्र (साबी–यमुना संगम तक) 27 डिग्री, 20 मिनट, 00 सैकण्ड, उत्तरी अक्षांश से 28 डिग्री, 31 मिनट, 00 सैकण्ड तथा 75 डिग्री, 44 मिनट, 44 सैकण्ड, पूर्वी देशान्तर से 77 डिग्री, 13 मिनट, 50 सैकण्ड, पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

साबी नदी जलागम क्षेत्र में सन् 1985 से दिसम्बर 2016 तक तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से कुल 269 जल–संरचनाएँ बनाई गई हैं, जिनकी सूची इस पुस्तक के अन्त में दी गई है।

पानी की दास्तान

जल ही जीवन है

हमारे धर्म शास्त्रों में और संस्कृत शब्दकोश में 'जल' और 'जीवन' समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द हैं। जैसा कि अलंकारशास्त्र के प्राचीन लेखक, कश्मीरी पण्डित उद्भट ने कहा है – **जीवनं–जीवनं हन्ति, प्राणान् हन्ति समीरणः।** किरातार्जुनीय में भी लिखा है – **बीजानां प्रभव नमोऽस्तु जीवनाय।** और लोक–वाणी में तो कहा ही जाता है, कि **जल ही जीवन है।**

आयुर्वेद के अनुसार जल, द्रव्य के नो प्रमुख 'कारण' द्रव्यों में से एक है। द्रव्य वह है ''जो गुण–कर्म का एक या दोनों का–आश्रय हो, तथा कार्य का (अपने से निर्मित वस्तु का) समवायिकरण हो। उपर्युक्त लक्षण 'कारण द्रव्य' का है।'' कारण द्रव्यों से ही असंख्यों 'कार्य द्रव्य' उत्पन्न होते हैं। 'कारण द्रव्य' संख्या में नो हैं। यथा– आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, आत्मा, मन, काल एवं दिशा। इन्हें 'नित्य द्रव्य' भी कहते हैं। इनमें प्रथम पाँच द्रव्य (आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी) 'पंचमहाभूत' कहलाते हैं। प्राणी जगत् में इन पाँचों का अपनी–अपनी जगह पर विशिष्ट महत्त्व है; किन्तु वायु और जल का महत्त्व सबसे प्रमुख है।

जल को संस्कृत में नार (नारः) भी कहते हैं। इसीलिए नार (जल) में अयन (निवास) होने के कारण भगवान विष्णु को 'नारायण' कहा जाता है। मनुस्मृति 1/10 में इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार दी हुई हैः – **''आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः, ता यदस्यायनं पूर्व तेन नारायणः स्मृतः।''** जल को अप् भी कहते हैं। अप् के लक्षण इस प्रकार हैं– ''जिसमें रस–रूप स्पर्श एवं शब्द गुण के साथ–साथ स्निग्धता एवं द्रवत्व गुण हों तथा जो द्रव्य जातीय हो वह अप् (जल) महाभूत है।''

उत्पत्ति :– आदि सृष्टि में प्रकृति से आकाश–वायु एवं तेजस् महाभूत की उत्पत्ति होने के अनन्तर आकाश–सूक्ष्म वायु एवं सूक्ष्म अग्नि के संसर्ग से रस–तन्मात्र (सूक्ष्म अप्) का परिवर्तन होकर अप् महाभूत (जल) द्रव्य की उत्पत्ति होती है। रस–तन्मात्र (सूक्ष्म अप्) नित्य है तथा अप् द्रव्य (जल) अनित्य है। अनित्य होने पर भी अप् महाभूत सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न होकर सृष्टि–स्थिति काल तक नष्ट नहीं होता; परन्तु रूप परिवर्तन होता रहता है। यह अपने रूप में स्थायी रहता हुआ अन्य महाभूतों के सहयोग से विविध पांचभौतिक एवं आप्य पदार्थो का उत्पादक होता है। रस, अप् द्रव्य का स्वकीय एवं जन्मजात गुण है। इस गुण के कारण अप् षड्रस (मधुर–अम्ल–लवण–कटु–तिक्त–कषाय) एवं योनि (उत्पत्ति) का मूल स्रोत है। अप् से इन रसों का प्रादुर्भाव आकाश आदि अन्य द्रव्यों के संसर्ग से होता है। अप् (जल) की चौबीस तत्त्वों में गणना है।

अप् महाभूत (जल द्रव्य) के तीन भेद हैं :–

1. **शरीर रूपी अप् –** शरीर में रस, रक्त, लसीका, मेद, शुक्र, श्लेष्मा, क्लेद तथा मूत्र आदि आप्य पदार्थ हैं।
2. **इन्द्रिय रूपी अप् :–** रसनेन्द्रिय या जिह्वा में अप् महाभूत इन्द्रिय रूप से प्रतिष्ठित है। इस भौतिक इन्द्रिय की रचना में अप् का मुख्य अंश माना जाता है, इसी से रस ग्रहण की शक्ति उत्पन्न होती है। अप् के अन्यतम रूप भौतिक जल (पानी) की सहायता से यह इन्द्रिय मधुर, अम्ल, लवण आदि षड्रसों का ग्रहण करती है।
3. **विषय रूपी अप् :–** इसे विश्व के सम्पूर्ण सरस, द्रव, स्निग्ध, पिच्छिल, शीत तथा मधुर पदार्थों के रूप में समझा जा सकता है। यह रसनेन्द्रिय का विषय है।

शुद्ध रूप से लौकिक जल पांचभौतिक होते हुए भी अप्–तत्त्व प्रधान है। शुद्ध वर्षाकालीन जल अन्तरिक्ष से जब अवतीर्ण होता है, तब वह लघु एवं प्रकृत्या शीतल होता है। इसमें अव्यक्त रस होता है। नीचे आते–आते इसका सम्पर्क, भौतिक वायु, अग्नि एवं पृथ्वी से हो जाता है। इस सम्पर्क से इसमें उक्त भौतिक द्रव्यों के अंशों का समावेश होकर अन्य विशेषताएँ भी आ जाती हैं। यह पृथ्वी पर अवतीर्ण होकर

स्थावर–जंगम जगत् के जड़–चेतन पदार्थों में प्रविष्ट होकर उनके निर्माण एवं अभिवृद्धि में सहायक बनता है तथा यही वनस्पति में षड्रस की उत्पत्ति का अनिवार्य माध्यम होता है।

लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि जल जीवन के लिए अनिवार्य पदार्थ है। इसके अभाव में प्राणी नितान्त व्याकुल होकर अन्त में निर्जीव हो जाता है। इसीलिए कहा गया है– ''जल ही जीवन है।''

विश्व में जल की उपलब्धता

पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का 71 प्रतिशत भाग जल है तथा 29 प्रतिशत भाग स्थल है। लेकिन कुल जल का 97 प्रतिशत भाग समुद्री जल है; जो अत्यन्त खारी होने के कारण पीने के अयोग्य है। 2 प्रतिशत जल बर्फ के रूप में होने के कारण प्रत्यक्ष उपयोग में नहीं आता। शेष केवल 1 प्रतिशत जल ही मानव उपयोग में आ सकता है। यह जल हमें वर्षा के रूप में तथा जोहड़, तालाब, कुओं, नदी, नालों तथा भूमिगत जल–स्रोतों के रूप में उपलब्ध होता है। पृथ्वी का समस्त जलीय भाग जल–मण्डल कहलाता है। जल–मण्डल में महासागरों और सागरों का पानी सम्मिलित है। पृथ्वी का कुल क्षेत्रफल 51 करोड़ वर्ग किलोमीटर है जिसमें से 36 करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर जल–मण्डल स्थित है। यद्यपि सभी महासागर एक ही इकाई के रूप में हैं, किन्तु मुख्य रूप से इसे चार भागों में बाँटा जा सकता है।

1. प्रशान्त महासागर – 17 करोड़ वर्ग किलोमीटर – गहराई 4280 मीटर
2. अटलान्टिक महासागर – 9 करोड़ वर्ग किलोमीटर – गहराई 3925 मीटर
3. हिन्द महासागर – 7.4 करोड़ वर्ग किलोमीटर – गहराई 3990 मीटर
4. उत्तरी ध्रुव महासागर – 1.4 करोड़ वर्ग किलोमीटर – गहराई 1200 मीटर

पृथ्वी पर समस्त जीवों का जीवन आधार जल ही है और इसका प्रमुख स्रोत स्वयं जल–मण्डल ही है। सूरज की गर्मी के कारण जल–मण्डल, भू–मण्डल व वायु–मण्डल के जल का वाष्पीकरण होता रहता है। महासागरों से जल–वाष्प ऊपर उठ कर फिर संघनित होती है। संघनित जल–वाष्प हमें वर्षा, हिम वर्षा, ओला व औस आदि के रूप में पुनः प्राप्त होती है। जल–मण्डल, भू–मण्डल व वायु–मण्डल के जल

का एक निश्चित व निरन्तर प्रक्रिया के रूप में प्रवाह होता रहता है। इस प्रक्रिया को जलीय–चक्र कहते हैं।

प्रमुख शोधकर्ता स्ट्रैलर के अनुसार महासागरों के जल का प्रति वर्ष 4.55 लाख घन किलोमीटर; स्थल–मण्डल के जलाशयों, नदियों, वनस्पतियों व मिट्टी से 0.50 लाख घन किलोमीटर तथा नगरीय क्षेत्रों से 0.12 लाख घन किलोमीटर जल का वाष्पीकरण हो जाता है। इस प्रकार सूरज की गर्मी से कुल मिला कर प्रति वर्ष 5.17 लाख घन किलोमीटर जल का वाष्पीकरण हो जाता है, जो हमें वृष्टि के रूप में पुनः प्राप्त हो जाता है। वृष्टि के रूप में महासागरों पर 4.09 लाख घन किलोमीटर व स्थल पर 1.08 लाख घन किलोमीटर जल की पुनः प्राप्ति होती है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि हमें वर्षा से प्राप्त जल से हानि होने के बजाय 0.46 लाख घन किलोमीटर जल अधिक ही मिलता है। और विचित्र संयोग की बात है कि इतना ही (0.46 लाख घन किलोमीटर) जल वर्षा के बाद धरातलीय व भूमिगत प्रवाह के द्वारा वापिस समुद्र में जाता है।

इस प्रकार धरातल से वाष्पीकृत होने वाले जल की मात्रा और वर्षा के बाद प्रवाहित होकर जाने के बाद बचे जल की मात्रा बराबर होती है। अर्थात् पृथ्वी के धरातलीय भाग से उड़ कर जाने वाला पानी, वर्षा के उपरान्त बह कर चले जाने वाले पानी के बाद बचे हुए पानी की मात्रा के बराबर ही होता है। यही प्रकृति के जलीय–चक्र की निरन्तरता की विशेषता है। लेकिन वर्षा जल को संग्रहीत करने की बहुत जरूरत है।

एक गिलास पानी की कीमत

विश्व विजेता सम्राट सिकन्दर का काफ़िला गुजर रहा था। सम्राट हाथी पर सवार था। अपार जन समूह उसे देखने को लालायित था। अत्यधिक भीड़ के कारण दूर– दराज के लोग सम्राट तक पहुँच नहीं पा रहे थे। उधर रास्ते के किनारे एक ऊँचे टीले पर बैठा एक फ़कीर (संत) हाथी पर बैठे सम्राट को बड़ी ही फटी नजर से देख रहा था। मानो वह उसे खा जाना चाहता हो। सिकन्दर को बड़ा बुरा लगा। उसने अपना दूत भेजा, फ़कीर को बुलाने को। दूत ने जब फ़कीर को सम्राट के पास चलने को कहा तो फ़कीर

ने सहज भाव से उत्तर दिया – ''मुझे तो सम्राट से कोई काम है नहीं; यदि सम्राट को मुझ से कोई काम हो तो वे स्वयं मिल लें।'' दूत ने वापस जाकर जब सम्राट को यह बात बताई तो सम्राट की उत्सुकता और ज्यादा बढ़ गई। वह स्वयं फ़कीर के पास गया। सिकन्दर ने फ़कीर से पूछा, जानते हो मैं कौन हूँ ? फ़कीर ने जवाब दिया, अच्छी तरह से जानता हूँ, तुम दुनिया की सबसे बड़ी सल्तनत, 'जिसे तुमने लाखों लोगों की हत्या करने के बाद हासिल किया है,' के मालिक सम्राट सिकन्दर हो। थोड़ा रुक कर फ़कीर पुन: बोला – ''पर शायद तुम यह नहीं जानते कि उस समस्त सल्तनत की सम्पूर्ण कीमत कितनी–सी है ?'' सिकन्दर सोच में पड़ गया।

फ़कीर ने गम्भीरता से सोच कर फिर कहा कि कुछ क्षणों के लिए भूल जाओ कि तुम एक सम्राट हो। मान लो तुम एक ऐसे रेगिस्तान में खड़े हो, जहाँ दूर–दूर तक पानी का नामोनिशाँ नहीं है। उस वक्त तुम्हें बहुत जोरों की प्यास लग रही है, और मैं वहाँ पर एक गिलास पानी लिए बैठा हूँ। बताओ ऐसे में तुम क्या करोगे? सिकन्दर ने कहा मैं आपसे प्रार्थना करुँगा कि आप मुझे एक गिलास पानी दे दें। 'अगर फिर भी मैं नहीं दूँ तो ?' फ़कीर ने कहा। तो मैं तुम्हें कुछ धन देकर पानी खरीद लूँगा; सम्राट ने कहा। यदि फिर भी मैं नहीं दूँ तो ? तब मैं अपनी सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा भाग आपको देने को तैयार हो जाऊँगा, सिकन्दर ने कहा। अगर मैं फिर भी न दूँ ? तो मैं आपको आधा राज्य दे दूँगा। यदि फिर भी मैं न दूँ? तो अपने प्राण बचाने के लिए मैं पूरा राज्य दे दूँगा और आपसे पानी का गिलास ले लूँगा। फ़कीर ने कहा, यदि मैं फिर भी नहीं दूँ तो ? तब मैं आपसे वह पानी का गिलास छीन लूँगा। तब फ़कीर ने कहा कि तुम्हारे छीनने से पूर्व ही यदि मैं उस एक गिलास पानी को जमीन पर गिराकर नष्ट कर दूँ; तब तुम क्या करोगे ? सिकन्दर ने कहा तब मैं तुम्हें मार दूँगा। फ़कीर ने कहा मेरे मरने के बाद भी क्या तुम्हें पानी मिल जायेगा ? और क्या तुम्हारे प्राण बच पायेंगे? सिकन्दर के पास इसका कोई जवाब नहीं था।

फ़कीर ने विजयी मुस्कान के साथ सम्राट से कहा, सिकन्दर! देखा ? तुमने लाखों लोगों की हत्या करके जो इतना बड़ा राज्य खड़ा किया है, उसकी कीमत पानी के एक गिलास जितनी भी नहीं है। क्षण भर में ही सिकन्दर की सोच में एक भारी परिवर्तन आ

गया था। वह फ़कीर के चरणों में गिर पड़ा। उसने फ़कीर को अपना गुरु बनने के लिए प्रार्थना की। पर जवाब में फ़कीर ने कहा, सिकन्दर ! अब बहुत देर हो चुकी है। अब तो तुम्हारे पास इतना भी समय नहीं बच रहा कि तुम अपने घर वालों से भी मिल सको। फ़कीर की वाणी सच ही साबित हुई, वह कुछ दिनों बाद रास्ते में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। सिकन्दर जब मरने लगा तो उसने अपनी अन्तिम इच्छा जाहिर की थी, कि 'मेरे मरने के बाद मेरे दोनों हाथों को मेरी अर्थी के बाहर निकाल देना; जिससे लोग सीख ले सकें कि 'सिकन्दर भी आखिर खाली हाथ ही गया।'

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि पानी की कीमत अनमोल है, हमें अपने जीवन में पानी जैसे पुण्य के काम हमेशा करते रहना चाहिए और अत्याचार करके भौतिक साधन नहीं जुटाने चाहिएँ। क्योंकि पुण्य का फल ही साथ जायेगा। शेष सब भौतिक चीजें तो यहीं धरी रह जायेंगी। आखिर सिकन्दर की ही तरह खाली हाथ ही तो सबको जाना है।

पानी का काम पुण्य का काम

पानी के काम को पूरे ही भारत में हमेशा से पुण्य का काम समझा जाता रहा है। जिसके उदाहरण राजस्थान के इतिहास में बहुत सारे ग्रन्थों में मिलते हैं। 'शिखर वंशोत्पत्ति' पुस्तक में वर्णन मिलता है कि झुंझुनूँ जिले के ऐतिहासिक गाँव झूँथरी में जिन दिनों (राव शेखा के काल में) 'कोलाराज' का शासन था, उस समय कोलाराज ने झूँथरी गाँव की सीमा में एक तालाब खुदवाना शुरू किया था। 'शिखर वंशोत्पत्ति' पुस्तक में तालाब खुदाई की एक घटना का वर्णन इस प्रकार मिलता है:-

जाँ दिनाँ मैं कोळा गौड़, झूँथरी रा राव।
झूँथरी री सींव मैं, खुदावै छा तळाव।।

कोई खोदबानै तो, मँजूरी काज आता।
गैलागीर आता सो, ढकोलो नाखि जाता।।

''अर्थात् जिन दिनों झुंझुनूँ राज के झूँथरी गाँव में गौड़ वंश के सामन्त कोळाराज का शासन था, तब उन्होंने झूँथरी गाँव की सीमा में एक तालाब खुदवाने का काम शुरू

किया था। उस काम को करने के लिए कुछ लोग तो मजदूरी पर आते थे, पर उधर से गुजरने वाले राहगीर भी (तत्कालीन परम्परा के अनुसार पुण्य का काम समझ कर) दो–पाँच ढकोले (तसले) श्रमदान के रूप में अवश्य डाल कर जाते थे।''

इस तरह की परम्पराएँ आजादी से पूर्व देश भर में कमोबेश सभी जगहों पर रही हैं। क्योंकि तब गाँव के सार्वजनिक संसाधनों को ठीक रखने की जिम्मेदारी गाँव के लोगों की ही हुआ करती थी। तब ऐसे कामों को धर्म (पुण्य) का काम भी समझा जाता था। आजादी के बाद तथाकथित जन–सेवकों व नेताओं ने चुनाव जीतने के फलस्वरूप यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ ली, पर उसे निभाया नहीं। और सबसे दुःखद बात यह है कि ऐसे कामों को वे सार्वजनिक सम्पत्ति मानने के बजाय सरकारी सम्पत्ति ही मानने लग गये। तब इन कामों से लोगों का अपनत्व भी खत्म होता चला गया, जिससे वे अपना कर्त्तव्य ही भूल गये। इसके अलावा आधुनिक स्वार्थ–प्रमुख शिक्षा–पद्धति व कथित धर्मनिरपेक्षता के कारण भी लोग अपने कर्त्तव्य और धर्म से विमुख होते चले गये। सभी लोग केवल स्वार्थ के कामों को ही प्राथमिकता देने लगे। इस प्रकार हजारों सालों से चली आ रही बहुत सारी अच्छी परम्पराएँ टूटती चली गईं।

एक गाँव : जहाँ से निकली गुरु गंगा

''पानी की कीमत नहीं मालूम थी तब।
न ही ज्ञान था, कि भगवान है पानी।।
पानी आता था दूर कुएँ से, तो भी; और
माथे पे जेगड़, हाथ में होती थी बाल्टी भरी हुई।
फिर भी आलस नहीं था कतई, बस कोशिश रहती थी कि,
तीन चक्कर आ जाँय, सूरज निकलने से पहले पहले।।
नहाना धोना होता था कूएँ पर ही, हर मौसम में।
पर गर्मी के दिनों में, तमन्ना होती थी कूदने की, नदी में।।
नदी बहती थी तब, बारहों महीने, शौच का सोच न था नदी में कहीं।
सो बचा के नज़र बड़ों की, चले ही जाते थे 'पुळाँ' की नंदी पर।।
मज़ा था वह बचपन का, जो खो गया था कल कहीं।
पर मिल गया अचानक, गुम गया था बीच के दौर में जो।
गुज़श्ता दिनों फिर आ गया वह, लोगों की मेहनत जो रंग लाई थी।''

मेरा गाँव और बदलती सोच

बचपन की याद जब आती है तो मन बरबस पलट कर पुनः उसी कल्पना–लोक में जाने को मचल उठता है, जब गाँव की नदी बारहों महीने बहा करती थी। तब गाँव के बच्चे व अन्य लोग कूद–कूद कर नहाते थे इस नदी में। उन दिनों गाँव का हर बच्चा, गाँव के हर बुजुर्ग का सम्मान करता था, और यह सोच कर उनसे डरता भी था कि कहीं उससे कोई गलती न हो जाय। बुजुर्ग भी तब गाँव के हर बच्चे को नादानी करते देख कर और अपना ही समझ कर अपनत्व भरे प्यार से डाँटते भी थे। पर तब बच्चे व बच्चों के माँ–बाप आज की तरह उनकी डाँट–डपट का बुरा नहीं मानते थे। बुजुर्गों की डाँट को सुन कर भी, बच्चे तो उनके आदेशों का पालन करने ही लगते थे, बल्कि उनके माँ–बाप भी उन्हें उस कार्य को करने के लिए ही प्रोत्साहित करते थे।

उन दिनों बच्चों को नदी में कूद–कूद कर नहाना सबसे अच्छा लगता था। पर चट्टानों के ऊपर से कूदने पर पानी के अन्दर पड़े नुकीले पत्थरों की चोट भी अक्सर लग ही जाया करती थी और बेतैराक बच्चों के डूब जाने की सम्भावना भी बनी तो रहती ही थी। इसलिए बुजुर्ग लोग बच्चों को नदी में नहाने के लिए जाते देख कर अक्सर टोक ही देते थे। फिर भी गाँव के बच्चे बड़ों की नज़रें बचाते हुए, कलकल कर के बहने वाली, नहाने की सबसे ज्यादा पसन्दीदा जगह 'पुळाँ की नन्दी' में नहाने चले ही जाते थे। गाँव के सभी बच्चे तब प्रायः 'पुळाँ की नन्दी' में ही नहाने जाते थे। 'पुळाँ की नन्दी' के एक किनारे पर बड़े–बड़े पापड़ा (चट्टानें) थे, इन पापड़ों (चट्टानों) पर से कूद कर नहाने का मज़ा ही कुछ और था।

मन करता था, काश ! आज भी वह नदी बहती होती; जो गुम हो चुकी थी पिछली दो दशाब्दियों के भी पहले से ही। पर लोगों ने मेहनत की तो यह सपना आखिर पूरा हो ही गया। लोगों की मेहनत रंग ले ही आई और एक बार फिर से बहने लगी वह सूखी हुई नदी। पहले ही साल लोगों को एक झलक दिखाई दे गई अपने सुखद अतीत की। उस अतीत की जब बहा करती थी यह नदी, अनवरत कभी। यदि इन्द्रदेव की कृपा रही तो अब पानी के कम हो जाने के बाद और भविष्य में भी हम इस आनन्ददायी अतीत को बनाये रख सकेंगे।

उन दिनों इसी नदी पर जल–झूलणी ग्यारस के दिन दोपहर बाद कोटड़ी के मन्दिर से 'ठाकुरजी की मूर्ति '(रघुनाथ जी की मूर्ति) का तथा गाँव के सीताराम जी के मन्दिर से 'सीता–राम जी की मूर्ति' क़ा डोला (झाँकी) बड़ी धूमधाम से निकाल कर ले जाया जाता था। जयकारे गूँज उठते थे – 'बोलो ! रघुनाथ जी महाराज की जऽय। बोलो ! मोर मुकुट बंशी वाले की जऽय।' डोले को चार व्यक्ति उभाणा पगाँ (नंगे पाँव) उठा कर ले चलते थे। बाजार में तथा रास्ते में बच्चे, महिलाएँ, श्रद्धालु नौजवान और बुजुर्ग लोग बड़े ही सम्मान के साथ डोले के नीचे झुक कर चलते हुए आगे से पीछे की ओर निकलते थे।

बहती हुई नदी में पुजारी जी स्वयं भी नहाते थे और 'ठाकुर जी' को भी नहलाते थे। नदी का जल पूर्णरूपेण स्वच्छ व निर्मल हुआ करता था। कलकल कर के बहते स्वच्छ जल को बिना प्यास भी पीने को मन ललचा ही जाता था। तब आज की तरह नदी के किनारे शौच आदि जाने की परम्परा नहीं थी। इसलिए नदी के पानी में गन्दगी नहीं हुआ करती थी। जल स्वच्छ और निर्मल ही हुआ करता था। नहा–धोकर पूजा करने के बाद 'डोला' को लेकर जब वापस आते थे ,तब गाँव में कुआँ पूजने वाली महिलाएँ डोला को रोक कर पूजा करती थीं। बाजार में श्रेष्ठि (सेठ) लोग अपनी–अपनी दुकानों के आगे डोला में विराजमान ठाकुर जी की पूजा करते और कन्द–मूल, फल आदि सामग्री भेंट भी चढ़ाते थे। इसके बाद मन्दिर में वापस आकर पुनः पूजा होती थी और प्रसाद का वितरण भी होता था।

दशहरे के दिन भी उक्त ठाकुर जी के डोला (झाँकी) को नदी किनारे पर ही ले जाते थे। इस दिन प्रायः चिमदाळा कुआँ से आगे आसण के पास, नदी पर जाते थे। उस दिन वहाँ पर रावण–दहन भी होता था, जिसे बच्चे, युवा, बुजुर्ग व महिलाएँ सभी चाव से देखने जाते थे।

नदी में परम्परागत रूप से नहाने–धोने की व्यवस्था भी तब अलग–अलग थी। मोज्याळी की नदी पर, चूँकि लोगों का आवागमन अपेक्षाकृत कम होता था; इसलिए महिलाएँ प्रायः वहीं पर नहाती थीं। लेकिन कपड़े धोने के लिए वे प्रायः 'धोबीदह' के 'काळा पापड़ाँ' पर जाती थीं। धोबीदह का 'दह' पानी से हमेशा भरा रहता था। वास्तव

में 'दह' कहते ही उसी को हैं, जहाँ अकाल में भी पानी हमेशा भरा रहता हो। किसी जमाने में यहाँ पर धोबी कपड़े धोने के लिए आते थे। इसी दह के पास एक बावड़ी भी है, जिसे धोबीदह की बावड़ी कहते हैं। इस बावड़ी में प्रायः बुजुर्ग लोग तथा 'बाणगंगा' व 'मैड़' की तरफ पैदल जाने वाले लोग नहाते थे। गाँव के अधिकांश लोग प्रायः 'श्यामी की बावड़ी' पर नहाते थे।

गाँव के पूर्वोत्तर में सालेटा व गढ़बसई की सीमा पर एक बड़ी बावड़ी भी है। इस बावड़ी में प्रायः ध्यान–पूजन करने वाले लोग नहाते थे। यह बावड़ी पुराने गुप्त सन्त–महात्माओं की आवास स्थली मानी जाती है। कहा जाता है कि इस बावड़ी से एक सुरंग (गुफा) पश्चिमी पहाड़ पर स्थित हनुमान जी के मन्दिर तक जाती है। वहाँ से आगे यह सुरंग गाँव की कोटड़ी (गढ़) के उत्तर में स्थित रामशाला मन्दिर के अन्दर जाती है। और वहाँ से आगे यही सुरंग गाँव के पश्चिमोत्तर में पहाड़ पर स्थित ब्रह्माणी माता के मन्दिर की पश्चिमी तलहटी में स्थित एक खण्डहर में चली जाती है। पर वर्तमान में इस गुफा की जाँच किसी ने भी नहीं की है।

इसी खण्डहर के थोड़ा नीचे तलहटी में एक कुण्ड है, जो कभी सन्तों का कुण्ड था। यह कुण्ड पहले एक मोरी (नाली) के मार्ग से लगातार बहता रहता था। इस कुण्ड में सन्त महात्मा और भक्त लोग नहाते थे। महिलाएँ और यज्ञोपवीत रहित लोग इस कुण्ड में नहीं नहाते थे। पर मोरी में से बहकर जाने वाले पानी में सब लोग नहा लेते थे, पानी पी लेते थे और पशुओं को भी पानी पिला लेते थे। इस कुण्ड के ऊपर भी एक और छोटा कुण्ड है, जिसमें कोई भी नहाता नहीं था, पर पूजा अर्चना के लिए उसमें से पानी ले लेते थे। आज भी इन कुण्डों में जन्म व मरण के सूतक की अवस्था में कोई भी नहीं नहाता। यही परम्परा बड़ी बावड़ी में भी आज तक कायम है।

पुराने जमाने में जंगल बहुत था, इसलिए बरसात चार महीने होती थी। अस्सी के दशक के पहले तक नदी में पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था जिससे नदी हमेशा बहती रहती थी। पिछले पचास–साठ वर्षों में तेजी से जंगल का विनाश हुआ, जिसके कारण बरसात कम होती गई और नदी का बहाव कम होता चला गया। अस्सी के दशक के

उत्तरार्द्ध में लगातार पड़ते अकालों के कारण नदी पूरी तरह से सूख चुकी थी। नब्बे के दशक से तो कुओं का जल–स्तर भी निरन्तर गिरता ही चला गया। इसी अवधि में मशीनीकरण के कारण भू–गर्भ के पानी को काफी गहराई से ऊपर खींच कर दोहन करने के साधन भी उपलब्ध हो गए। फलस्वरूप जल–स्तर तेजी से निम्न से निम्नतर होता चला गया। पर्याप्त पानी तो गिने–चुने कुओं में ही रह गया था। बारहमासी नदी तो पहले ही सूख चुकी थी, और बाद में तो बरसात के दिनों में भी नदी का बहना दुर्लभ हो गया था।

लेकिन गाँव के श्रम, संगठन व उत्साह से 2007 में अपने अतीत के प्राकृतिक सौन्दर्य का बखान करती हुई–सी यह नदी एक बार फिर से बहती हुई दिखाई दी। आज की नई पीढ़ी के जो बच्चे यह विश्वास नहीं करते थे कि गाँव की नदी पहले कभी सदानीरा भी थी, वे भी इसे देख कर अचंभित हुए, और आनन्दित भी। लोगों में एक आशा की किरण जगी और एक विश्वास जाग्रत हुआ कि सूखी हुई नदियों को भी पुनर्प्रवाहित किया जा सकता है। बस ! जरूरत है तो गाँव के संगठन की और लोगों की सोच में बदलाव की। संगठन और सकारात्मक सोच से ही वर्षा–जल को सहेजने का काम सम्भव हो सकता है और तभी जंगल की अन्धाधुन्ध हो रही कटाई को भी सुगमता से रोका जा सकता है। और मशीनीकरण के कारण निरन्तर होते जा रहे छिद्र–कूपों पर भी नियन्त्रण कर के तभी पानी के दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

इस नदी को एक बार पुनर्जीवित करने का प्रत्यक्ष श्रेय यद्यपि यहाँ के गुरु सागर व मनसा सागर बाँधों को ही जाता है, पर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका उन छोटे–छोटे जोहड़, तालाब और एनीकटों की भी है; जिनका निर्माण अकाल के प्रारम्भिक दौर में तथा बाद में भी समय समय पर होता रहा। स्पष्ट है कि इन सब कामों का निर्माण गाँव के संगठन और उनके द्वारा की गई कड़ी मेहनत से ही सम्भव हो सका था। पर इन जल–भण्डारों की उपयोगिता केवल बारिश पर ही निर्भर है। बारिश के अभाव में ये सभी जल–स्रोत पूर्णत: सूख जाते हैं। तभी हमें पानी की असली कीमत मालूम पड़ती है। पानी की कीमत को डा. हरिराम आचार्य कविता के माध्यम से यों व्यक्त करते हैं।

बिन पानी सब सून

गूँज रही रहिमन की बानी, जीवन का मतलब है पानी।
पानी गये कभी ना उबरे मोती मनुष चून रे भैया !
बिन पानी सब सून रे भैया, बिन पानी सब सून।।

यम बन कर आया है मौसम, निगल गया रिमझिम की सरग़म।
पानी बिन हर छोर उदासी, सूखी झील नदी तक प्यासी।
पनघट गुमसुम घड़े रुआँसे, मेहनत भूखी डंगर प्यासे।
भादों सूखा, सावन सूखा, ऋतु का हर संवेदन सूखा।
सूखे की सब राम कहानी, बिन पानी आँखों में पानी।
काल खड़ा जिन्दा फसलों को रहा भाड़ में भून रे भैया,
बिन पानी सब सून रे भैया, बिन पानी सब सून।।

पानी जग की पहली रचना, पानी बिन जीवन मृगतृष्णा।
पानी रहा सृष्टि से पहले, पानी में जग होगा परलै।
पानी से ही निकली धरती, बिन पानी बन जाये परती।
पनपी पानी तीर सभ्यता पानी से सँवरी मानवता।
देते प्राण वीर बलिदानी, चमके जब खाँडे का पानी।
पानी की रक्षा को तन में गरमाता है खून रे भैया,
बिन पानी सब सून रे भैया, बिन पानी सब सून।।

पानी बादल पानी सागर, पानी बिन रीती सब गागर।
पानी तन की तपन मिटाये, पानी तन में गीत जगाये।
पानी बिन हर मोती कंकर, पानी बिन आँखें हैं पत्थर।
पर्व, तीर्थ, होली–दीवाली, हैं सब पानी की हरियाली।
पानी बिन रोटी तक दूभर, बिन पानी सब कुछ है बंजर।
पानी बिन सब बात सलोनी, लागे बड़ी अलून रे भैया।
बिन पानी सब सून रे भैया, बिन पानी सब सून।।

आब आबरू, आबो' दाना, सब कुछ पानी का अफ़साना।
समझो अरे सियासतदानो, पानी की कीमत पहचानो।
उतरे जब चेहरे का पानी, कौन न होता पानी–पानी ?
जीता वही राष्ट्र अभिमानी, जिसने रक्खा अपना पानी।
कुर्सी, दौलत सब बेमानी, सच्चा धन है केवल पानी।
पानी गये अकारथ होती, यह मानुष की जून रे भैया।
बिन पानी सब सून रे भैया, बिन पानी सब सून।।

डा. हरिराम आचार्य

जल संरक्षण कार्य की प्रक्रिया

कार्य क्षेत्र में प्रवेश

सन् 1985 ई. में अलवर जिले की तहसील थानागाजी के गाँवों में सूखे के कारण पानी की कमी होती जा रही थी, तभी भीकमपुरा में 'तरुण भारत संघ' संस्था का प्रवेश हुआ, जिसने यहाँ की पुरानी व अच्छी परम्पराओं को पुनर्जीवित करने व गलत रूढ़ियों को तोड़ने के काम को प्राथमिकता देते हुए सामाजिक बदलाव लाने का और शामलाती संसाधनों को बचाने का काम शुरू किया था। इस काम के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा व स्वास्थ्य शिक्षा के अलावा, मुख्य रूप से बरसात के निरर्थक बह कर जाते पानी को रोकने व जंगल को बचाने के काम को प्राथमिकता दी गई थी। यहाँ भूमि में कटाव भी होता जा रहा था। यहाँ जब बरसात होती थी तो पानी के साथ मिट्टी भी बह जाती थी। कुएँ सूखते जा रहे थे, खेती कम हो गई थी। लेकिन जब संस्था के तत्कालीन वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग गाँवों में जल-जंगल-

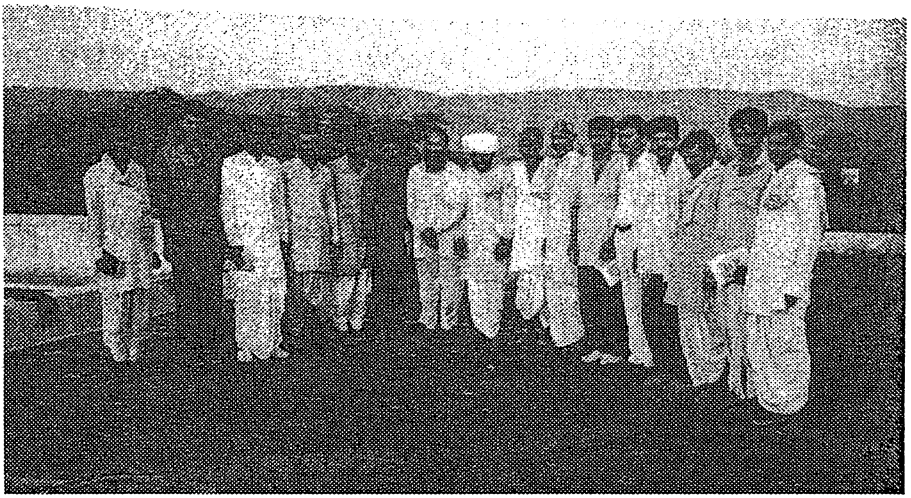

जमीन संरक्षण के काम को तेजी से बढ़ाने का प्रयास किया, तब लोग जाग्रत हुए और वर्षा के जल को सहेजने लगे तो कुओं का जल-स्तर बढ़ने लगा और खेती भी बढ़ने लगी। मजबूरीवश शहरों में कमाने के लिए गये युवा लोग वापस गाँव आने लगे। फलस्वरूप पलायन भी रुका।

रचनात्मक कार्यों का प्रारम्भ

साबी नदी जलागम क्षेत्र में पानी का सबसे पहला काम 1987 में थानागाजी के रूपू का बास गाँव में हुआ था। वहाँ के श्री बनवारी लाल शर्मा ने ही प्रयास कर के गाँव का श्रमदान जुटाया और संस्था का सहयोग ले कर सबसे पहले यहाँ की 'बावड़ी वाली जोहड़ी' में काम कराया। इस जोहड़ी के ऊपर पूर्व दिशा में एक प्राचीन देव बनी भी स्थित है जिसमें आज भी धोक के पेड़ सुरक्षित हैं। इस गाँव में अपने गाँव का जंगल और पानी बचाने की अच्छी सोच है।

इस गाँव के बाद 1988 से 1991 के बीच नाँगलबानी गाँव में भी जोहड़ बाँधों के कई काम हुए। यहाँ के शैतान सिंह जी, कल्लूजी व बालू जी के प्रयासों से तथा गाँव के सहयोग से यहाँ पर लगभग 13–14 बाँध जोहड़ों के अच्छे काम हुए; जिनसे गिरते हुए भू–जल–स्तर की गिरावट में कमी आई और पैदावार में भी बढ़ोतरी हुई। इसके अलावा पशुओं को भी पीने का पानी उपलब्ध हुआ। 1991 में ही झाँकड़ी गाँव में भी जगदीश 'गुवाड़ी वाला' के प्रयास से एक काम 'गळगटा वाली जोहड़ी' में हुआ। इन सब कामों से स्थानीय तौर पर तो पशुओं के पीने के पानी का व कुओं में जल–स्तर के ऊपर उठने का कुछ–कुछ लाभ दिखाई देता था, पर अन्य गाँवों में पानी के काम का संदेश नहीं पहुँच पाया था। पानी के काम

के विचार को साबी नदी जलागम क्षेत्र के अन्य गाँवों में भी पहुँचाना जरूरी था, और प्रत्यक्ष लाभ देखने के लिए साबी नदी जलागम क्षेत्र में सघन काम करने की जरूरत भी थी।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए साबी नदी क्षेत्र में पानी का काम करने के लिए सूरतगढ़, भाँवता आदि गाँवों के लोगों को साथ लेकर पदयात्राएँ की गईं। वर्ष में तीन तरह की पदयात्राओं की शुरुआत की गईं। रक्षाबन्धन के दिन पेड़ों को राखी बाँधने के साथ ही 'पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ पदयात्रा' शुरू की गई। दूसरी पदयात्रा, 'जोहड़

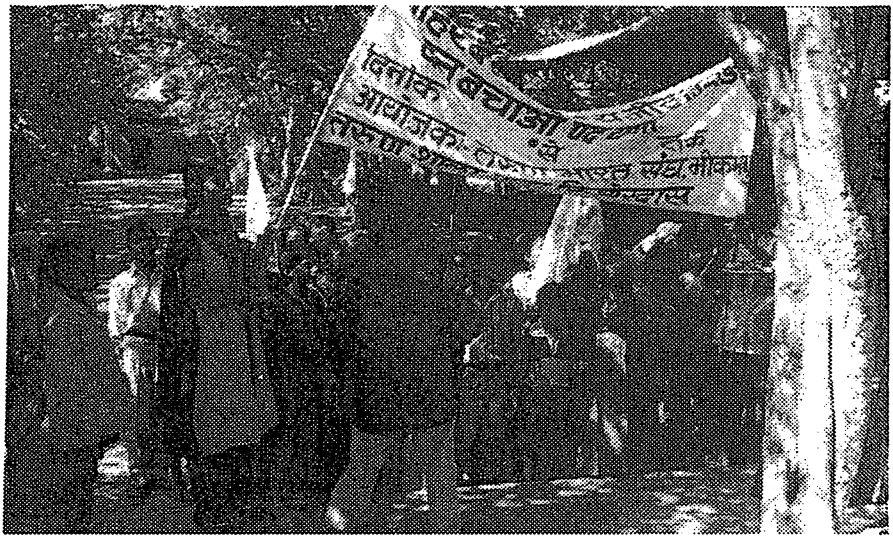

बनाओ, पानी बचाओ पदयात्रा' शुरू हुई, जो देव उठनी ग्यारस के दिन से आरम्भ की जाने लगी। और तीसरी पदयात्रा 'ग्राम–स्वावलम्बन पदयात्रा' शुरू की, जो राम नवमी (नवरात्रि समापन) के दिन से हर वर्ष आयोजित की जाने लगीं। इस प्रकार पदयात्राओं के माध्यम से जगह–जगह पर पानी के काम होने लगे। साबी नदी क्षेत्र के गाँवों में भी इन पदयात्राओं का प्रभाव पड़ा।

गढ़बसई से हुई व्यापक शुरुआत

भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी अन्य नदी घाटियों की ही तरह साबी नदी जलागम क्षेत्र में भी जल संरक्षण के काम को और ज्यादा फैलाने के इच्छुक थे। उन्होंने इस काम को

विस्तृत क्षेत्र में फैलाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम साबी नदी के उद्गम के गाँव गढ़बसई को चयनित किया। चूँकि मैं 1987 ई. से संस्था के साथ कार्यकर्ता के रूप में जुड़ गया था, इसलिए उन्होंने मुझे ही अपने ही गाँव से पानी के काम की शुरुआत करने की जिम्मेदारी सौंप दी। उन्होंने मुझे बताया कि 'तुम अपने गाँव में अपने ही खेत से, पानी के काम की शुरुआत करो, उसका प्रत्यक्ष लाभ देख कर गाँव के अन्य लोग भी पानी के सार्वजनिक कामों के लिए तैयार होने लगेंगे।' उनकी बात को मान कर मैंने श्रमदान देने में अक्षम होने पर भी अपने ही खेत में जैसे–तैसे मेहनत कर के पानी का काम करने की हिम्मत जुटाई। श्रमदान के लिए शारीरिक श्रम व आर्थिक सहयोग करना काफी मुश्किल लग रहा था, फिर भी मेहनत से काम करने की हिम्मत आखिर बना ही ली। लगा जैसे गाँव की नदी को बहते हुए देखने का एक सपना–सा साकार होने जा रहा है।

उन दिनों यहाँ हर दूसरे–तीसरे साल अकाल पड़ते रहने का दौर शुरू हो चुका था। धरती का पेट दिनों–दिन खाली होता जा रहा था। युवा लोग पूर्व काल की समृद्धि को भूलते जा रहे थे। पर गाँव में कुछ ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने अपने जमाने में यहाँ की नदी को कभी बहते हुए भी देखा था। बाद में उन्हीं लोगों ने देखा था भयंकर अकाल भी। इन्हीं लोगों का तो सपना था नदी को एक बार फिर से बहती हुई देखने का। अपना सपना साकार करने के लिए कड़ी मेहनत, बड़े संघर्ष और तीव्र लगन से सब ने मिल कर बना लिये कुछ जल–भण्डार। परिस्थितियाँ बदलती गईं और सोच बदलता गया। समृद्ध अतीत से चल कर भीषण अकाल के दौर में जल–संकट से गुजरते हुए परिस्थितियों से सीख लेकर लोगों की मेहनत से पुनः जल–समृद्धि की एक झलक–सी दिखाई दी। जिसे बरकरार रखना एक चुनौती है।

गाँव में पहला काम

साबी नदी जलागम क्षेत्र में अलवर जिले की तहसील थानागाजी के गाँव गढ़बसई में भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी के प्रयास से सर्वप्रथम यहाँ के 'नारेठा का नीचे वाला एनीकट' और 'बावा का बीच वाला एनीकट' को बनाने का मुहूर्त लगाया गया। नारेठा के नीचे वाले एनीकट की नींव खुदाई का मुहूर्त वैशाख बदी अष्टमी, शनिवार,

2049 विक्रमी (तद्नुसार 25 अप्रैल 1992 ई.) को प्रातः साढ़े सात बजे लगाया गया। और उसी दिन कुछ ही देर बाद ठीक इसी के नीचे बावा वाले एनीकट की खुदाई का भी मुहूर्त भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी ने महीपाल सिंह के साथ लग कर स्वयं अपने हाथों से लगाया। इस प्रकार इसी दिन से इस गाँव में जल संकट निवारण हेतु जल–संरक्षण कार्य की प्रारम्भिक नींव लग गई।

फिर एक माह बाद ही 5 जून 1992 को इन दोनों एनीकटों के नीचे ही एक और एनीकट 'भोमिया वाला' का काम भी शुरू हो गया। इन तीनों कामों को पूरा होने पर अगली बरसात में ही जब इनमें पानी भरा तो आस–पास के कुओं का जलस्तर काफी ऊँचा आ गया। यहाँ तक कि नारेठा के नीचे वाले बाँध से तो सीधे पाइप डाल कर चने की फसल में पानी भी दिया जाने लगा था।

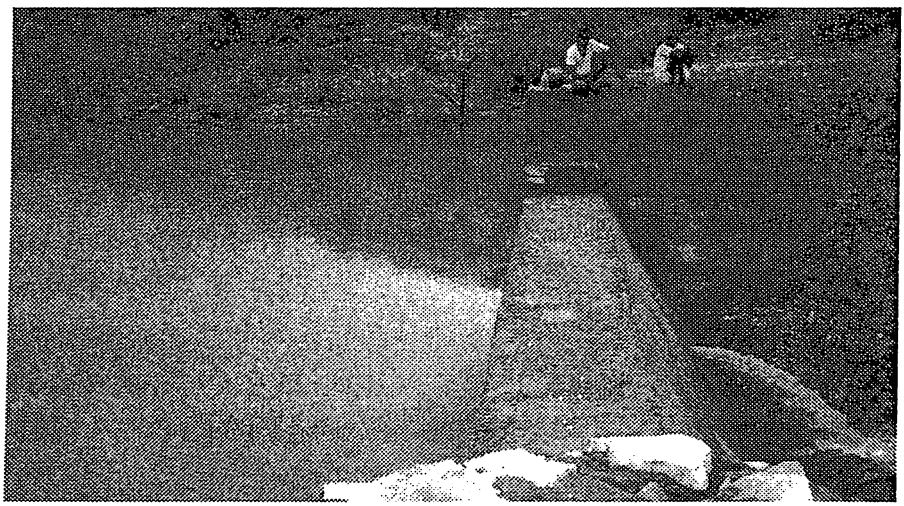

यह देखकर गाँव के लोगों में अन्य जगहों पर भी जोहड़, बाँध, एनीकट बनाने की चर्चा उठने लगी। किन्तु सार्वजनिक रूप से श्रमदान देना जरूरी होने के कारण यह चर्चा कार्य रूप में परिणत नहीं हो सकी। फिर भी गाँव के लोगों को जल संरक्षण के काम हेतु श्रमदान के लिए प्रेरित करने का प्रयास चलता रहा। इस तैयारी में पाँच–छः साल का समय निकल गया। पर काम आगे नहीं बढ़ा।

जुलाई 1998 में संस्था के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने मुझे बताया कि इस गाँव में चरागाह विकास व वृक्षारोपण हेतु चहारदीवारी या तारबन्दी करने के लिए कुछ काम किया जाना चाहिए। उन्होंने मुझे बताया कि तुम अपने गाँव में जाकर इस विषय पर बातचीत करो। मैंने गाँव में आकर इस सम्बन्ध में बातचीत की और गाँव वालों से इस काम हेतु आंशिक श्रमदान जुटाने की बात भी कही। इस काम के लिए सहमति तो गाँव के सभी लोगों ने दी, लेकिन श्रमदान देने के लिए कुछ लोग ही तैयार हो पाये। उन्हीं कुछ लोगों की सक्रिय सहभागिता के फलस्वरूप 25 जुलाई 1998 को यहाँ 'देवी की बनी' के निर्धारित क्षेत्र में पौधे लगाने हेतु गड्ढे खोदने का काम शुरू कर दिया गया। 27 अक्टूबर 1998 से ईश्वर यादव द्वारा देवबनी की चहारदीवारी हेतु पत्थर डालने का काम भी शुरू हो गया।

इन दिनों प्रशासन की तरफ से पत्थरों की खानों में पत्थर खोदने की मनाही की हुई थी। लेकिन सार्वजनिक कार्य होने के कारण इस काम हेतु पत्थरों के लिए ग्राम पंचायत ने रुकावट नहीं डाली, बल्कि सहयोग ही किया। बस... चहारदीवारी का काम शुरू हो गया और उस में देशी बबूल, खैरी व रोंझ आदि के पेड़ व बीज लगा दिये गये।

इस काम में मानसिक सहयोग तो पूरे गाँव का रहा, लेकिन नैतिक सलाह में 'मंदिर कालीदासजी' के पुजारी श्री दीनदयाल जी (गुरु बाबा) का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण रहा। कुछ लोगों का आर्थिक व शारीरिक सहयोग भी उल्लेखनीय रहा। जिनमें यहाँ के ठा. सा. श्री बजरंग सिंह जी, श्री फतेह सिंह जी, बहनजी मगन कँवर, दलवीर सिंह, नवल सिंह, मातादीन सिंह आदि प्रमुख हैं। इन्होंने चहारदीवारी की चिनाई, वृक्षारोपण व रखवाली आदि के कामों में तन मन से श्रमदान किया। यद्यपि 'देवी की बनी' की रखवाली का काम तो 'राजावत कोटड़ी ठिकाना–गढ़बसई' के सभी परिवार पहले से कर ही रहे थे, पर अब ज्यादा उत्साह से चौकसी करने लगे।

साल भर में इसकी चहारदीवारी का काम वाटर वर्क्स के क्वाटरों के ऊपर से लेकर भैंरू वाला के जोहड़ के ऊपर से होते हुए ब्रह्माणी माता के नीचे वाले कुण्ड के सामने तक हो गया।

पहले साल ही पशुओं की रोक हो जाने के कारण चारा काफी बड़ा हो गया। इस चारे को बेचने पर मिलने वाली राशि को मनसा माता के मंदिर में लगाने का विचार किया गया। अतः भगतपुरा के श्री भगवान सिंह जी को 1500 रुपये में यह चारा खड़ा ही बेच दिया गया। पर चारा बेचने की बात जब मैंने कालीदास मंदिर के पुजारी श्री दीनदयाल जी को बताई तो वे सहसा ही अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। उन्होंने कहा कि 'यह चारा गायों के हक़ का है, इसे बेचकर यदि तुम वह राशि किसी भी अन्य काम में लगाओगे तो वह गायों के प्रति अन्याय है। इसलिए मैं इसकी राय कदापि नहीं दे सकता।' उनकी निस्वार्थ सीख का भाव समझ कर मैंने चारा बेचने की बात को निरस्त कर दिया और चारा खरीदने वाले को तुरन्त उसी दिन 1500 रुपये वापस लौटा दिये। साथ ही गाँव के सभी लोगों ने मिल कर आगे के लिए भी पाबन्दी लगाई कि भविष्य में भी चारा गायों के ही काम आना चाहिए, इसे बेचा न जाय।

इसके बाद जब चारा पक गया तो चारे को बँटाई पर कटवा कर सार्वजनिक रूप से गायों के लिए एकत्र करवाया गया। और बाद में आवश्यकता पड़ने पर वह चारा सामूहिक रूप से ही गायों को खिलाया गया। चारे के अलावा इस 'बनी क्षेत्र' में काँटेदार, छायादार व फलदार पेड़ भी लगाये गये, जिनमें से काँटेदार पेड़ ही सफल हो पाये। इस बनी में प्रायः हर वर्ष ही कुछ न कुछ पेड़ लगाने का प्रयास किया जाता रहा है। यद्यपि फलदार पेड़ों में अभी तक सफलता नहीं मिली है, पर प्रयास अभी भी जारी है।

'देवी की बनी' में वृक्षारोपण का काम शुरू होने के दौरान ही 25 अगस्त 1998 को 'कालीदास जी के मन्दिर' के बाहर वाले क्षेत्र को तारबन्दी से घेरकर वृक्षारोपण का काम शुरू कर दिया गया। 31 अगस्त 1998 को 'देवनारायण जी के मन्दिर' की पहाड़ी में भी वृक्षारोपण का काम शुरू करके फिर तारबन्दी की गई। 'देवनारायण जी के मन्दिर' की

पहाड़ी में किए गये काम की जिम्मेदारी धाबाला के गुर्जर परिवारों की रही। इन्होंने तार लगाने के लिए लम्बे पत्थर खुद अपने खर्चे से ही मुण्डावर की खानों से मँगवाये और मेहनत कर के स्वयं ही गाड़े भी। इस काम में धाबाला के सभी परिवारों का योगदान सराहनीय रहा, पर स्व. प्रभात गुर्जर की भूमिका प्रमुख थी।

इन सब कामों को देखकर गाँव के लोगों में 'वन संरक्षण' व 'जल संरक्षण' के कामों के प्रति काफी रुचि बढ़ी। लोग निजी तौर पर भी पानी का काम करने लगे। लीलाराम धानका ने भी अपने खेत में एक छोटा–सा चैकडैम स्वयं ही बना लिया जिसमें संस्था से उसने केवल छः कट्टे सीमेन्ट का ही सहयोग लिया; बाकी सारा काम उसने खुद अपनी मेहनत से स्वयं किया।

11 नवम्बर 1998 को 'बीडाँ' में एक बाँध का काम शुरू किया गया तथा बाद में उसी के ऊपर एक पुरानी जोहड़ी का भी विस्तार किया गया। इसके अलावा इसी के पास एक पुरानी बावड़ी जो 'स्वामी की बावड़ी' कहलाती है, में भी यहाँ रह रहे बाबा जी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सहयोग से मरम्मत कार्य किया गया। इस काम में संस्था की तरफ से केवल सीमेन्ट का ही सहयोग था, बाकी सारा काम बाबाजी ने जन सहयोग से ही करवाया था। इस काम में गाँव के सभी लोगों की रुचि थी, पर श्री राघेश्याम अग्रवाल का योगदान विशेष रहा।

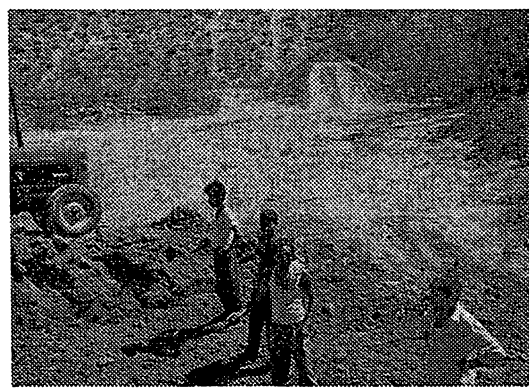

मनसा–सागर निर्माण

धीरे–धीरे गाँव के लोगों में पानी के और भी काम करने की सोच बनने लगी। इसी बीच 7 फरवरी 1999 को मैं, सत्येन्द्र सिंह जी, मेनपाल सिंह जी व जगदीश गुर्जर के साथ धौलागढ़ जाकर रात को गढ़बसई आ गया। दूसरे दिन हम सबने यहाँ के भैंरू वाला जोहड़ को देखा व उसका लेवल भी लिया। पर इस जोहड़ से थोड़ा ऊपर उत्तर दिशा में राड़ी पर जाने पर सत्येन्द्र जी, मेनपाल जी व जगदीश गुर्जर ने वहाँ का मौका

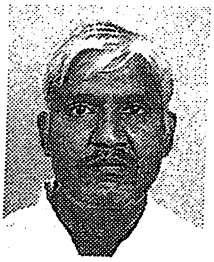

मुआयना कर के कहा कि यहाँ पर श्मशानों के पास नाले पर एक अच्छा बाँध बन सकता है। अतः भैंरू वाला के जोहड़ में काम करने के बजाय यहाँ पर ही एक बाँध बनाया जाय तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मैंने उन्हें चौथाई श्रमदान की परेशानी बताई तो सत्येन्द्र सिंह जी ने कहा कि तुम तो मन से चौथाई श्रमदान जुटाने का प्रयास करते हुए काम शुरू कर दो। मन से प्रयास करने पर तो लोग श्रमदान के लिए तैयार हो ही जायेंगे।

मैंने काम करने का मन बना लिया। इसलिए 22 फरवरी 1999 को मैं काम शुरू करने के उद्देश्य से संस्था के श्री श्रवण शर्मा व कन्हैयालाल गुर्जर को लेकर साइट पर गया। उनको साइट दिखाई। साइट को देखकर उन्होंने बताया कि साइट की जगह तो यहाँ के बजाय यहाँ से थोड़ा नीचे भोपाला कुआँ के ऊपर बनाना ज्यादा उपयुक्त है। इस पर मैंने बताया कि जगह तो वही उपयुक्त है, लेकिन वहाँ बनाने पर यहाँ के श्मशान डूब जायेंगे, जो उचित नहीं होगा और उससे लोगों का विरोध भी रहेगा। इसलिए वहाँ के बजाय श्मशानों से ऊपर की तरफ ही बाँध बनाना ज्यादा ठीक रहेगा। इसके बाद हमने मिट्टी का बाँध बनाने की बात पर भी विचार किया। पर देखने से लगा कि वहाँ की

मिट्टी काफी कमजोर है और पर्याप्त भी नहीं है। तब श्रवण जी व कन्हैया लाल ने भी यही बताया कि यहाँ पर पक्का एनीकट बनाना ही ज्यादा उचित है। इस प्रकार यहाँ पर काम करने का पक्का निश्चय हो गया।

यह सब तय हो जाने के बाद 28 फरवरी 1999 को हमने साइट का लेवल लिया और उसी दिन से ईश्वर यादव ने पत्थर डलवाना भी शुरू कर दिया। फिर 3 मार्च 1999 को इस बाँध का नाम मनसा माता के नाम पर 'मनसा सागर' रखकर नींव खुदाई का मुहूर्त दीवान साहब श्री बजरंगसिंह जी एवं अन्य ग्रामवासियों ने मिलकर

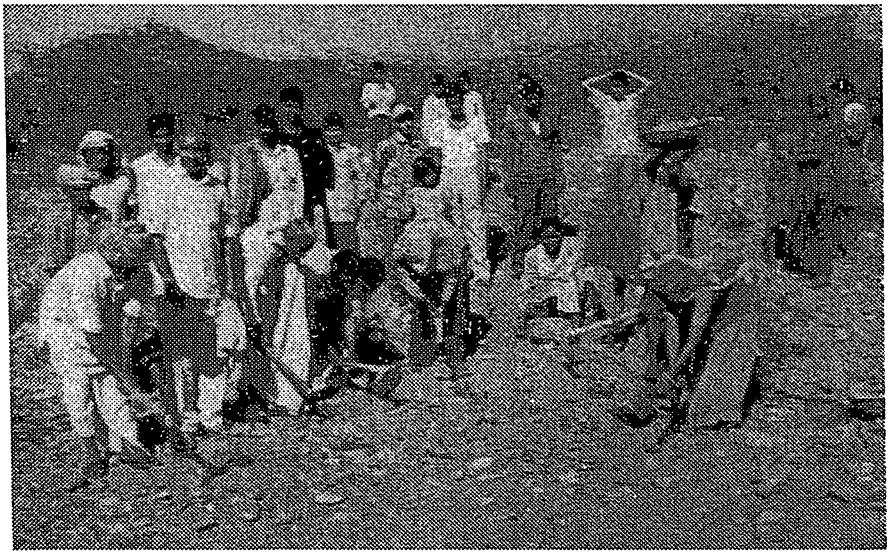

लगा दिया। श्री मदन लाल जी चिमनावत से इसका भूमि–पूजन कराया गया। इस अवसर पर गाँव के सैकड़ों लोग उपस्थित थे। बाद में 24 मार्च, 1999 को मनसा सागर के पक्के काम की आधारशिला रखी गई।

बाद में 8 मार्च 1999 को मनसा सागर के पूर्व की तरफ राड़ी पर 'मनसाश्रम' नाम से एक आश्रम का शिलान्यास मुहूर्त कालीदास जी के मंदिर के पुजारी श्री दीनदयाल जी (गुरुजी) ने संस्था के महामंत्री श्री राजेन्द्र सिंह जी के हाथों से लगवाया। जिसका उद्देश्य यह था कि इसके चारों तरफ पूरी राड़ी में चहारदीवारी करके वृक्षारोपण किया

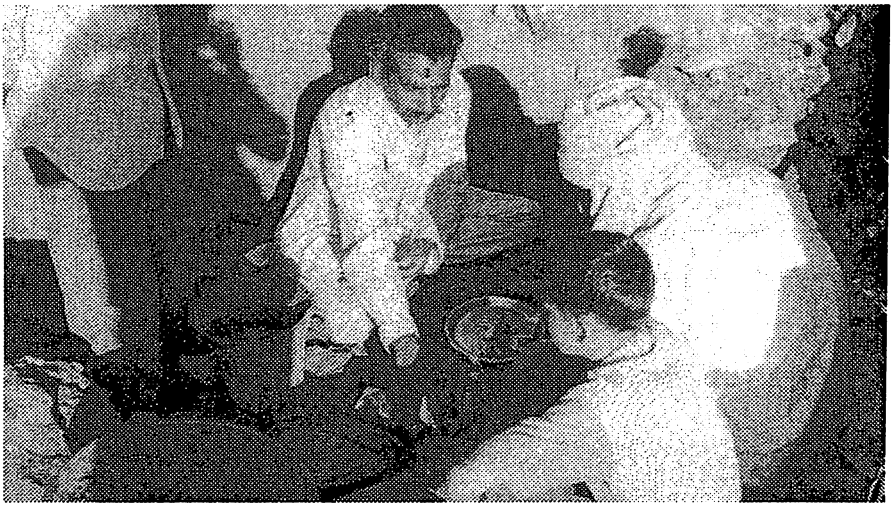

जायेगा और फलदार पेड़ लगाकर एक बग़ीचा बनायेंगे, जो सार्वजनिक रूप से सब के काम आयेगा।

समय–समय पर हम मनसाश्रम में पेड़–पौधे लगाते रहे। पर पशुओं के कारण व पानी के अभाव के कारण कम ही पेड़ लग पाए। पर अभी भी उसको एक अच्छा उपवन बनाने का प्रयास जारी है। इसके लिए वन विभाग का सहयोग भी अपेक्षित है।

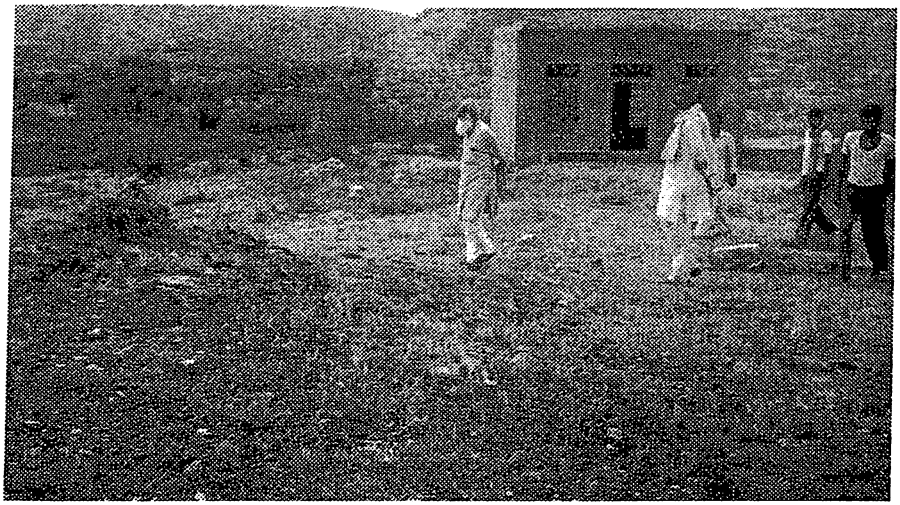

मनसा सागर का काम शुरू हो गया। चन्दे के लिए रसीद बुक छपवाई गई। गाँव के बहुत सारे लोग जयपुर में स्थाई रूप से बसे हुए हैं, उन से इस काम के लिए चन्दा एकत्र करने की बात सोची गई। मैं, महेश मास्टर जी व बहनजी मगन कँवर के साथ जयपुर गया। वहाँ सबसे पहले श्री घनश्याम सैन के पास जाकर उन्हें मनसा सागर के बारे में विस्तार से समझाया। पूरी बात समझ कर उन्होंने तुरन्त ही पहली उगाही में ही हमें 5001 रुपये दे दिये। इससे हमारा उत्साह और बढ़ा। उनके पिताजी ने भी हमसे जयपुर में रह रहे गाँव के अन्य लोगों से उगाही करने के लिए एक रसीद बुक ले ली। उन्हें उगाही के लिए रसीद बुक देकर हम वापस गाँव को लौट आये।

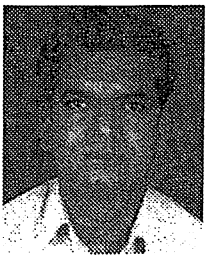

मनसा सागर का काम चल रहा था। उसके निर्माण कार्य में प्रयुक्त पानी इसके ऊपर स्थित एक पुराने कुण्ड में से ही पाइप डाल कर गुरुत्वाकर्षण विधि से लिया गया। इस बाँध का पूरा काम (शुरू से आखिर तक) बिना खर्चे के उक्त कुण्ड से ही पाइप द्वारा पानी लाकर पूरा किया गया। इस कुण्ड का इतना बड़ा उपयोग देखकर, खण्डहर हो चुके इस कुण्ड की मरम्मत कराने का विचार भी मन में आया। मैंने संस्था में जाकर भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी से बात कर के इस काम की भी स्वीकृति ले ली। तुरन्त ही कुण्ड का काम भी शुरू कर दिया गया।

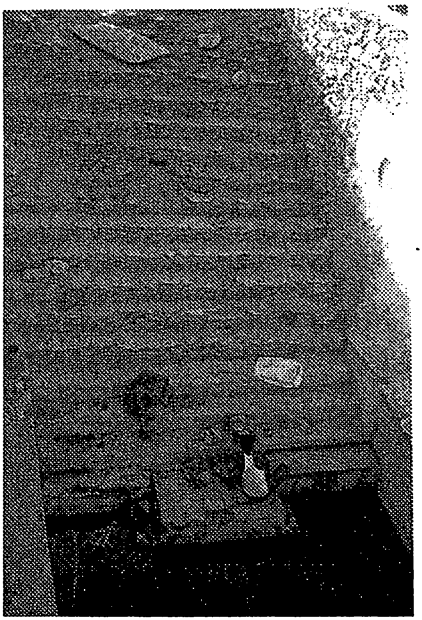

उस वक्त इस कुण्ड में चौके तक पानी भरा हुआ था। पानी को खाली कर के पेंदे की पूरी सफाई की गई। फिर इस कुण्ड की पुरानी दक्षिणी दीवार को पूरी तरह से नीचे तक साफ करके ऊपर तक पुख्ता नई दीवार बनाई गई। उत्तरी दीवार में आधी

ऊँचाई से ऊपर की खण्डहर हो चुकी दीवार को हटा कर नई दीवार बनाई गई। पूर्वी दीवार ठीक थी; इसलिए इसमें केवल प्लास्तर ही किया गया। पश्चिम में पुरानी टूटी हुई समस्त सीढ़ियों पर पट्टी–कातले जमाये गए। इसके अलावा दीवारों के टॉप के ऊपर भी तीनों तरफ चौड़ाई के लिए जगह छोड़ कर एक और दीवार ऊँची की गई। इस प्रकार सारे काम को बड़े ही उत्साह से पूरा किया गया।

बाद में इसी कुण्ड के ऊपर एक छोटी–सी जोहड़ी भी बनाई गई जिसका उद्देश्य कुण्ड को सजल बनाये रखना था। इन सब कामों के साथ ही मनसा सागर का काम

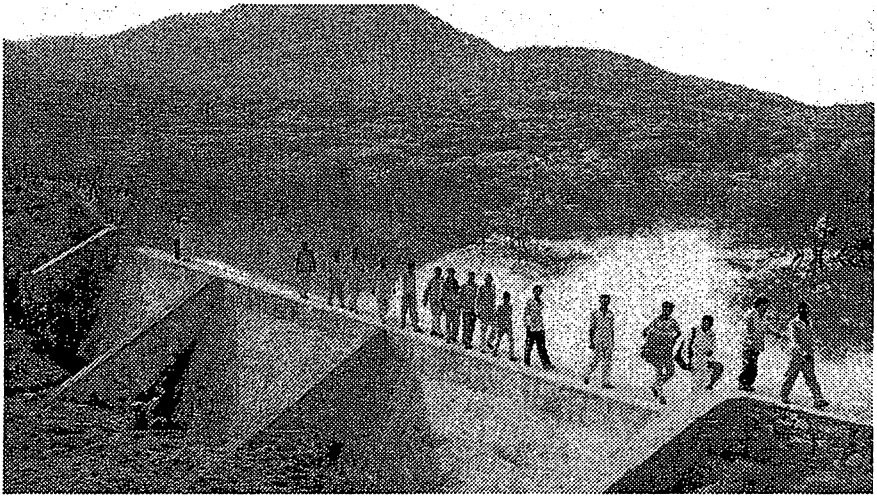

भी पूरा हो गया। पहली ही बरसात में जब यह बाँध भरा तो कुछ ही दिनों बाद इसके नीचे के कुओं में पानी ऊपर आ गया। भैंरू वाला कुआँ, जो गर्मियों में सूख गया था, वह तो जमीन के लेवल तक भर गया था। मनसा सागर के नीचे से झरने बहने लगे। सैकड़ों की संख्या में लोग उस झरने में नहाने के लिए आने लगे। कुओं में बढ़े पानी से फसल में वृद्धि हुई।

यह देखकर लोगों में पानी के काम के प्रति और अधिक उत्साह बढ़ा। अब गाँव के लोग रींछी नामक स्थान पर एक बड़ा बाँध बनाने की बात सोचने लगे। पर एक–तिहाई

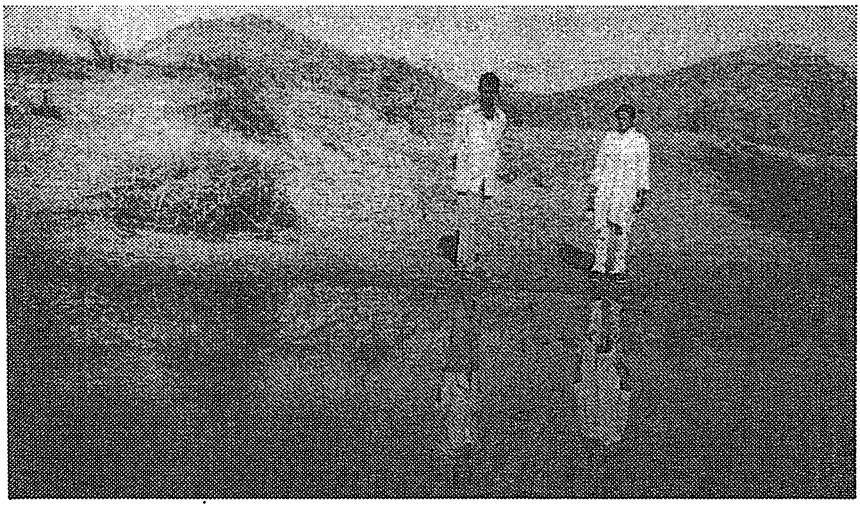

श्रमदान की बात को सुनकर चुप हो जाते थे। गाँव का संगठन बनाने की हिम्मत भी कोई नहीं जुटा पा रहा था।

दिनांक 22 अगस्त 2003 को कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले के स्वामी श्री शिवानन्द जी महाराज व कर्नाटक के जल संसाधन मन्त्री श्री एच. के. पाटिल, भाई सोहब श्री राजेन्द्र सिंह जी के साथ मनसा सागर पर आये। स्वामी जी ने श्री शान्तनु नरेश जी और श्री महेश चन्द जी शर्मा के सहयोग से मनसा सागर का जल पूजन करके बाँध का लोकार्पण किया। उस समय गाँव के सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

गुरु सागर : एक ऐतिहासिक निर्माण

मनसा सागर के लोकार्पण के बाद मनसाश्रम पर गाँव के लोगों के साथ बैठक (मीटिंग) हुई। बैठक में श्री महेश चन्द जी शर्मा (मास्टर जी) ने भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी को रींछी में एक और बड़ा बाँध बनाने का आग्रह भी किया। जवाब में भाई

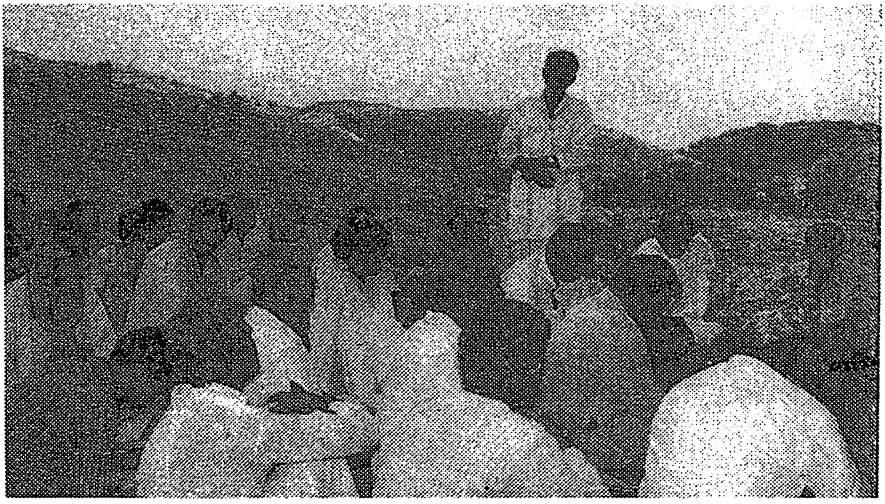

साहब ने कहा कि आप लोग एक– तिहाई श्रमदान की तैयारी कर लो, हम तो संस्था की तरफ से अपना निर्धारित सहयोग देने को तैयार हैं।

श्रमदान की जरूरत क्यों ?

कोई भी संस्था बिना श्रमदान लिए भी बाँध निर्माण का कार्य कर सकती है, पर ऐसा करने पर लोग उस काम को अपना काम नहीं मानेंगे और साथ ही गाँव की सहभागिता न होने के कारण विभागीय कामों की तरह से उस काम में भ्रष्टाचार होने की भी पूरी सम्भावना रहेगी। इसलिए संस्था कोई भी ऐसा काम नहीं करती, जिसमें गाँव की कुछ न कुछ भागीदारी नहीं हो। संस्था का अनुभव है कि किसी भी सार्वजनिक कार्य में यदि गाँव के प्रत्येक परिवार का यथोचित व वास्तविक योगदान नहीं होता है तो उस काम के प्रति उनका अपनत्व व लगाव भी नहीं होता। जैसा कि हम विभागीय कामों में स्पष्ट देखते ही हैं। वहाँ यदि कहीं श्रमदान का प्रावधान होता भी है तो, या तो मजदूर की मजदूरी में से श्रमदान के नाम पर पैसा काटा जाता है; या दर (रेट) बढ़ा कर कॉलम पूर्ति की जाती है। ऐसा करने से श्रमिक का काम से लगाव होने के बजाय अलगाव ही ज्यादा होता है।

फिर यह भी विचारणीय है कि श्रमदान केवल श्रमिक ही क्यों दें ? क्या वह काम उन लोगों का नहीं है जो मजदूरी पर नहीं जाते ? स्पष्ट है कि सार्वजनिक काम तो सभी के हित का काम होता है; इसलिए योगदान भी उस काम में गाँव के प्रत्येक परिवार को स्वेच्छा से सहर्ष करना ही चाहिए। श्रमदान गाँव के हर घर का बराबर होना चाहिए या कम–ज्यादा, इसका निर्धारण भी गाँव के सामाजिक न्यायकर्ताओं को ही निष्पक्ष और न्यायोचित ढंग से करना चाहिए।

सार्वजनिक काम में यदि वास्तविक श्रमदान नहीं होता है तो उसमें भ्रष्टाचार होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। लेकिन जब गाँव के लोग श्रमदान (योगदान) वास्तविक रूप में करते हैं तो उनका हक़ बन जाता है कि वे पूरे काम की लागत व खर्च को जिम्मेदारी से समझें। और चूँकि उनको भी उस काम में निर्धारित भाग देना होगा, इसलिए उनको पूरे खर्चे व काम को देखना ही पड़ेगा। स्वाभाविक है कि जब आपको अपनी जेब से कुछ खर्च करना पड़ेगा तो खर्च करने से पूर्व सौ बार सोचेंगे कि जिस काम के लिए आप योगदान दे रहे हैं, वह ईमानदारी से हो रहा है अथवा नहीं।

दूसरी तरफ आपको यदि कुछ भी नहीं देना पड़ रहा, तो आप उस काम के गलत और बेईमानी से होने पर भी क्यों आपत्ति करेंगे ? इससे यह सिद्ध होता है कि किसी भी सार्वजनिक कार्य में काम के प्रति पारदर्शिता व अपनत्व लाने के लिए हर परिवार से वास्तविक श्रमदान होना जरूरी है। कॉलम पूर्ति करना या मजदूर की मजदूरी काटना तो श्रमदान (योगदान) बिल्कुल नहीं है। बल्कि मजदूर की मजदूरी काटना तो उसका शोषण करना है, जो कदापि न्यायोचित नहीं। इसलिए किसी भी गाँव के सार्वजनिक कार्य में काम के प्रति अपनत्व, पारदर्शिता व संगठन के लिए वास्तविक श्रमदान का होना बहुत जरूरी है।

खैर.....! काफी कोशिश करने के बाद भी गाँव में श्रमदान की तैयारी नहीं हो पाई। उधर संस्था के अध्यक्ष भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी बार–बार मुझसे पूछते रहे कि बाँध की तैयारी का क्या हुआ ? तब मैंने बताया कि काफी प्रयास करने के बाद भी ऐसा नहीं लग रहा कि गाँव पूरा श्रमदान दे पायेगा। तब भाई साहब ने अपने अनुभव के आधार पर मुझे कहा कि तुम तो अपनी तरफ से श्रमदान के लिए पूरा प्रयास करो,

क्योंकि प्रयास करने पर सफलता अवश्य ही मिलती है। तब मैंने इस काम को सक्रिय करने के उद्देश्य से भाई साहब को संस्था की तरफ से श्री जगदीश गुर्जर को संगठन व प्रबन्धन करने की पूर्ण जिम्मेदारी देने के लिए कहा। भाई साहब ने तुरन्त ही जगदीश गुर्जर को बुला कर इस बाँध की तैयारी के लिए संगठन व प्रबन्धन सम्बन्धी जिम्मेदारी दे दी।

जगदीश जी ने दिनांक 20 नवम्बर 2003 को पहली बार गाँठ्या का बड़ के नीचे मीटिंग कर के गाँव के लोगों को रींछी वाली नदी में मिट्टी का बाँध बनाने की बात कही। लेकिन लोगों ने कहा कि वहाँ पर मिट्टी उपयुक्त व पर्याप्त नहीं है, इसलिए हम तो वहाँ पक्का बाँध ही बनाना चाहते हैं। इस प्रकार उस मीटिंग में कोई निर्णय नहीं हो पाया। फिर दूसरी मीटिंग हुई, उसमें भी लोगों ने पक्का बाँध बनाने की ही पेशकश की थी, जिसमें अन्ततः गाँव के लोगों की बात मान ली गई। इस मीटिंग में गाँव की तरफ से एक–तिहाई श्रमदान देने की बात भी तय हुई और गाँव के लोगों ने रींछी में बाँध बनाने के लिए संस्था के नाम प्रार्थना पत्र भी दिया।

इस बाँध के काम हेतु श्रमदान राशि के लिए उगाही करने की बात तय हुई। 21 लोगों की एक कार्यसमिति बनाई गई। उगाही के लिए श्री राधेश्याम अग्रवाल ने सबसे ज्यादा उत्साह दिखाया। और कहा कि गाँव के वे लोग जो बाहर शहरों में रहते हैं, उनसे बड़ी रकम की उगाही हो सकती है। श्री शान्तनु नरेश ने भी इस बात का समर्थन किया। गाँव की स्थानीय उगाही में श्री महेश चन्द शर्मा व समिति के अन्य लोगों ने काफी सक्रिय भूमिका निभाई तथा श्रमदान भी जुटाया। पर यह काम बड़ा था इसलिए उगाही की और ज्यादा जरूरत थी।

रींछी वाला बाँध की नींव खुदाई का मुहूर्त गाँव के लगभग पचास–साठ लोगों ने तरुण भारत संघ के श्री जगदीश गुर्जर व श्री कन्हैया लाल गुर्जर की उपस्थिति में 6 दिसम्बर 2003 को लगवा दिया। पर काम शुरू करने से पहले बाँध की जगह का अन्तिम चयन श्री बालक नाथ जी महाराज व उनके शिष्य श्री भोलानाथ जी महाराज ने दिनांक 9 दिसम्बर 2003 को मौके पर पहुँच कर किया। उन्होंने वर्तमान स्थान को ही बाँध बनाने के लिए उपयुक्त बताया, जिसका समर्थन वहाँ पर उपस्थित दीवान साहब बजरंग सिंह जी, बहनजी मगन कँवर, नन्दा पटेल, तरुण भारत संघ के श्री

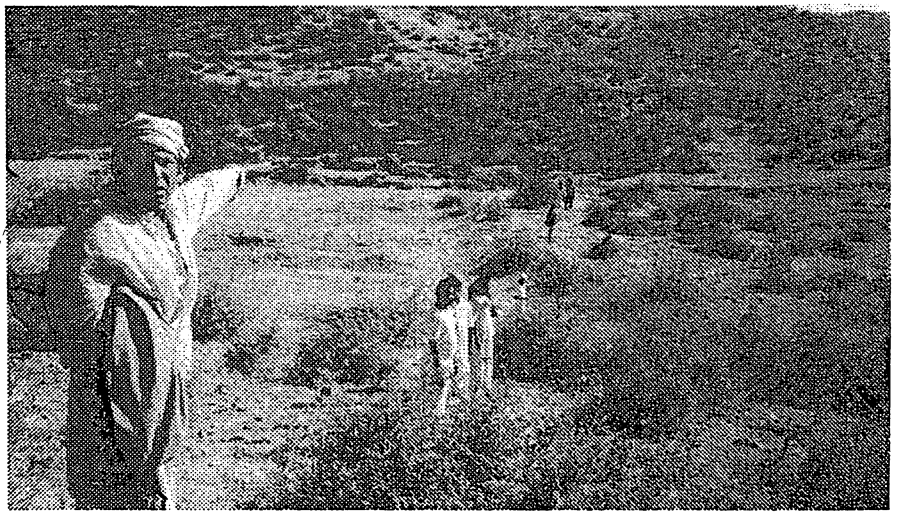

जगदीश गुर्जर, श्री अम्बुज किशोर व गाँव के अन्य लोगों के साथ मैंने भी किया। फिर उसी दिन हमने बाँध की जगह का लेवल भी लिया।

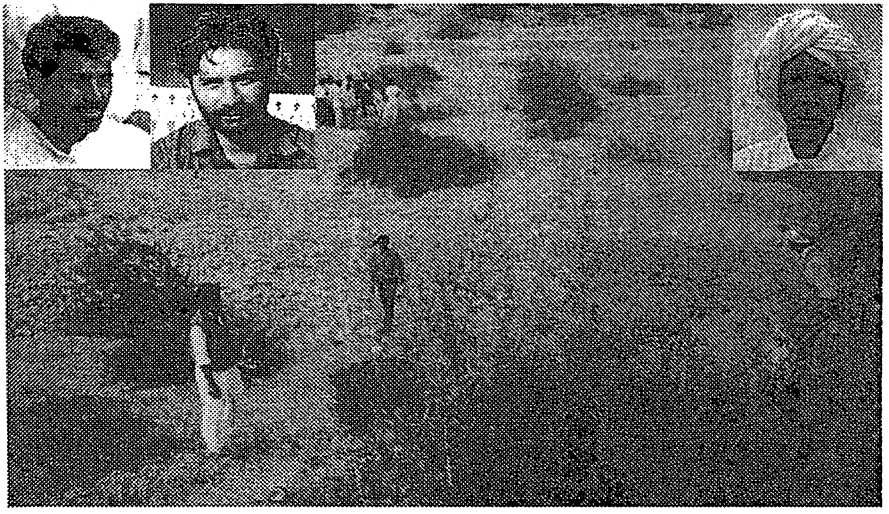

11 दिसम्बर 2003 को मैं श्री जगदीश गुर्जर के साथ सरिस्का जाकर टाइगर डेन में अतिथियों के साथ रुके भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी से भी मिला। हमने उनसे बाँध की कुल लागत अन्दाजन बीस लाख रुपये आँक कर काम करने की पुनः स्वीकृति ली और यह भी बताया कि वहाँ पर्याप्त व उपयुक्त मिट्टी उपलब्ध नहीं होने के कारण

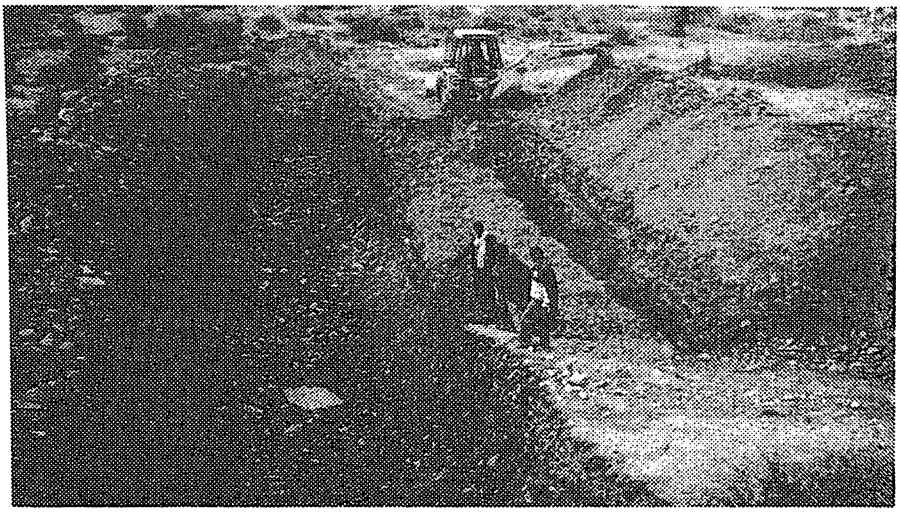

गाँव के लोग इसे पक्का ही बनाना चाहते हैं। भाई साहब ने कहा कि हम गाँव के लिए ही तो काम कर रहे हैं और गाँव के लोग गाँव का भला–बुरा सब ज्यादा अच्छी तरह से समझते हैं। गाँव वालों को जैसा उचित लगे वही काम तो हमें करना चाहिए। यह कह कर उन्होंने हमें स्वीकृति दे दी और तुरन्त काम शुरू करने को कह दिया।

दिनांक 13 दिसम्बर 2003 को जे. सी. बी. से नींव खुदाई का काम शुरू हुआ। नींव खुद जाने के बाद दिनांक 21 दिसम्बर, 2003 को गाँव वालों की उपस्थिति में भाई

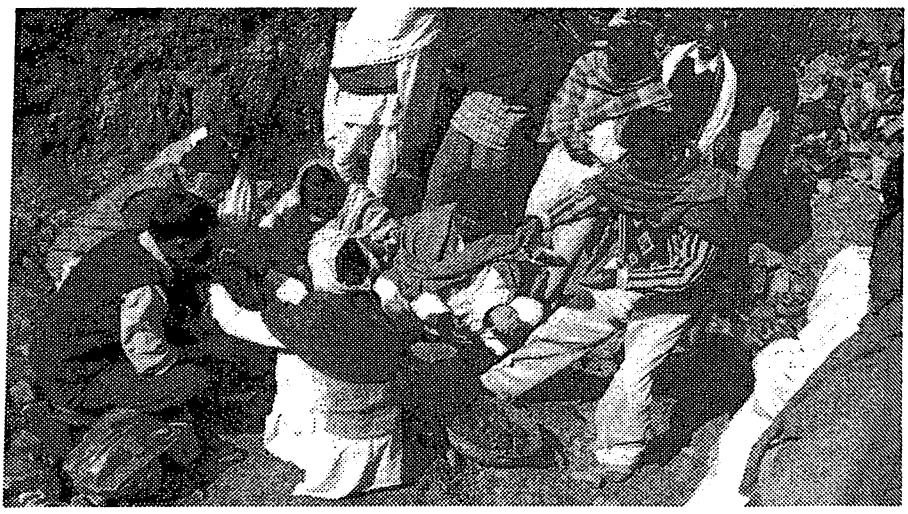

साहब श्री राजेन्द्र सिंह जी ने श्री गुरुदास अग्रवाल के हाथों से इस बाँध का शिलान्यास करवाया। इस अवसर पर श्री भोलानाथ जी महाराज व गाँव के सैकड़ों लोग उपस्थित थे। पं. श्री राम किशोर जी चिमनावत ने श्री गुरुदास अग्रवाल, भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी, भोलानाथ जी महाराज, राधेश्याम जी अग्रवाल व राज मिस्त्री के रूप में श्री दलवीर सिंह के हाथों गाँव के सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में बाँध के शिलान्यास का पूजन करवाया और पाँच-शिलाखण्ड रखवा कर नींव का मुहूर्त्त करवाया।

इस काम की डिजाइनिंग व सर्वे आदि का कार्य मैंने श्री गुरुदास जी अग्रवाल के निर्देशानुसार किया। अग्रवाल साहब ने ही सुझाव दिया था कि इस बाँध के ऊपर से अपरा न निकाल कर साइड में से निकालना ज्यादा उपयुक्त रहेगा। हमने उनकी बात मान कर अपरा साइड में से ही निकाली। हमने अग्रवाल साहब द्वारा दिये गये अन्य सुझावों का भी पूरी तरह से पालन किया। उल्लेखनीय है कि प्रो. जी.डी. अग्रवाल आई.आई.टी. कानपुर के सिविल तथा पर्यावरण इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष रहे हैं। भारत के पहले पर्यावरण इंजीनियर तथा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष रहे हैं। मध्यप्रदेश के महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट में ऑनरी प्रोफेसर रहे हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि ये एक महान् 'गंगा-भक्त' हैं। इन्होंने उत्तर काशी से ऊपर की गंगाजी को प्रदूषण मुक्त कराने हेतु आमरण अनशन करके सरकार पर नैतिक दबाव बनाते हुए अपनी मांगे मनवाई हैं।

कुछ दिनों बाद गाँव वालों ने इस रींछी वाला बाँध का नाम श्री गुरुदास अग्रवाल जी के नाम पर, उनके गुरुतुल्य होने के कारण, गुरु स्थान धूणीनाथ जी के पास स्थित होने के कारण तथा बाँध के गुरु (बड़ा) होने के कारण 'गुरु सागर' रख दिया।

गुरु सागर का काम बड़े ही जोर-शोर से शुरू हुआ। संस्था की तरफ से इस काम को शुरू करवाने से लेकर सम्पूर्ण करवाने तक श्री जगदीश गुर्जर का विशेष योगदान रहा, जिसको भुलाया नहीं जा सकता। सुश्री देवयानी कुलकर्णी ने भी गुरु सागर के प्रारम्भिक काम में श्रमदान की उगाही के काम में बहुत सक्रियता से काम किया है।

इस काम में गाँव की कार्यसमिति की भूमिका काफी सक्रिय रही। प्रारम्भिक काम में श्री महेशचन्द शर्मा के अलावा श्री राधेश्याम अग्रवाल, शान्तनुनरेश शर्मा, भोलानाथ जी महाराज आदि का भी विशेष योगदान रहा।

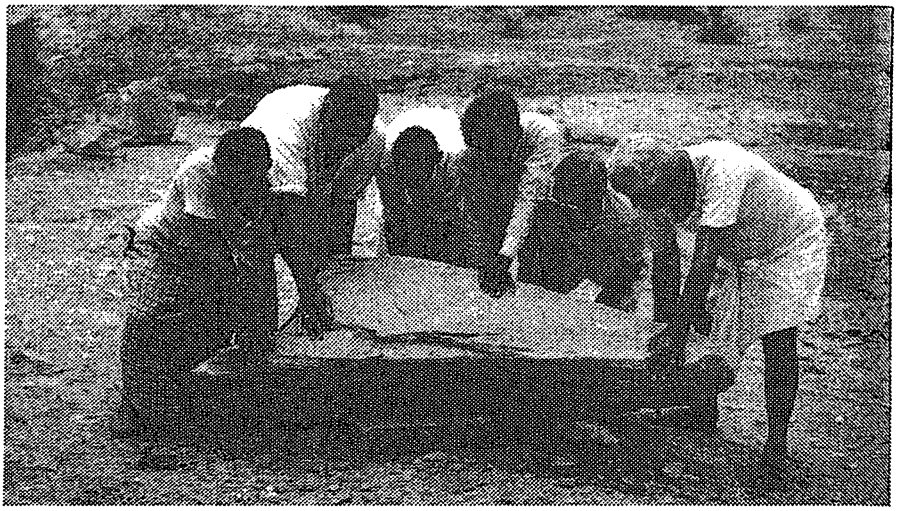

इस बाँध के काम को पूरा करने हेतु गाँव के सभी लोग जी–जान से जुट गये। बाबा श्री बालकनाथ जी से लेकर गाँव के कृषक व पशुपालक तक इस काम को पूरा करने की चेष्टा करने लगे। इस काम में यह एक खास बात देखने को मिली कि चूंकि इसमें सबका बेहद लगाव था, इसलिए पूरे काम में किसी प्रकार की पार्टीबाजी, गुटबन्दी, जातिवादिता, आपसी द्वेष–भावना अथवा स्वार्थ भावना आदि का विशेष दखल नहीं हुआ, जैसा कि प्रायः होता है।

हर गाँव में पाँच तरह के लोग होते हैं

विगत 25 वर्षों से समाज के साथ काम करते रहने के बाद संस्था का समाज की संरचना के बारे में एक पुख्ता अनुभव बना है, जिसका जिक्र करना यहाँ अप्रासंगिक नहीं होगा।

'हम दुनिया के किसी भी गाँव में चले जायें, हमें हर गाँव के समाज में विभिन्न तरह के लोग मिलेंगे। उन सभी विभिन्नताओं को यदि हम कम करते चले जायें, तो भी हमें हर गाँव में

पाँच तरह के लोग तो निश्चित रूप से मिलेंगे ही। इस सन्दर्भ के लिए हम प्रायः अपने हाथ की इन पाँचों अँगुलियों का उदाहरण देते हैं जिस तरह से हमारे हाथ में पाँच अँगुलियाँ हैं, वैसे ही समाज में भी पाँच तरह के लोग होते हैं।

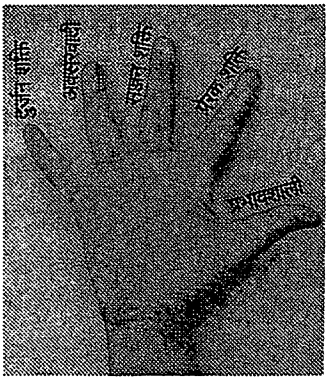

हमारी कनिष्ठिका अँगुली समाज की 'दुर्जन शक्ति' का प्रतीक है। दुर्जन शक्ति के लोग हमारे सम्पर्क में प्रायः सबसे पहले आते हैं। जिस प्रकार हम जब हाथ जोड़ते हैं, तो कनिष्ठका अँगुली ही सामने वाले व्यक्ति के सम्पर्क में सबसे पहले आती है। उसी प्रकार से कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता यदि समाज को जोड़ने हेतु किसी गाँव में जाता है तो सबसे पहले ये दुर्जन लोग ही उसके सम्पर्क में आते हैं। जिस प्रकार कनिष्ठिका की लम्बाई सबसे कम होती है, वैसे ही इनकी भी संख्या बहुत कम होती है। ये लोग देखने में व बातचीत करने में सबसे सज्जन लगते हैं, लेकिन होते हैं धूर्त। ये लोग बातें बहुत अच्छी करते हैं, पर सामने वाले से ये अपना स्वार्थ तलाशते रहते हैं। कुछ दिनों में यदि इन्हें अपना स्वार्थ सधता नहीं दिखता है, तो ये दूर हो जाते हैं और दूर रह कर भी उनके काम में बाधा पहुँचाने के लिए लोगों में भ्रान्तियाँ पैदा करते रहते हैं। इनसे सतर्क रहना चाहिए।

हमारी दूसरी अँगुली है अनामिका ! यह भी कनिष्ठिका की संगति में रहती है, पर कनिष्ठिका से थोड़ी बड़ी होती है। ठीक उसी तरह से समाज में भी दूसरी किस्म के जो लोग होते हैं, वे संख्या में दुर्जन शक्ति से थोड़ा ज्यादा होते हैं। ये 'अवसरवादी' होते हैं। उनका जहाँ भी स्वार्थ सधता दिखता है, ये वहीं चले जाते हैं। ये बिना पैंदे के लोटे होते हैं इसलिए अविश्वसनीय होते हैं।

हमारी तीसरी अँगुली है मध्यमा। जिस तरह से हाथ में यह सबसे बड़ी है, वैसे ही समाज में भी एक बहुत बड़ा वर्ग है, जो 'सज्जन शक्ति' कहलाता है। ये लोग कभी भी किसी का बुरा नहीं करते। ये किसी का बुरा सोचते भी नहीं । हमेशा दूसरों के भले की

बात ही सोचते रहते हैं। पर ये दूसरों का भला केवल सोचते ही हैं, भला करते नहीं हैं, इसलिए इन्हें 'सुषुप्त सज्जन शक्ति' कहते हैं। यह वर्ग सबसे बड़ा है। इस श्रेणी में हर वह व्यक्ति आता है, जो अपनी ही घर–गृहिस्थी में लगा रहता है। ये लोग केवल अपने काम से ही मतलब रखते हैं, दूसरों से ज्यादा सरोकार नहीं रखते। ये समाज कार्य के प्रति उदासीन होते हैं, इसलिए इन्हें जाग्रत करना जरूरी है क्योंकि जाग्रत होने के बाद तो समाज का वास्तविक काम आखिर ये ही लोग करते हैं। इसलिए इनका उत्साह बढ़ाते रहना चाहिये।

हमारी चौथी अँगुली है तर्जनी। तर्जनी अँगुली समाज में 'प्रेरक' या 'मार्गदर्शक शक्ति' का प्रतिनिधित्व करती है। इस वर्ग के लोग समाज में प्रेरणा व मार्गदर्शन का काम करते हैं। ये बुद्धिजीवी व विद्वान् होने के साथ ही साथ दूरदर्शी भी होते हैं। इस वर्ग के लोग भी सज्जन शक्ति की तरह ही दूसरों का भला सोचते हैं। पर इनमें एक विशेषता है कि ये सुषुप्त नहीं हैं। ये जाग्रत होते हैं। इसके अलावा ये किसी भी बात को न केवल स्वयं समझते हैं, बल्कि बहुत ही अच्छी तरह से समझा भी सकते हैं और विश्लेषण भी कर सकते हैं। ये नि:स्वार्थ और सिद्धान्तवादी होते हैं।

समाज में इन लोगों की प्रतिष्ठा और सम्मान होता है। गाँव के सब लोग उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। ये लोग अपने सिद्धान्तों पर अनुशासन पूर्वक चलते हैं। लोग इनके सिद्धान्तों को श्रद्धा से स्वीकारते भी हैं, पर प्रायः देखने में यह आता है कि इनकी बातों पर लोग चलते नहीं हैं। क्योंकि लोग अपने आपको साधारण और इनको असाधारण मानकर अपने मन में यह धारणा बना लेते हैं कि हम तो साधारण लोग हैं, इसलिए ऐसा नहीं कर सकते। पर यह हीन भावना है, जो उचित नहीं है। ये प्रेरक लोग पढ़े–लिखे विद्वान् भी होते हैं, और अनपढ़ विद्वान् भी। ये लोग ही समाज में जागृति पैदा कर सकते हैं।

हमारे हाथ का अन्तिम व पाँचवाँ, पर सबसे महत्त्वपूर्ण भाग होता है अँगूठा। जिस प्रकार हाथ में अँगूठे की उपयोगिता सबसे ज्यादा है वैसे ही समाज में भी एक पाँचवाँ महत्त्वपूर्ण वर्ग होता है, जिसे हम 'प्रभावशाली शक्ति' कहते हैं। यह भी संख्या में बहुत कम होते हैं। पहले तो गाँव में प्रायः एक ही होता था। पर अब एक, दो या अधिक भी हो

सकते हैं। गाँव में इसका प्रभाव (दबदबा) होता है। यह जिधर भी हो जाता है, साधारण लोग भी प्रायः उधर ही जाने को मजबूर हो जाते हैं।

इस वर्ग का व्यक्ति कुछ बातों में दुर्जन शक्ति के सदृश ही होता है, पर थोड़ी–सी भिन्नता है। दुर्जन को जहाँ सम्पत्ति, भौतिकता व अनैतिकता आदि का स्वार्थ होता है, वहीं प्रभावशाली व्यक्ति को अपने नाम का ही स्वार्थ सबसे ज्यादा होता है। पर नाम के साथ–साथ उसके अन्य स्वार्थ भी यदि सध जाते हैं तो उसे परहेज नहीं है। बस ! नाम होना जरूरी है। नाम चाहे किसी भी तरीके से हो। यदि नेक काम से नाम नहीं मिल पा रहा होता तो वह बद काम करके भी अपना नाम करने में पीछे नहीं रहता। लेकिन अपवाद स्वरूप यदि ऐसे व्यक्ति में कभी 'तर्जनी अँगुली' (प्रेरक शक्ति) का भी गुण प्रबल हो जाता है तो वह केवल अपने गाँव का ही नहीं, समूचे देश दुनिया का भी भला करने वाला हो जाता है। पर ऐसे लोग दुनिया में संयोग से ही जन्म लेते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन पाँचों वर्गों में गाँव के भले का काम प्रायः कोई भी नहीं करता दिखता; पर ऐसा नहीं है। उक्त पाँचों तरह के लोग आपस में एक–दूसरे का सहयोग करके समाज का कार्य करते रहे हैं। ऐसी स्थिति में सामाजिक कार्यकर्ता का दायित्व बनता है कि वह पहले अपना स्वयं का वर्गीकरण करके स्वयं को पहचाने, और फिर अँगूठे को तर्जनी से मिला दे। अर्थात् प्रभावशाली व्यक्ति का प्रेरक (प्रतिष्ठित) से सम्पर्क करवा दे। बस हो गया काम ! क्योंकि प्रेरक व्यक्ति, प्रभावशाली व्यक्ति को सन्मार्ग से नहीं डगमगाने देता और प्रभावशाली व्यक्ति साधारण लोगों की प्रेरक वर्ग के प्रति बनी हुई श्रद्धा का लाभ उठाकर अपना नाम भी कर सकता है और समाज का काम भी करवा सकता है।'

इन दोनों शक्तियों के एक होते ही 'मध्यमा' (सज्जन शक्ति) स्वयं जाग्रत हो जाती है और काम करने लगती है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि काम तो केवल सज्जन शक्ति ही करती है, पर उनको जाग्रत करने के लिए प्रेरक की तथा समुदाय में प्रभाव बनाने के लिए प्रभावशाली व्यक्ति की जरूरत भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होती। इसलिए आप केवल 'प्रेरक' व 'प्रभावशाली' का मेल भर करा दीजिए। बस! इनके एक होते ही सज्जन शक्ति स्वयं जाग्रत होकर स्वतः ही काम करने लग जायेगी।

गुरु सागर बाँध के काम में एक महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि इस बाँध के काम का विरोध किसी ने भी नहीं किया। बल्कि सभी ने अपने–अपने ढंग से इसे पूरा करने का ही प्रयास किया। काम पूरा करवाने के तरीकों में और विचारों में भले ही भिन्नता रही हो, पर बाँध नहीं बने, ऐसा कोई भी नहीं चाहता था। यह एक बड़ी बात थी।

बाँध के काम में श्रमदान राशि का व भुगतान आदि का बड़ी ही पारदर्शिता के साथ हिसाब रखा जाता था। श्रमदान, संसाधन व सामग्री आदि की दरों में किसी भी प्रकार का समायोजन (ऐडजस्टमेन्ट) नहीं हो, इस बात का भी विशेष ध्यान रखा जाता था। लेकिन गाँव के ही एकाध लोगों के मन में श्रमदान की अवधारणा ठीक से नहीं उतर पाई थी। उनकी सोच थी कि किसी भी तरह से यदि बिना श्रमदान दिये ही काम हो जाये तो ज्यादा अच्छा है। यह सोचकर उन्होंने एक नया गणित तैयार किया। उन्होंने पत्थर, बजरी आदि की रेट को डेढ़ गुणा कर के फिर उसी बढ़ाई हुई राशि को, जो कि कुल राशि की एक–तिहाई होती है, उसे श्रमदान के रूप में समायोजित करने की बौद्धिक कुशलता (?) दिखलाने का प्रयास किया। पर संस्था के कार्यकर्ताओं की सतर्कता एवं गाँव के अन्य लोगों की ईमानदारी के कारण वे सफल नहीं हो पाये, क्योंकि गाँव के अधिकांश लोग तो ईमानदारी से ही काम करना चाहते थे।

यद्यपि समायोजन करने वालों की मानसिकता भी बाँध के काम में अड़चन डालने की कतई नहीं थी, बल्कि येन–केन–प्रकारेण काम को पूरा करने की ही थी, पर उन्होंने तरीका ईमानदारी के बजाय चालाकी का अपनाया था, जो कि नैतिक रूप से ठीक नहीं था। उनको समझाया भी गया कि यदि आप श्रमदान पूरा नहीं कर पा रहे हैं, तो समायोजन करने के बजाय संस्था से ही पुन: आग्रह करें; कि वह श्रमदान के हिस्से में कुछ प्रतिशत की कमी करे। पर यह बात उनके गले नहीं उतरी। आखिर जून 2004 के अंत में इस काम को जमीन के तल तक नींव भर कर ही बन्द कर देना पड़ा। जमीन के तल तक भरने में ही लगभग 9 लाख रुपये खर्च हो चुके थे। पर काम बन्द कर देने के अलावा कोई चारा ही नहीं रह गया था।

संस्था के कार्यकर्ता श्री जगदीश गुर्जर ने इस रुके हुए काम को पुनः चालू करवाने के लिए काफी प्रयास किया, पर सफलता नहीं मिली। उधर समायोजकों में यह भी धारणा रही कि संस्था को तो काम पूरा करना ही होता है, इसलिए वह इसे अपने आप पूरा करेगी ही। पर संस्था तो पारदर्शिता से हुए श्रमदान के बिना काम करती नहीं, इसलिए काम पुनः शुरू नहीं हो पाया। श्री जगदीश गुर्जर ने भी प्रयास नहीं छोड़ा। वह गाँव के कुछ अन्य लोगों को सक्रिय करने में लगे रहे।

आखिर सफलता मिली। क्योंकि इधर गाँव के भी कुछ बुद्धिजीवी, विचारवान् व सक्रिय लोगों के मन में बार-बार यह बात कचोटती ही थी कि 9 लाख रुपये गाँव की कमी के कारण मिट्टी में मिल गये, जो कि पूरे गाँव के लिए शर्म की बात है। यह सोच कर गाँव के लोगों ने श्री जगदीश गुर्जर के साथ 12 मई 2006 को शिव-मन्दिर (पंचायत भवन के पास) में बाँध का काम पुनः चालू करने के बाबत एक बैठक की। चर्चा में लोगों ने इस बाँध को सर्वसम्मति से पुनः बनाने के बाबत विचार-विमर्श किया। एक नई कार्यसमिति का गठन किया गया। यद्यपि अधिकांश लोग इसमें भी पुरानी कार्य-समिति के ही थे। पर समायोजक लोग अब स्वतः ही निष्क्रिय हो गये थे। साथ ही कुछ अन्य लोग भी इस काम को पूरा करवाने के लिए पुनः सक्रिय हुए थे। इनमें गाँव के तत्कालीन सरपंच श्री रामेश्वरदयाल यादव, श्री चिरंजी लाल शर्मा (अध्यापक) तथा बोध शिक्षा समिति के श्री योगेन्द्र जी व श्री छोटेलाल गुर्जर आदि प्रमुख थे। श्री महेशचन्द्र शर्मा, फतेह सिंह जी, बहन जी मगन कँवर, शम्भू दयाल सैनी, कैलाश सैनी, हजारी लाल सैनी और भैंरू सिंह यादव आदि लोग तो पहले से सक्रिय थे ही।

इन्होंने पुनः तरुण भारत संघ में आकर भाईसाहब राजेन्द्र सिंह जी से सम्पर्क किया और उन्हें बाँध के काम को पुनः शुरू करने की बात कही। गाँव वालों ने श्री जगदीश गुर्जर की मध्यस्थता में भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह से आग्रह किया कि इस बाँध के काम में हम गाँव की तरफ से कुल लागत का एक-तिहाई के बजाय एक चौथाई श्रमदान ही कर पायेंगे। जिसमें बीस प्रतिशत सहयोग बोध गाँव का तथा पाँच प्रतिशत सहयोग गढ़बसई और गोवड़ी गाँव का रहेगा। उन्होंने भाईसाहब से आग्रह किया कि शेष पचहत्तर प्रतिशत सहयोग आप संस्था की तरफ से करें। गाँव के लोगों के साथ

आये श्री चिरंजीलाल जी शर्मा की स्पष्टवादिता व निष्कपट वाक्–चातुर्य से प्रभावित होकर भाई साहब ने आखिर उनकी बात मान ही ली और पुनः काम शुरू करने की स्वीकृति दे दी। मई 2006 के अन्त में काम पुन: शुरू हो गया। गाँव की कार्य-समिति की बैठक हर हफ़्ते होती थी, जिसमें बाँध की व्यवस्था आदि के बारे में चर्चा होती थी। कार्य करने की यह पद्धति सबके लिए एक नई बात थी।

25 जून 2006 को श्री जगदीश गुर्जर व श्री कन्हैया लाल गुर्जर की उपस्थिति में बाँध स्थल पर ही एक बैठक हुई जिसमें बाँध की व्यवस्था सम्बन्धी बातचीत के अलावा प्रमुख रूप से यह भी निर्णय हुआ कि यह बाँध सार्वजनिक है, इसलिए कोई भी संस्था अथवा व्यक्ति इस बाँध के भराव क्षेत्र में से सिंचाई के लिए पानी नहीं लेगा। इसके अलावा इसके भराव क्षेत्र में व्यक्तिगत रूप से कोई भी व्यक्ति मछली पालन, सिंघाड़े तथा फसल व सब्जी आदि नहीं करेगा। यह वक्तव्य गाँव के तत्कालीन सरपंच श्री रामेश्वर दयाल यादव ने समस्त ग्रामवासियों को पढ़ कर सुनाया जिसे श्री भोलानाथजी सहित गाँव के सभी लोगों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

श्री जगदीश गुर्जर ने इस बार जादौन की पाटन के श्री जगदीश शर्मा (पण्डित जी) को इस बाँध के काम के लिए तरुण भारत संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में नियुक्त

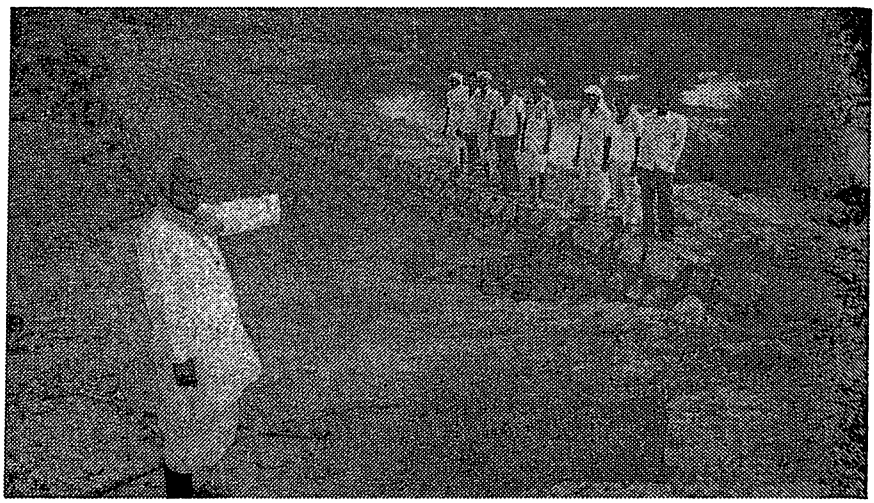

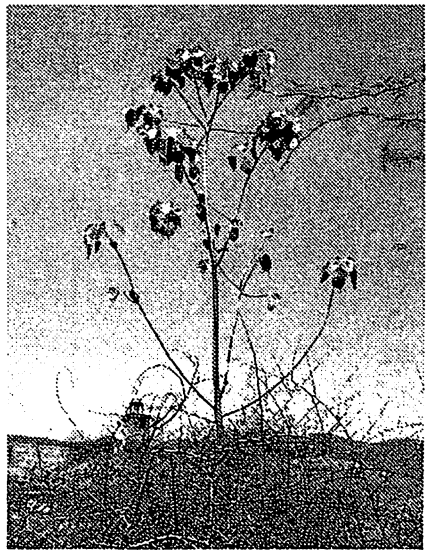

कर दिया। वे रात–दिन बाँध पर ही रह कर पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी के साथ काम करवाते रहे। उल्लेखनीय है कि पण्डित जी के काम से गाँव के सभी लोग पूर्ण संतुष्ट थे। उन्होंने गुरु सागर बाँध के नीचे एक पीपल का पेड़ भी लगाया था, जो अब पर्याप्त बड़ा हो गया है। लोग इसे पण्डित जी का पीपल कहने लगे हैं। यद्यपि पण्डित जी आज हमारे बीच नहीं रहे, पर गाँव के लोग उनके द्वारा लगाये गये पीपल को तथा बाँध को देख कर उन्हें हमेशा याद करते रहेंगे। उनकी देखरेख में यह काम सुचारु रूप से चलते हुए दिसम्बर 2006 के अन्त में निर्विघ्न सम्पूर्ण हो गया।

अगले वर्ष यह बाँध पूरा नहीं भरा, पर वर्ष 2008 की बारिश में यह बाँध पहली बार पूरा भरा। संयोग ऐसा रहा कि पहली बार में न तो यह बाँध एक भी इंच खाली रहा और न ही एक भी इंच ऊपर से बहा। गाँव के लोग पानी से भरे हुए इस बाँध को देख कर

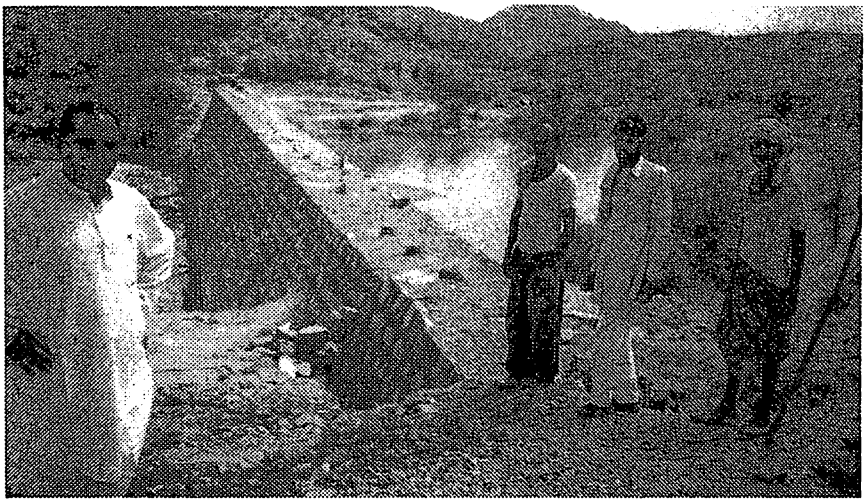

अपनी सफलता पर फूले नहीं समाये। इस बाँध के भरने से गाँव के ऊपर के यानी पश्चिम की तरफ वाले कुओं का जलस्तर तो तत्काल ही ऊपर आ गया। और नीचे के कुओं में भी इसका असर कुछ महीनों बाद दिखाई देने लगा। और सबसे उत्साहवर्द्धक बात तो यह रही कि पिछले बीस–पच्चीस साल से सूख चुकी यह नदी इस वर्ष पुनः बहने लगी। इस वर्ष बाँध के भरने पर इसके झरने का पानी दो–तीन किलोमीटर दूर तक बह कर गाँव के पूर्व दिशा में चिमदाला कुआँ के सामने तक आ गया था। यही तो गुरु सागर से निकली हुई 'गुरु गंगा' थी।

काम में दो साल तक अवरोध आने के कारण गुरु सागर बाँध के पूरा होने में कुल मिला कर तीन–चार साल लग गये। पर इस बीच में गुरु सागर के ऊपर की तरफ एक एनीकट भीण्डी रुख जी (भृंगी ऋषि जी) के ऊपर तथा एक बाँध भीण्डी रुख जी के

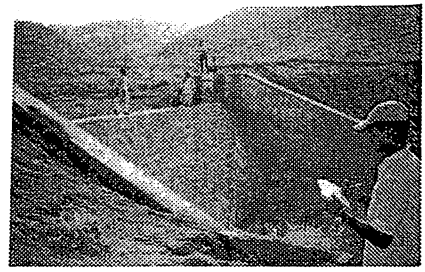

नीचे और बन कर तैयार हो गये। साथ ही भीण्डी रुख जी के प्राचीन कुण्ड में भी मरम्मत कार्य हुआ। यह कुण्ड पहले चौकोर था, मरम्मत के दौरान खुदाई कर के और गहरा करने पर इसे कुईनुमा बना दिया गया। ऊपर वाले एनीकट और कुण्ड के काम में यहाँ के बाबा श्री प्रयागदास जी महाराज का व नाँगलबनी गाँव के लोगों का सहयोग प्रशंसनीय रहा तथा भीण्डी रुख जी के नीचे वाले बाँध में 'बोध शिक्षा समिति, ग्राम गढ़बसई' का सहयोग रहा। इसी प्रकार धूणीनाथ जी के रास्ते में रूड्या काँण्या की चौड़ में एक जोहड़ जो ग्राम पंचायत से बना हुआ था, उसमें अपरा नहीं बनी थी। उसकी पक्की अपरा बनाने का काम भी तरुण भारत संघ व ग्रामवासियों के सहयोग से ही पूरा हुआ। इसके अलावा नारेठा के ऊपर वाले एनीकट में बाली की ढाणी के लोगों के सहयोग से एक एनीकट और बना।

इन सब कामों से पिछले बीस–पच्चीस सालों से हो रही पानी की कमी काफी हद तक दूर हुई, लेकिन सबसे ज्यादा असर जो दिखाई दिया, वह 'गुरु सागर बाँध' व 'मनसा सागर बाँध' से ही दिखाई दिया।

वैसे देखा जाये तो गढ़बसई व गोवड़ी गाँव का संगठन केवल गुरु सागर बाँध के कारण ही बन पाया; लेकिन संगठनात्मक ढाँचा तैयार करने में पूर्व में बने सभी जोहड़, बाँधों की भी महती भूमिका रही है। वैसे आगे के कामों को करने की प्रेरणा तो मनसा सागर के काम से हुए लाभ को देखकर ही मिली थी। गाँव का संगठन मजबूत होने में गुरु सागर के निर्माण में आये दो साल के अवरोध की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण रही, क्योंकि यदि यह अवरोध नहीं आता तो शायद कामों में पारदर्शिता नहीं आ पाती। हाँ, काम जैसे–तैसे अवश्य पूरा हो जाता। किसी भी काम में ईमानदारी व पारदर्शिता का होना एक महत्त्वपूर्ण बात है।

गुरु सागर को देखने समझने व इसके बनाने वाले समाज के श्रम की प्रशंसा करने 2 दिसम्बर 2006 को इस बाँध पर माननीय प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी की

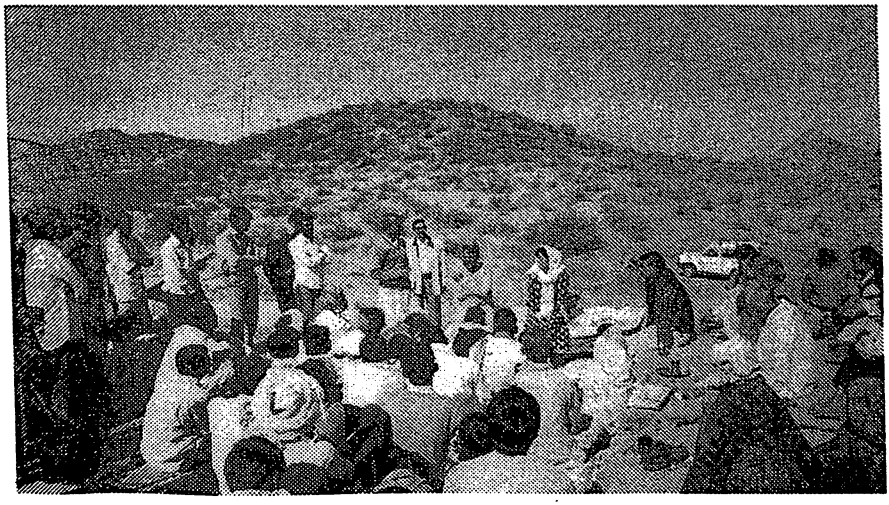

सुपुत्री दमन सिंह भी आई थीं। उन्होंने गाँव के प्रयास को सराहा और भविष्य में बरसात के पानी को बचाकर रखने की गुजारिश भी की। उल्लेखनीय है कि श्रीमती

दमन सिंह अपने इस प्रवास से बारह वर्ष पूर्व भी अगस्त 1994 में एक हफ्ते के लिए थानागाजी के दुर्गम क्षेत्रों का अध्ययन करने व कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए यहाँ आईं थीं। तब संस्था के कार्यकर्ताओं के साथ दुहारमाला व रह का माला जैसे दुर्गम गाँवों में भी पैदल जाकर वहाँ की स्थिति का अवलोकन किया था और रात्रि–विश्राम भी गाँव में ही किया था।

बाद में 12 सितम्बर,2009 ई. को इस बाँध का लोकार्पण करने के लिए कांग्रेस के महासचिव व मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह जी भी यहाँ आये थे। उन्होंने

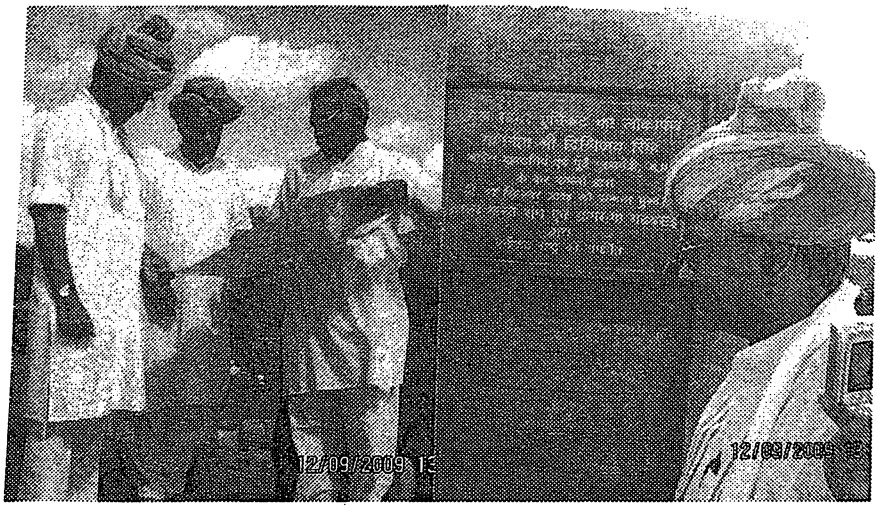

गाँव के प्रयासों की सराहना की और इस काम को देश के अन्य भागों में भी फैलाने की पेशकश की। उस समय यहाँ पर जोधपुर के अरावली इन्स्टीट्यूट से मैनेजमेंट के छात्र तथा विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि भी आये हुए थे।

इस प्रकार साबी नदी के उद्गम के इस गाँव में जल, जंगल व जमीन के काम पूरे हुए। इन कामों को सम्पूर्ण कराने में पूरे गाँव की ही सक्रिय भागीदारी रही है। समय–समय पर गाँव की मीटिंग होती रही हैं, जिससे गाँव के लोग सक्रिय होकर जल संरक्षण के कार्य कर सके। यहाँ पर 'गाँव' शब्द केवल गढ़बसई गाँव का ही बोधक नहीं है, बल्कि इसमें गढ़बसई व गोवड़ी दोनों गाँव सम्मिलित हैं। ये दोनों गाँव प्रारम्भ से ही एक रहे हैं, इन्हें अलग–अलग कर के नहीं देखा जा सकता।

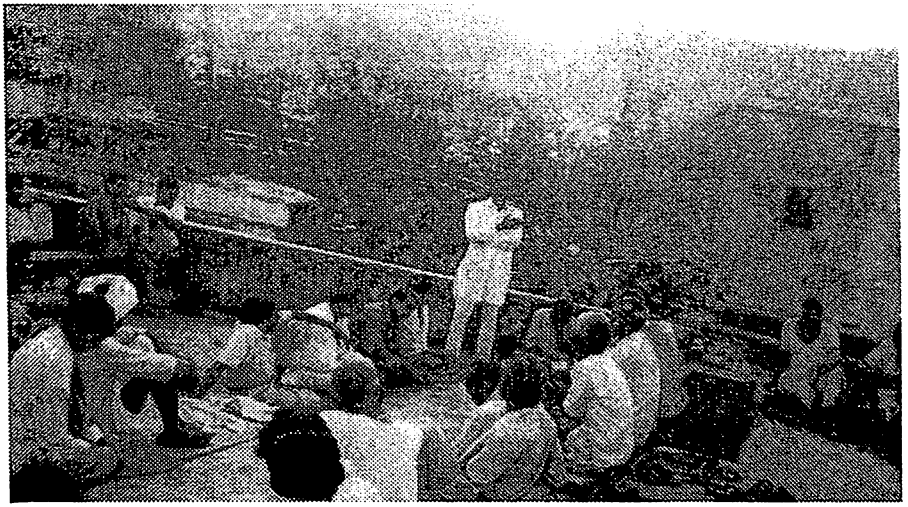

गढ़बसई गाँव का संक्षिप्त इतिहास

कहा जाता है कि शताब्दियों पूर्व यह गाँव वर्तमान गाँव की बसावट की जगह से पश्चिमोत्तर में स्थित पहाड़ी के शिखर (काँटाळा) से कुछ नीचे पूर्व में एक अन्य शिखर के पास तलहटी से लगभग 250 मीटर ऊँचाई पर बसा हुआ था। क्योंकि पहले लोग ऊँचाई पर रहने को ही सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा समझते थे, इसलिए प्रायः ऊँचे पहाड़ों पर ही बसते थे। इस पहाड़ी पर बसावट के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। कालान्तर में यह गाँव तत्कालीन स्थान से पूर्व में नीचे पहाड़ी की तलहटी में वर्तमान जगह पर आकर बस गया। कहते हैं, प्रारम्भ में यह गाँव हल्दीना गोत्र के बनियों के आधिपत्य में था। बाद में यहाँ पर राधरका (रायधरका) खाँप के राजपूतों ने अधिकार कर लिया। भानगढ़ के महाराजा माधोसिंह जी के पुत्र छत्रसिंह जी के पौत्र मोहकम सिंह जी संवत् 1717 विक्रमी में गढ़बसई (उस समय इस गाँव का नाम बस्सयी था) आये। उन्होंने राधरका राजपूतों को परास्त कर के वहाँ पर अपना अधिकार जमा लिया। ये लोग सूर्यवंश के कछवाहा (कुशवाहा) कुल के अन्तर्गत राजावत खाँप

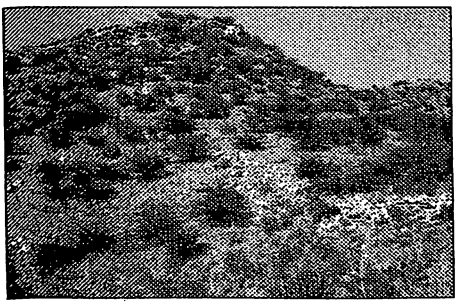

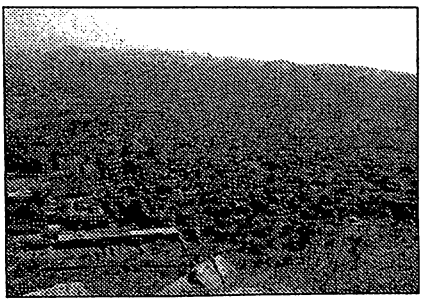

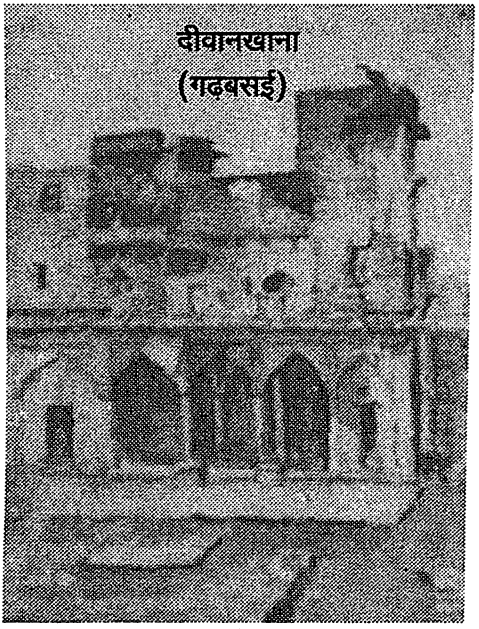
दीवानखाना
(गढ़बसई)

(तिड़) की माधाणी (माधोसिंहोत) नख (शाखा) के राजपूत थे। इनके वंशज वर्तमान में भी यहाँ निवास करते हैं। भानगढ़ से इनके साथ सोमावत गोत के नाई, आसणधारी जोगी तथा कुम्हार व कुछ अन्य जातियों के लोग भी आये थे।

पहले उन्होंने गाँव के पूर्व में स्थित पहाड़ी महलाळी पर गढ़ बनाना शुरू किया पर अपशकुन हो जाने के कारण वर्तमान कोटड़ी की जगह पर गढ़ बनाया, जो अब खण्डहर हो चुका है। किन्तु इसी गढ़ के नाम से 'बस्सयी' या 'बसी' नाम के इस गाँव का नाम 'गढ़बस्सयी' या 'गढ़बसी' हुआ था, जो आगे चल कर 'गढ़बसई' हो गया। अँग्रेजी में राजस्थान के इतिहास के सुप्रसिद्ध लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने भी विराट (विराटनगर) का हवाला देते हुए बस्सयी (बसई) गाँव का जिक्र किया है। कर्नल जेम्स टॉड ने 'टॉड–राजस्थान' में लिखा है कि विराट (विराटनगर), माचैड़ी राज के अन्तर्गत आने वाली निजामत ग़ाज़ी का थाना के गाँव बस्सयी (बसई) से, तीन कोस की दूरी पर स्थित है। टॉड–राजस्थान के अनुसार ग़ाज़ी का थाना (थानाग़ाज़ी) उन दिनों माचैड़ी राज के अन्तर्गत ही आता था। टॉड साहब ने विराट नगर की भौगोलिक स्थिति बताने के लिए बस्सयी (बसई) गाँव का हवाला दिया, इससे यह भी सिद्ध होता है कि उन दिनों यह गाँव विराट (विराट नगर) से भी ज्यादा प्रसिद्ध हो चुका था।

हथिनी दरवाजा

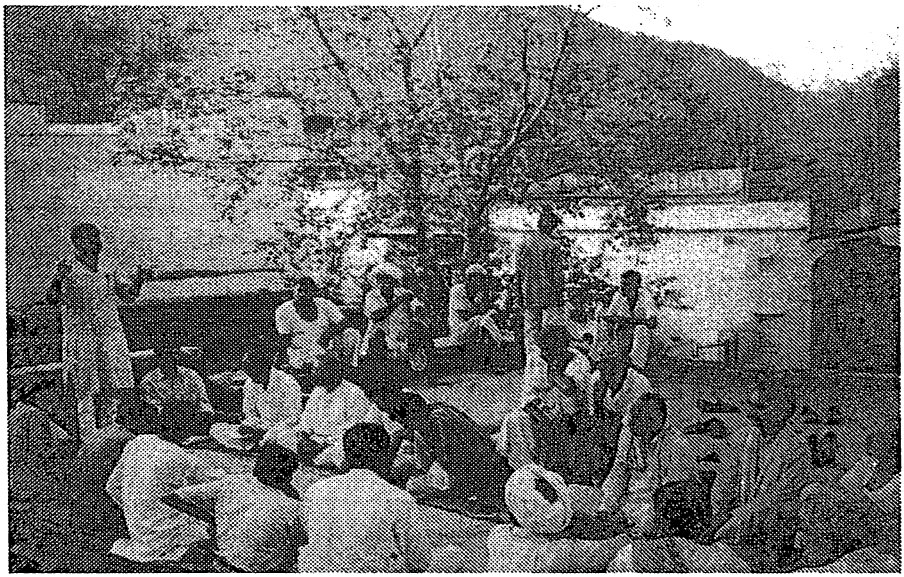

गुरु सागर (रींछी वाला बाँध)

ग्राम–गढ़ बसई, तहसील–थानागाजी, जिला–अलवर (राजस्थान)

सम्पूर्ण कार्य (6 दिसम्बर, 2003 से 31 दिसम्बर 2006 तक) का विवरण

संसाधन	मात्रा × दर		कुल लागत	गाँव का श्रमदान	तरुण भारत संघ का सहयोग
पत्थर (1037 ट्रॉली)	906×450	=	4,07,700	1,38,640	2,69,060
	131×400	=	52,400	27,600	24,800
बजरी (523 ट्रॉली)	327×450	=	1,47,150	49,050	98,100
	196×700	=	1,37,200	1,31,197	6,003
	1767×150	=	2,65,050		
सीमेन्ट (3587 बैग)	300×191.25	=	57,375		
	150×186.18	=	27,927		
	520×193.105	=	1,00,415		
	300×193.50	=	58,050	46,050	5,77,899
	400×192.94	=	77,176		
	150×193.37	=	29,006		
सीमेंट भराई, उतराई व भाड़ा	विभिन्न दरों पर	=	8,950		
कारीगर (1215हाजरी)	77×150	=	11,550	550	11,000
	216.5×145	=	31,393	10,752	20,641
	96×140	=	13,440	655	12,785
	629.5×125	=	78,687	709	77,978
	38×120	=	4,560	—	4,560
	100×115	=	11,500	—	11,500
	12×110	=	1,320	—	1,320
	29×100	=	2,900	67	2,833
	17×70	=	1,190	—	1,190
श्रमिक (5227 हाजरी)	4584×60	=	2,75,040	43,800	2,31,240
	643×70	=	45,010	—	45,010
व्यवस्थापक	183×100	=	18,300	—	18,300
(296 हाजरी)	113×60	=	6,780	—	6,780
जे.सी.बी. (43.75 घंटे)	37.25×600	=	22,350	7400	14,950
	1×650	=	650	650	—
	5.5×675	=	3,712	—	3,712
मलबा ढुलाई	250×15	=	3,750	—	3,750
(250 ट्रॉली) व	7×140		980	427	553
ट्रैक्टर–कार्य (14 घण्टे)	7×140		980	—	980
पाईप	—		10850	10850	—
पानी (इंजन द्वारा)	—		3124	200	2924
अन्य खर्च	—		14,556	3750	10806
कुल खर्च	**—**		**19,31,021**	**4,72,347**	**14,58,674**

गाँव का श्रमदान (बोध गाँव सहित) : चार लाख, बहत्तर हजार, तीन सौ सैंतालीस रुपये मात्र

संस्था का योगदान : चौदह लाख, अट्ठावन हजार छः सौ चौहत्तर रुपये मात्र

कुल लागत : उन्नीस लाख इक्तीस हजार, इक्कीस रुपये मात्र

ग्राम गढ़बसई के जल-संरक्षण कार्य	
1. नारेठा का ऊपर वाला बाँध-वाली की ढाणी	9. कुण्ड (ब्रह्माणी माता के नीचे)
2. नारेठा का नीचे वाला बाँध	10. भीण्डीरुख जी का ऊपर वाला एनीकट (नांगलवानी व गढ़बसई)
3. बावा वाला बाँध	11. भीण्डीरुख जी का कुण्ड
4. भोमिया वाला बाँध	12. भीण्डीरुख जी का नीचे वाला एनीकट
5. मनसा सागर	13. रूड़्या काण्या की चौड़ का जोहड़
6. बीड़ाँ वाला बाँध	14. लीला राम धानका का एनीकट
7. बीड़ाँ वाली जोहड़ी	15. भीण्डीरुख जी की जोहड़ी
8. स्वामी की बावड़ी	16. गुरुसागर

गढ़बसई गाँव लगभग 3000 की आबादी वाला गाँव है, जिसमें लगभाग 450 परिवार रहते हैं। यहाँ पर वर्तमान में 25 जातियाँ रहती हैं। यहाँ पर एक माध्यमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय और एक बालिका विद्यालय है। पंचायत भवन व पटवार घर हैं। पोस्ट ऑफिस भी है। एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व एक आयुर्वेदिक औषधालय है। गाँव की कुल जमीन का किस्मवार विवरण इस प्रकार है –

गाँव की कुल भूमि

सिवाय चक	370.58 हैक्टेयर (1465 बीघा)
जंगलात	238.34 हैक्टेयर (942 बीघा)
चरागाह सार्वजनिक	24.63 हैक्टेयर (97 बीघा)
खाते की कुल जमीन	328.93 हैक्टेयर (1300 बीघा)
कुल जमीन	962.48 हैक्टेयर (3805 बीघा)

नोट : चरागाह की कुल जमीन 77.77 हैक्टेयर (307.47817 बीघा) है, जिसमें 45.59 हैक्टेयर जंगलात में, 7.55 हैक्टेयर मन्दिर धूणीनाथ जी के खाते में और 24.6 हैक्टेयर भूमि चरागाह के खाते में दर्ज है।

1 हैक्टेयर = 3.953686 बीघा

खाते की कुल भूमि – 328.93 हैक्टेयर (1300.486 बीघा) में से

सिंचित जमीन	105.68 हैक्टेयर (418 बीघा)
असिंचित जमीन	164.96 हैक्टेयर (652 बीघा)
अकृष्य भूमि (खातेदारी में)	50.74 हैक्टेयर (200 बीघा)
चरागाह (खातेदारी में)	7.55 हैक्टेयर (29 बीघा)

खाते की कुल जमीन (खातेदारी व गैर खातेदारी) – 328.93 हैक्टेयर (1300.486 बीघा)

थानागाजी में वर्षा मि.मी. में

वर्ष	औसत वर्षा मि.मी. में	अधिकतम वर्षा का दिन	अधिकतम वर्षा	वर्षा के कुल दिन	वर्ष	औसत वर्षा मि.मी. में	अधिकतम वर्षा का दिन	अधिकतम वर्षा	वर्षा के कुल दिन
1980	618.8	11 जुलाई	89	29	1995	1094	9 अगस्त	120	43
1981	704	18 जुलाई	137	33	1996	1272	2 सितम्बर	94	54
1982	527	26 जुलाई	75	28	1997	1123	12 सितम्बर	92	55
1983	1014	27 जुलाई	141	51	1998	807	13 अगस्त	85	43
1984	703	3 सितम्बर	160	29	1999	633	25 जुलाई	129	19
1985	726	4 अगस्त	105	38	2000	565	30 जुलाई	51	35
1986	226	28 सितम्बर	54	09	2001	578	15 जून	48	37
1987	491	28 अगस्त	89	23	2002	179	31 दिसम्बर	34	16
1988	561	25 जुलाई	66	37	2003	909	10 जुलाई	95	52
1989	424	25 सितम्बर	40	23	2004	.556	25 अगस्त	135	32
1990	748	1 जुलाई	59	39	2005	835	14 जुलाई	132	34
1991	322	3 सितम्बर	45.8	25	2006	515	10 जुलाई	76	30
1992	763	24 मई	67	46	2007	685	2 अगस्त	78	39
1993	918	12 जुलाई	148	46	2008	1225	19 सितम्बर	135	55
1994	909	18 जुलाई	62	52	2009				

गुरुसागर का X-सैक्शन

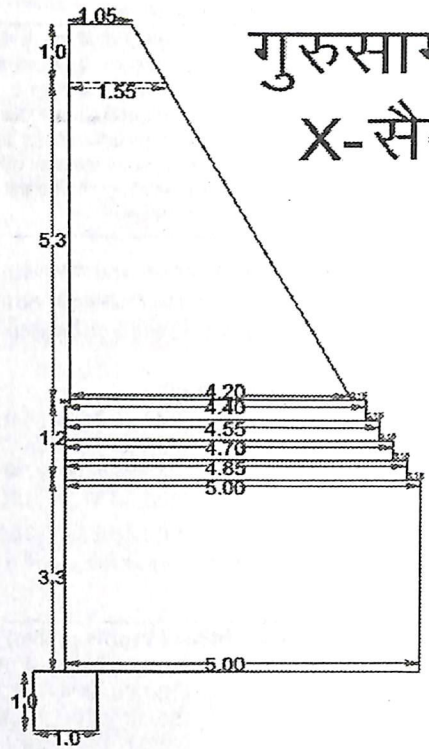

गुरुसागर का L- सैक्शन

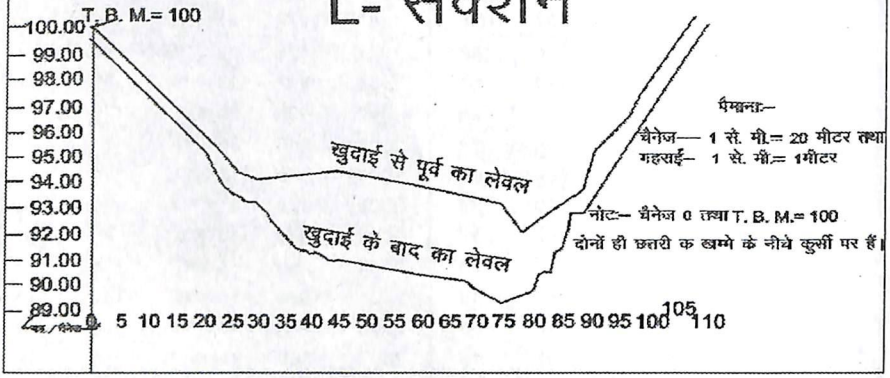

गुरुसागर का भराव क्षेत्र

ग्राम – गढ़बसई, तहसील–थानागाजी, जिला–अलवर (राज.)

पैमाना:– 1:4000

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

T. B. M.= 100 (छतरी के स्तम्भ के नीचे कुर्सी का लेवल)

अपरा का लेवल	=97.92
हैड वाल का टॉप लेवल	=98.92
भराव का न्यूनतम लेवल	=92.50
सामान्य गहराई का लेवल	=93.95
औसत गहराई का लेवल	=95.92(लगभग)

भराव का क्षेत्रफल=72500 वर्गमीटर=7.25 है.

भराव में कुल पानी का आयतन=145000 घन मीटर

नोट:– चैनेज 0 तथा T. B. M.= 100 दोनों ही बाँध पर स्थित छतरी के खम्भे के नीचे कुर्सी पर हैं।

ग्रामः—गढ़बसई—गोवड़ी, तहसील—थानागाज़ी, ज़िला—अलवर (राज.)

गुरु सागर से कुओं की दूरी (मीटर में) व लोकेशन

क्र. सं.	कुएँ का नाम	गुरु सागर से दूरी (मीटर में)	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
1	कुण्ड घाटी का कुण्ड	2865	27	22	35.40	76	13	28.92
2	कुण्ड घाटी की वेरी	2830	27	22	35.04	76	13	27.84
3	कालू कीर का कुआ	826	27	23	19.00	76	13	12.50
4	रींछी वाला कुआ	265	27	23	36.24	76	13	22.30
5	धूणीनाथ जी का कुआ	425	27	23	34.12	76	13	44.76
6	तळाव का कुआ	303	27	23	35.48	76	13	04.44
7	ढेरड़ी वाला कुआ	208	27	23	44.34	76	13	36.88
8	छीलाळा–बाबाजी का	329	27	23	47.26	76	13	39.97
9	छीलाळा–ठाकुरों का	491	27	23	51.36	76	13	43.46
10	कौरों की कुई	531	27	23	53.30	76	13	43.86
11	ग्यारसा खटीक का कुआ	678	27	23	58.92	76	13	18.23
12	नारेठा की कुई	927	27	24	10.30	76	13	27.98
13	नादर्या का कुआ	713	27	23	56.80	76	13	48.90
14	ऊपला कुआ	816	27	23	58.78	76	13	52.18
15	मूस्याळी	1027	27	24	05.18	76	13	55.74
16	तेल्याळा कुआ	940	27	23	58.63	76	13	58.15
17	धोबीदह की बावड़ी	894	27	23	53.88	76	13	59.48
18	मोज्याळी	1020	27	23	53.59	76	14	04.74
19	धाबाळा कुआ	1210	27	23	55.57	76	14	11.33
20	भोपाळा कुआ	1323	27	24	03.38	76	14	11.36
21	कुण्ड ब्रह्माणी माता के नीचे	1570	27	24	13.97	76	14	14.03
22	गोपाल्या खटीक का कुआ	1827	27	24	27.58	76	14	11.76
23	भैरू वाला कुआ	1365	27	24	00.68	76	14	15.32
24	मालियों की बावड़ी वाला कुआ	1276	27	23	53.20	76	14	15.32
25	श्यामी की बावड़ी	1407	27	23	51.94	76	14	2.33
26	श्यामी की बावड़ी का कुआ	1432	27	23	51.97	76	14	21.41
27	आसण वाला कुआ	1569	27	23	51.29	76	14	26.56
28	व्यासाळा कुआ	1666	27	23	51.90	76	14	30.05
29	वाटर वर्क्स का कुआ	1674	27	23	55.18	76	14	29.51
30	चिमदाळा कुआ	1693	27	23	56.94	76	14	29.51
31	भट्टा वाला कुआ	1804	27	23	58.92	76	14	33.40
32	खार्या कुआ	2006	27	23	59.39	76	14	35.48
33	महलड़ा का कुआ	1794	27	24	00.65	76	14	32.17
34	बनियों का कुआ	1705	27	23	59.39	76	14	29.40
35	दायमों का कुआ–औषधालय के पास	1727	27	24	01.48	76	14	2918
36	रैगरों के पास वाला कुआ	1856	27	24	02.59	76	14	33.65
37	होळी वाला कुआ	1823	27	24	03.38	76	14	33.99
38	बाज़ार वाला कुआ	1813	27	24	05.33	76	14	30.55
39	चिमनावतों वाली कुई	1739	27	24	05.11	76	14	28.03
40	रामशाला की कुई	1815	27	24	08.39	76	14	29.18
41	चन्द्र शेखर जी का कुआ	1974	27	24	09.94	76	14	34.55
42	वैद्य जी का कुआ	1924	27	24	11.02	76	14	31.85
43	जोहड़ी वाला कुआ	2100	27	24	14.15	76	14	37.36
44	धानकों के पास वाला कुआ	2146	27	24	15.62	76	14	38.58
45	सालेटा का कुआ	2298	27	24	23.26	76	14	39.30
46	बड़ी बावड़ी	2443	27	24	17.24	76	14	49.67
47	घाटी वाला कुआ	2261	27	24	13.18	76	14	44.66
48	माना कुआ	2365	27	24	10.87	76	14	50.17
49	धामाळा कुआ	2419	27	24	10.04	76	14	52.37
50	चरी वाला कुआ–मातादीन जी का	2578	27	24	11.16	76	15	02.09

क्र. सं.	कुएँ का नाम	गुरु सागर से दूरी (मीटर में)	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
51	जोगियों वाला कुआ–बसन्ता वगैरह का	3061	27	24	11.95	76	15	16.88
52	माणक्या वाला कुआ–सालेटा	3125	27	24	01.80	76	15	22.36
53	घाणकों वाला कुआ	2964	27	23	59.71	76	15	16.74
54	लादू, बंशी, शम्भू का कुआ	2686	27	23	59.10	76	15	06.52
55	भटाळी का कुआ	2712	27	24	00.14	76	15	07.31
56	पुजारी वाला कुआ	2592	27	24	05.62	76	15	00.90
57	पटवारियों वाला कुआ–सत्यनारायण जी का	2336	27	24	03.35	76	14	51.94
58	जोहड़ा का कुआ	2213	27	24	06.30	76	14	46.21
59	बगाळा कुआ	2024	27	24	01.98	76	14	40.60
60	गौंदया का बड़ का कुआ	1945	27	23	59.21	76	14	38.54
61	पण्डाळा कुआ	1959	27	23	55.75	76	14	40.38
62	खारड़ा कुआ– गंगाराम का	2251	27	23	58.02	76	14	50.46
63	बन्चाळा कुआ	2183	27	23	50.50	76	14	49.20
63	झालरा कुआ– पुराना	2399	27	23	58.85	76	14	58.00
64	झालरा कुआ– नया	2395	27	23	58.45	76	14	55.90
65	जीन्दाळा कुआ	2343	27	23	53.30	76	14	55.25
67	डाबला की राड़ी का कुआ	2314	27	23	40.99	76	14	55.00
68	बन्धा वाला कुआ	2201	27	23	43.01	76	14	51.00
69	तँवरजी वाला कुआ–पुराना	2051	27	23	46.00	76	14	45.60
70	मोद्याळा कुआ	1967	27	23	50.89	76	14	41.75
71	मीणों वाली कोठी	1559	27	23	49.88	76	14	33.97
72	तँवरजी वाला कुआ–नया	1870	27	23	47.29	76	14	37.46
73	बटल वाळी कोठी	1746	27	23	44.02	76	14	34.01
74	भौंरा यादव का कुआ	1675	27	23	43.01	76	14	31.99
75	श्यामाळा कुआ	1592	27	24	44.02	76	14	29.00
76	ऊपली कोठी– आसण	1509	27	23	43.01	76	14	26.02
77	अहीरों की कोठी	1835	27	23	39.01	76	14	38.00
78	नवा कुआ	1635	27	23	35.02	76	14	30.01
79	पण्डाळी का कुआ– नया	1616	27	23	34.01	76	14	29.00
80	जीत्याळा कुआ	1497	27	23	26.02	76	14	22.99
81	माल्याळा कुआ	1888	27	23	24.00	76	14	30.01
82	नया कुआ– मूलचन्द	1748	27	23	19.00	76	14	30.01
83	चमाराळा कुआ	1705	27	23	11.00	76	14	24.00
84	माधू वाला कुआ	1681	27	23	01.00	76	14	13.99
85	बोर–नई कोठी–जम्मन	1863	27	23	07.01	76	14	28.00
86	बनड़ा वाळा कुआ	2305	27	22	57.22	76	14	39.59
87	दुढाणी का कुआ	2031	27	23	09.78	76	14	36.78
88	छींतर का कुआ	2026	27	23	13.70	76	14	38.40
89	सादरों वाला कुआ–बोर	2317	27	23	05.60	76	14	46.18
90	गणपत का कुआ–बोर	2407	27	23	05.03	76	14	49.45
91	डाबली का कुआ–सूखा	2535	27	23	03.98	76	14	53.63
92	सप्टा वाला कुआ	2629	27	23	06.54	76	14	59.03
93	खोटी वाला कुआ	2667	27	23	09.53	76	15	02.09
94	रास्ते के पास वाला कुआ	2755	27	23	11.15	76	15	06.08
95	डाबली का कुआ–पुराना	2368	27	23	08.88	76	14	49.92
96	डाबली का कुआ–नया	2288	27	23	13.09	76	14	48.84
97	रौंकड़ा वाला कुआ	2392	27	23	16.26	76	14	54.35
98	भूरया वाला कुआ	2623	27	23	16.51	76	15	02.81
99	राड़ी तळा का कुआ	2248	27	23	26.34	76	14	51.61
100	मंन्याळा कुआ	2434	27	23	40.99	76	15	02.02
101	स्वामियों का कुआ	2534	27	23	24.97	76	15	01.94
102	श्योराम का कुआ	2739	27	23	23.21	76	15	09.11

क्र. सं.	कुएँ का नाम	गुरु सागर से	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
		दूरी (मीटर में)	डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
103	सुल्तान का कुआ –बोर	2687	27	23	25.15	76	15	07.56
104	पँचूराम का कुआ–बोर	2755	27	23	24.90	76	15	10.08
105	बाबाजी की इनाम	2888	27	23	24.79	76	15	14.94
106	पीपली वाला कुआ–पुराना–बोर	2699	27	23	32.46	76	15	09.11
107	जोश्याळी का कुआ–बोर	2916	27	23	33.14	76	15	17.10
108	पीपली वाला कुआ–नया	2628	27	23	40.06	76	15	06.70
109	सोळंक्याळा कुआ	2478	27	23	40.99	76	15	02.02
110	कुरबड़ा का कुआ–बोर	2625	27	23	45.71	76	15	06.62
111	आमली वाळा नया कुआ	2992	27	23	51.79	76	15	19.40
112	श्योबख्श का कुआ–बोर	3010	27	23	49.67	76	15	20.16
113	नई खोर का कुआ	3097	27	23	49.78	76	15	23.44
114	मिश्रों वाला फूटा कुआ	3217	27	23	45.67	76	15	28.19
115	मिश्रों वाला नया कुआ	3190	27	23	43.91	76	15	27.11
116	नया कुआ–अम्मी,परत्या,बोद्या का	2975	27	23	42.32	76	15	19.51
117	बोद्या का कुआ–बोर	2959	27	23	41.71	76	15	18.97
118	जाटाळा कुआ–बोर	3181	27	23	39.41	76	15	27.04
119	खेड़ा वाला कुआ–बोर	3180	27	23	36.82	76	15	26.96
120	इमरती वाला कुआ	3440	27	23	36.89	76	15	36.4
121	डाबर वाला कुआ	3382	27	23	32.57	76	15	34.09
122	मींढा वाला कुआ	3608	27	23	30.95	76	15	42.19
123	सान्याळा कुआ–पुराना	3562	27	23	27.56	76	15	40.00
124	सान्याळा कुआ–नया	3400	27	23	26.92	76	15	34.06
125	खात्यों वाळा कुआ	3318	27	23	25.55	76	15	30.92
126	पुरोमों वाला कुआ	3184	27	23	30.66	76	15	26.71
127	ढेरड़ी वाला कुआ	3108	27	23	27.60	76	15	23.44
128	लक्खीकाळा कुआ	3202	27	23	22.31	76	15	25.99
129	नया कुआ–छींतर,कजोड़,सुरज्ञान का	3245	27	23	16.66	76	15	26.24
130	जम्मन वाळी कोठी	3406	27	23	16.84	76	15	32.44
131	बेरी वाला कुआ	3445	27	23	13.92	76	15	33.08
132	सूँडाळा कुआ	3416	27	23	10.86	76	15	31.25
133	तेलजी वाळा कुआ	3079	27	23	08.38	76	15	17.32
134	गुरकड़ी वाला कुआ	3068	27	23	05.64	76	15	16.02
135	दुढाणी वाला कुआ	3375	27	23	03.52	76	15	27.07
136	टीकड़ी वाला कुआ	3436	27	23	03.05	76	15	29.27
137	नवा कुआ–छींतर का	3442	27	23	00.20	76	15	28.33
138	कौंसला कुआ–नीचला	3235	27	22	57.50	76	15	18.83
139	कल्ल्या वाळा कुआ	3012	27	22	51.46	76	15	06.16
140	कौंसला कुआ–ऊपला	3289	27	22	51.53	76	15	17.93
141	आगला कुआ–ओंकार शर्मा का	3619	27	22	49.08	76	15	29.66
142	चन्द्री वाला कुआ–नया	3683	27	22	53.47	76	15	34.67
143	चन्द्री वाला कुआ–पुराना	3652	27	22	55.34	76	15	34.31
144	बखाल्या की कोठी	3786	27	22	56.32	76	15	39.85
145	नया कुआ–शम्भू,जयराम का	4020	27	22	45.05	76	15	39.38
146	गैंदा लाल का कुआ	3913	27	22	40.84	76	15	44.75
147	नया कुआ–गंगासहाय का	3897	27	22	39.65	76	15	35.06
148	नवी कोठी–उमराव,गंगा सागर	4096	27	22	40.87	76	15	36.25
149	नई कोठी– भगवान शर्मा	4020	27	22	50.20	76	15	46.19
150	नायाळी कुई	4405	27	22	44.65	76	15	05.98

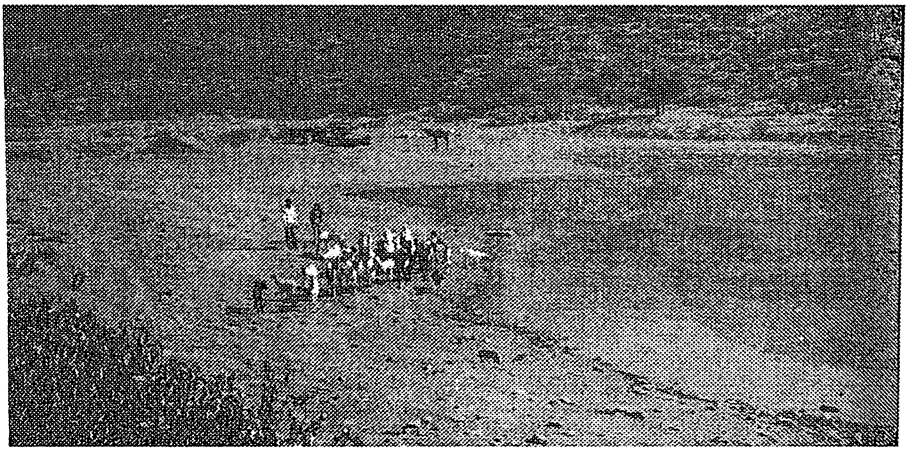

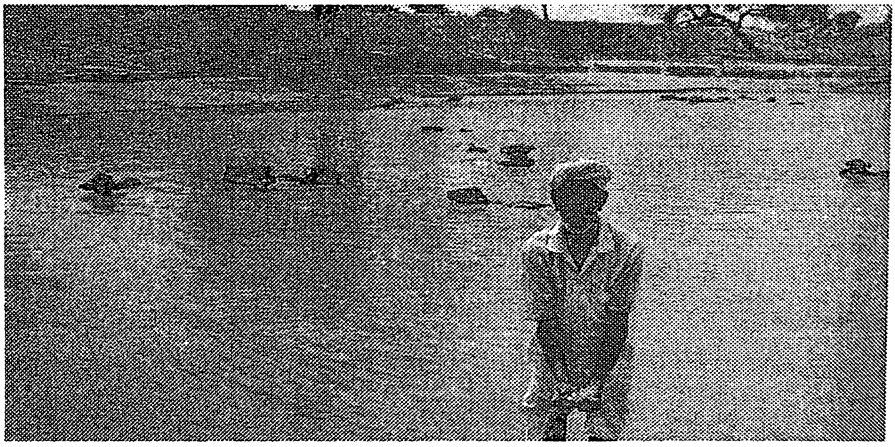

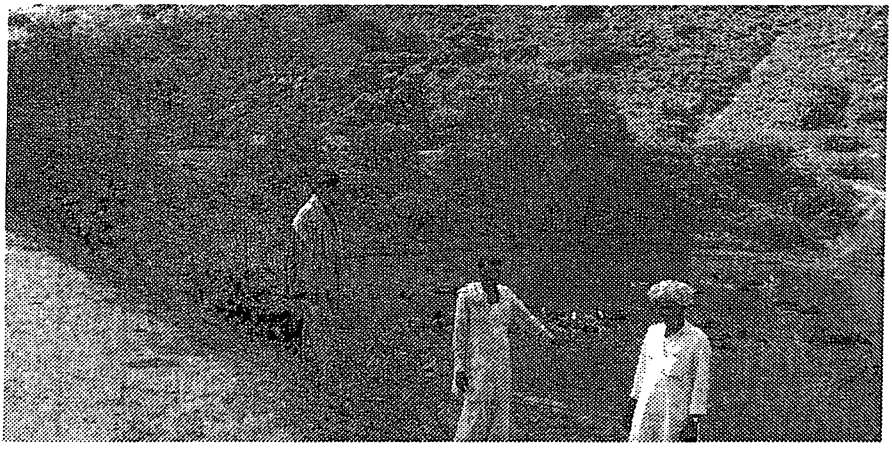

बूजा की 'बूज गंगा'

बूजा में कैसे आई 'बूज गंगा' ?

ग्राम गढ़बसई के अलावा साबी नदी जलागम क्षेत्र के जिन गाँवों में उल्लेखनीय काम हुए हैं, उनमें से एक महत्त्वपूर्ण गाँव है बूजा। जो महाभारतकालीन 'विराटनगर' से बिल्कुल सटा हुआ है। बूजा गाँव मुख्यतः गूजरों का गाँव है। वैसे यहाँ के एक पुराने मंदिर में एक ब्राह्मण पुजारी का परिवार भी रहता है। गुर्जर लोग मुख्यतः पशु–पालक होते हैं, लेकिन अब ये खेती के काम में भी ध्यान देने लगे हैं। पिछले कई सालों से इस क्षेत्र में लगातार कम होती जा रही वर्षा के कारण कुओं के जलस्तर में भारी कमी होती जा रही थी। इसी दौरान तरुण भारत संघ द्वारा छेड़े गये 'जल–संरक्षण अभियान' के अन्तर्गत संस्था के कार्यकर्ता श्री श्रवण गुर्जर इस क्षेत्र में आये। उन्होंने यहाँ के लोगों से सम्पर्क करके यहाँ के बारे में जानकारी हासिल की।

सबसे पहले उनका मिलाप यहाँ के गोपाल जी (रामगोपाल जी) गुर्जर से हुआ। बातचीत के दौरान यह बात सामने आई कि गोपाल जी के पास परिवार के पालन–पोषण हेतु खेती की जमीन तो पर्याप्त है, पर उनके खेत में स्थित कुआँ कई सालों से सूख चुका था। इसलिए फसल केवल वर्षा पर ही निर्भर रह गई थी। बरसात भी पहले के मुकाबले कम और अनियमित हो गई थी, इसलिए खेती से गुजारा करना बड़ा मुश्किल हो गया था।

गोपाल जी, पानी की कमी के कारण आये संकट से निपटने के लिए अपने खेतों में एक बाँध बनाना चाहते थे, पर बाँध में आने वाले पूरे खर्चे को वहन करने में वह सक्षम नहीं थे। चाहने के बावजूद विचार मन के मन में ही रह जाते थे। संस्था के कार्यकर्ता श्रवण गुर्जर से जब इनका मेलजोल हुआ तो उन्होंने उनके सामने भी अपने मन की पीड़ा रखी। श्रवण जी ने उन्हें बताया कि बरसात के पानी को रोकने के काम में तो हमारी संस्था भी मदद करती है, पर संस्था पूरा सहयोग नहीं कर सकती, बल्कि थोड़ा बहुत

सहयोग कर सकती है। उन्होंने गोपाल जी को बताया कि आप एक बार तरुण भारत संघ में जाकर भाई साहब से मिलकर बात करें, सम्भवतः आपकी समस्या कुछ हद तक दूर हो सके।

रामगोपाल गुर्जर एक दिन श्रवण गुर्जर के साथ तरुणाश्रम, भीकमपुरा में आये। उन्होंने भाई साहब राजेन्द्र सिंह से अपनी व्यथा–कथा सुनाई, और अपने खेत में बाँध बनाने के काम में सहयोग करने का आग्रह किया। भाई साहब ने कहा कि पहले हम साइट देखेंगे, उसके बाद सहयोग की बात करेंगे। यह कहकर उन्होंने मुझे बूजा में जाकर साइट देखने तथा गाँव की स्थिति देखकर आने को कहा।

मैं उनके साथ बूजा गाँव में चला गया, वहाँ लोगों से बातचीत की। बातचीत से निकलकर आया कि यहाँ पर पिछले कुछ सालों से पानी की बड़ी विकट समस्या है। अधिकतर कुओं का पानी सूख गया है। इसलिए यहाँ पर बरसात के पानी को रोककर कुछ जोहड़ बाँध बनाये जाएँ तो कुओं में फिर से पानी आ सकता है। मैं गोपाल जी के बाँध की साइट देखने के लिए उनके खेत पर गया। खेत के किनारे ही एक पुराना कुआँ था जो उस वक्त पूरी तरह से सूख चुका था, खेत का ढाल दक्षिण–पश्चिम से पूर्वोत्तर की तरफ था, जिसमें नाले का ढाल दक्षिण से उत्तर की तरफ था। खेत के निचले किनारे पर एक बाँध बनने लायक साइट थी। पर खेत का ढाल ज्यादा होने के कारण बाँध की अपरा कुछ ज्यादा ऊँची बनाने की जरूरत थी। साइट देखकर मैंने उन्हें पानी के काम में सहयोग करने का आश्वासन दिया और वापस तरुणाश्रम, भीकमपुरा आ गया।

एक–दो दिन बाद ही गोपाल गुर्जर भी श्रवण गुर्जर को साथ लेकर फिर आ गये। भाई साहब से बात हुई। भाई साहब ने मुझे बुलाकर उनके सामने ही साइट के बारे में टिप्पणी माँगी। मैंने बताया कि बाँध

कुछ ज्यादा ऊँचा बनाने पर ही पानी उनके खेत के ऊपरी भाग में पहुँच पायेगा। इसलिए पाल की ऊँचाई के साथ–साथ पाल की चौड़ाई बढ़ाने की भी जरूरत पड़ेगी, जिसमें खेत की काफी जगह रुकेगी। अपरा के लिए हमने खेत व पाल के पूर्व में नाले से एकदम ऊपर ऊँचाई में बनाने की बात सोची है। क्योंकि ऊँचाई में अपरा बनाने पर पक्के काम का खर्चा भी कम आयेगा और खतरा भी कम रहेगा। लेकिन पूरा बाँध मिट्टी का बनाकर अपरा को किनारे से निकालने की बात सुनकर खेत मालिक गोपाल गुर्जर इसके लिए तैयार नहीं हुए। उन्होंने कहा कि अपरा तो हम मुख्य नाले में ही बनाएँगे। क्योंकि नाले में मिट्टी की पाल टूट सकती है, और टूट जाने के बाद नीचे के लोगों के खेत की मिट्टी बहकर जा सकती है। हमने उन्हें नहीं टूटने का विश्वास दिलाया, पर वह नहीं माने। श्रवण गुर्जर ने भी उनकी बात से ही सहमत होते हुए बताया कि यदि नाले में पक्की अपरा नहीं बनाएँगे तो नीचे वाले लोग इस बाँध का काम नहीं होने देंगे।

अन्त में भाई साहब ने उनकी ही बात से सहमत होते हुए बताया कि जब खेत का मालिक ही लागत में बढ़ोतरी की सम्भावना होने के बावजूद नाले में ही अपरा बनाना चाहता है तो हमें भी उनकी बात मान लेनी चाहिए। सहयोग व अंशदान के लिए भाई साहब ने बताया कि इस काम में हम संस्था की तरफ से मिट्टी के काम में आधा खर्चा तथा पक्के काम में केवल सीमेंट देंगे। खेत मालिक ने सहयोग कुछ ज्यादा बढ़ाने के लिए बार–बार आग्रह किया, पर भाई साहब ने मना कर दिया। अन्त में भाई साहब की बात पर ही सहमति हो गई।

साइट का सर्वे करके लेवल लिया गया और बाँध की ऊँचाई, चौड़ाई, लम्बाई आदि का निर्धारण करके काम शुरू कर दिया गया। काम के दौरान ही बारिश भी आ गई, जिससे काम में रही कसर को पूरा करने में मदद ही मिली। बाँध का काम पूरा हो गया, किन्तु पहले वर्ष पानी कम भर पाया, लेकिन दूसरे वर्ष बाँध पानी से लबालब भर गया। इस भरे हुए पानी का असर केवल खेत मालिक के खेत में ही नहीं हुआ, बल्कि नीचे के खेत वालों को भी इसका लाभ स्पष्ट दिखाई दिया।

फिर तो नीचे के खेत वालों का भी मन अपने–अपने खेतों में काम करने का हुआ। साथ ही वहाँ के पुराने जोहड़ जो मिट्टी से भर चुके थे, उनमें भी काम करने का मन बना। फिर तो गोपाल गुर्जर के खेत के नीचे ही किशन गुर्जर ने भी ठीक उसी तरह का बाँध बनाने का निश्चय कर लिया, और गाँव के सार्वजनिक जोहड़ों में काम के लिए भी गाँव के लोग स्वयं तैयार होने लगे। लोगों ने तरुणाश्रम में आकर भाई साहब से बातचीत की। उन्होंने निजी कामों में आधा तथा सार्वजनिक कामों में तीन–चौथाई

सहयोग देने की बात कही। लोग बातचीत करके अपने गाँव में वापस आये और बड़े ही उत्साह के साथ काम शुरू कर दिया। काम पूरा होने के बाद अगले ही साल जब इन सब जोहड़–तालाबों में पानी भरा, तो नीचे के सभी कुओं में पानी हो गया। इन सब कामों को देखकर रामसहाय गुर्जर ने भी गाँव के पास ही अपने खेतों में एक बाँध

बनाया। बाँध बन कर पूरा भर जाने पर उसका लाभ उसे उसी साल की बरसात के बाद से मिलना शुरू हो गया। फसल बहुत अच्छी हुई।

इस गाँव में सबसे ज्यादा लाभ गोपाल गुर्जर व किशन गुर्जर के बाँधों से हुआ। इनके बाँधों में पानी तो खूब रुकता था, पर खेत ज्यादा न दबे, इसलिए इन्होंने पाल की नीचे की चौड़ाई कम ही रखी थी, जो कि खतरे का काम था। सम्भावित खतरे को देखते हुए पाल की चौड़ाई बढ़ाना जरूरी हो गया था। जब इनको यह बात बताई गई तो इन्होंने मिट्टी की पाल की चौड़ाई बढ़ाने के बजाय पाल के बाहर नीचे की तरफ पूरी लम्बाई में एक पक्की दीवार लगाने की बात कही। हमने उन्हें बताया कि मिट्टी की दीवार के सहारे पक्की दीवार खड़ी करने पर मिट्टी का पूरा दबाव दीवार पर आ जाता है, जिससे पाल का टूटने का खतरा रहता है। पर वे लोग दीवार बनाने की जिद करते रहे। अन्ततः भाई साहब ने यहाँ भी उनकी ही बात मानी। दीवार बना दी गई। और मना करने के बावजूद उन्होंने एक नादानी और की; दीवार में होल (छिद्र) भी

नहीं छोड़े और ऊपर से दीवार का प्लास्तर भी कर दिया। जिससे दीवार के टूटने का खतरा और भी ज्यादा बढ़ गया।

इन कामों को देखने एक बार भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी के साथ श्री जी.डी. अग्रवाल साहब भी गये थे। गोपाल गुर्जर व किशन गुर्जर के बाँधों की पाल के बाहर लगी

प्लास्तर युक्त दीवार को देखकर अग्रवाल साहब मन में तो बहुत नाराज हुए होंगे, पर प्रकट में उन्होंने व्यंगात्मक रूप से सहज विनोद में कहा कि किसी के पास यदि कैमरा हो तो इन सुन्दर दीवारों का फोटो तुरन्त ले लो। यह पूछने पर कि तुरन्त क्यों ? तब उन्होंने कहा, क्योंकि बरसात के बाद ये दीवारें इस रूप में देखने को नहीं मिलेंगी। उनके इस व्यंगात्मक विनोद में भी कितनी बड़ी सीख थी। और वास्तव में अगली बरसात के बाद उन दीवारों में दरार पड़ ही गई। खैर ! बाद में तो खेत मालिकों ने भी अपनी गलती स्वीकारी और पाल को और मजबूत कर लिया।

बूजा गाँव के इन सभी कामों के कारण एक जादू–सा हो गया। अर्थात् एक मुद्दत के बाद इस नाले में से एक ''बारहमासी'' झरना बहने लग गया। यह झरना गंगा के उद्गम से बहने वाले झरने की याद दिलाने लगता है। इसे देखने के लिए उन्हीं दिनों एक बार बिहार के एक युवा कवि व लेखक 'अविनाश' वहाँ गये थे। वह बूजा के नाले से निकली इस गंगा को देखकर दंग रह गये। क्योंकि राजस्थान में किसी सदानीरा

झरने को देखना एक बड़ी ही बात थी। उन्हें लगा कि बूजा से निकलकर एक गंगा अपने गन्तव्य को जा रही है। वह उत्साह से फूले न समाये। फिर जब उन्होंने गाँव के लोगों से पूछा कि क्या यह झरना पहले भी कभी बहा है ? तब किसी एक बुजुर्ग ने बताया कि बहुत पहले जब अच्छी बारिश होती थी और पानी का दोहन भी ज्यादा नहीं होता था, तब यह झरना अनवरत बहता था। फिर समय ने पलटा खाया, अकाल पड़ने लगे और पिछले बीस–पच्चीस साल से तो यह नाला बिल्कुल ही सूख गया था। अब संस्था के द्वारा पानी के काम होने के बाद ही यह पुनः बहने लगा है। पहले जब यह झरना अनवरत बहता था, तब उस अखण्ड झरने को लोग 'बूज–गंगा' के नाम से जानते थे।

यह सुनकर अविनाश के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। क्योंकि उसने भी अपने मन में इस झरने का नाम 'बूज–गंगा' ही सोचा था। अजब संयोग था। जो नाम लोग पहले बोलते थे वही नाम आज भी रखने की बात मन में आई। अविनाश ने शीघ्र ही 'बूज–गंगा' पर एक पुस्तिका लिख डाली।

'अविनाश'

बूजा : समृद्धि का सफरनामा

बूज गंगा

दियारे शर्क की आबादियों के ऊँचे टीले से

नदी की धारा आदमी की प्यास से तब कोस भर दूर थी।
खेत की माप आदमी की भूख से तब बित्ता भर छेटी थी।।
हवा तब भी थी, पहाड़ तब भी थे, स्त्रियाँ तब भी थीं।
बकरियाँ थीं जो डूँगर के पार जाकर पत्तियाँ खा आतीं।
रामभजन था गोधूलि के दर्द की दवा
हँसना था सहस्र दुःखों के लिए जहन्नुम
मशाल जलाने का इल्म आज भी हुक्के की गुड़गड़ी के साथ
उबालते हैं बूजा के लोग।
बूजा एक गाँव है जहाँ पानी के सम्मान में संगठन रचा जाता है।
बूजा एक गाँव है जहाँ मृत्यु के सम्मान में जीवन रचा जाता है।

बहुत छोटे थे, तो माँ के साथ सिमरिया घाट जाना हुआ था। सिमरिया घाट मिथिला में पड़ने वाला गंगा का किनारा है। तब न तो गंगा की कथाएँ सुनी थीं, न गंगा के गीत। कलकल निनाद करती पानी की धारा से परिचय इतना भर था कि गाँव की बगल से बागमती की एक पतली धारा गुजरती। हम तो उसमें बचपन की हेठियों के साथ छपछुप करते आवारा की तरह नहाते, पर चचाजान की उम्र के लोगों के मन में सम्मान था, उसके प्रति। वे साथ में ले गये लोटा से बागमती का जल सिर पर ढारते और गाल बजाते कहते, 'हर हर गंगे।' गंगा को बस इतना सा ही जानते थे। सो गंगा की वह पहली यात्रा अकारथ ही गई।

बाद में पटना आते–जाते गांधी सेतु से गंगा को जी भर कर देखा। समंदर का भ्रम देने वाली गंगा की उस विशालता ने दिल में गहरे असर किया। संयोग था कि इस दशक के आरम्भ में गंगा मुक्ति आंदोलन के कुछ साथियों से जुड़ने का अवसर मिला। हालांकि तब वह आंदोलन स्थिर-सा था, लेकिन अनिल प्रकाश और सफ़दर इमाम कादरी ने गंगा के सवाल से मुझे वैचारिक रूप से जोड़ा। तब पहली बार गंगा मुझे सुबह के उस गीत की तरह लगी, जो फैक्टरी के शहरी मजदूरों और गँवई किसानों के भोरुकवा में 'पराती' बनकर आता है। सुनते थे गंगा के किनारे सुख उतना ही है, जितना माँ के आँचल की स्नेहिल छाया में ओट पाकर। बाबा विद्यापति के तो आँख से आँसू बहने लगे, जब उनसे गंगा का किनारा छूटा..... **बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छोड़इत निकट नयन बह नीरे.....**

भौतिक रूप से सलीकेदार महानगरीय जीवन के लोभ ने मुझे भी गंगा से दूर कर दिया। विधि का विधान कि दिल्ली में थोड़े ही दिन हुए थे, एक मित्र ने राजस्थान के गाँवों में 'टहलान मारने' का प्रबंध कर दिया। आ तो गये, लेकिन याद आती रही गंगा। सुकून और आत्मीयता के लिहाज से असहज, बेमानी और धूल धूसर दिल्ली में गंगा को भूलना कहीं ज्यादा आसान था, क्योंकि वहाँ खुद के वजूद भी अहमियत नहीं रखते। यहाँ पहाड़ तो थे, गंगा नहीं थी। पानी तो था, गंगा नहीं थी।

सितंबर 1997 की 20 तारीख को जयपुर जिले के विराटनगर तहसील में पड़ने वाले बूजा गाँव पहुँचे। दोपहर का वक्त था। थोड़ी देर तो गाँव को समझने में ही लगा।

साँझ हुई तो गाँव में ही इधर–उधर लोगों से बातचीत करने निकल गये। एक जगह बहुत पुराना बरगद का एक विशाल पेड़ था। पहाड़ से लौटती कुछ भेड़–बकरियाँ इसके नीचे तक आकर रुक गई थी। बच्चे बीन रहे थे अपनी–अपनी गोटियाँ, जिसे उन्होंने अभी–अभी किसी खेल में इस्तेमाल किया था। अचानक वहाँ नजर गई, जहाँ निर्मल जल की एक चमकीली सी धारा चुपके–चुपके बह रही थी। विस्फारित आँखों की स्तब्धता परख एक ग्रामीण ने बताया कि यह 'बूज गंगा' है। मुँह से अनायस निकला, 'हे हर हर गंगे' तूने मेरी दुःखती हुई रग आखिर पकड़ ही ली।

यह है बूजा गाँव, और बूजा में बहती हुई यह नन्ही सी धारा 'बूज गंगा'। उस गंगा से इसके लेन–देन की कोई तथ्यात्मक जानकारी तो हासिल नहीं हुई, लेकिन 75 साल के भगवान सहाय गुर्जर कहते हैं कि ''बचपन से ही इसे हम 'बूज गंगा' के नाम से जानते हैं।'' जब तक यह बहती रही, हम गाँव में रहे। सूख गई, तो चले गये मराठों के देश में पल्लेदारी करने। भगवान सहाय को अब बहुत कम सूझता है। आँखें पास के आदमी तक को पहचानने से इनकार कर देती हैं। कमर आधी झुकाये लाठी टेक कर चलते हैं, तो उनकी बेशुमार बुजुर्गियत का एहसास होता है।

बूजा का घना जंगल था और शेर जैसे जानवर विचरते थे उसमें। यह पचास साल पहले की बात है। बूज गंगा उन्हीं जंगलों से होकर आती थी। जब तक बहती थी, तो शेर का रुख गाँव की तरफ नहीं होता था। सूखी तो एकाध शेर पानी की खोज में गाँव तक आ जाता था। हालाँकि आदमी का नुकसान नहीं हुआ, लेकिन डर का पदार्पण हो गया। भगवान सहाय बताते हैं, पिता इसी डर से बाहर ले गये कि गाँव के जानवर खा जाएँगे। उनके पास शहरी दिमाग़ था, क्योंकि वे शहर में बहुत दिनों से काम करते थे। हमारे लिए वह शहर अनजाना था। वह भाषा अनजानी थी। वह पानी अनजाना था। लौट के आ गये, लेकिन तब तक बूज गंगा सूखी ही पड़ी हुई थी। वर्षों तक सूखी रही बूज गंगा।

बरसात होती, पानी आता, और चंद मिनटों में ही गायब हो जाता था। पहाड़ भी नंगे होते गये। वे पहाड़ जिसकी हरीतिमा दूर से ही सूरज की ताप कम करती नजर आती।

बचे हुए ठूँठ आँखों में चुभते। धोंख का काँटा ही उगता उन नंगे पहाड़ों पर, जो सूखी और बंजर पड़ी जमीन पर भी आसानी से उग आता है। अब तो न पानी, न पेड़। लोग निकल–निकलकर जाने लगे परदेस। मजदूर और पल्लेदार बनकर रहने लगे दिल्ली, पंजाब और गुजरात जैसे अन्य–अन्य प्रदेशों में। बचे हुए लोग पानी के अभाव में पानी का गीत गाकर संतोष करते। स्त्रियाँ सुदूर से माथे पर पानी उठाकर लातीं। अजीब है कि देश के कुछ प्रांतों में जहाँ आदमी पानी से भागता फिरता है, राजस्थान के इन इलाकों में पानी लोगों से भागा फिरता है।

जब स्थिति असह्य हो गई, तो बूजा के लोगों ने दुहराया अपना प्राचीन हुनर। बनाया जोहड़, बनाया बाँध। थोड़ी मदद की पानी की पारम्परिक संचय प्रणाली पर काम करने वाली संस्था तरुण भारत संघ ने। बूज गंगा बह चली फिर से। ऐसी कि बारहों मास हहराने लगी। हम आज की इस 'बूज गंगा' को देर तक निहारते रहे। वहीं उसकी धारा के पास बकरी ने दो बच्चे जने। हमारे लिए तो यह बेइंतहा खुशी का पल था। फिर थोड़ी देर के लिए हम चढ़े दियारे शर्क की आबादियों के ऊँचे टीले पर। यानी बूजा के पहाड़ पर। वहाँ से एक चमचमाती रस्सी की तरह नजर आती थी 'बूज गंगा'।

आगन्तुक पानी के आने से सजल हुए कुएँ

ऐसे ही नहीं होता बंजर जमीन पर सपनों का रचाव
ऐसे ही नहीं आती साँसों में फूलों की गंध
ऐसे ही पाँव तक पूरा नहीं हो जाता चादर का फैलाव
किवाड़ पर दस्तक देने वाले आगुंतक के चेहरे पर नहीं भी हो सकती है हँसी
ऐसे ही नहीं होती हँसने की सृष्टि

जमीन कोरने पर शायद ही मिले उर्वर मिट्टी की दुनिया
ग्रंथ खोलने पर शायद ही स्पष्ट हो गीता का रहस्य
खूब जोर से प्यार कहने के लिए शायद ही मिले कोई खुली जगह
जहाँ पंछी तक संगीनों के साये में उड़ रहे हैं
वहाँ बूजा चमत्कार है जहाँ पहर–दोपहर खिलखिलाती है धूप
खिलखिलाता है बरगद
वहाँ बूजा चमत्कार है जहाँ सुबह–शाम
प्रकृति की सबसे चकित कर देने वाली धुन पर
खुशी के गीत गाये जाते हैं।

अब तो खेती पर भी जीवन का चक्र टिक गया है। पानी नहीं था, तो बकरियाँ पालते थे बूजा के लोग। बकरियाँ पहाड़ों पर आसानी से चढ़ती हैं और जल्दी हारती भी नहीं। कुछ गायें, कुछ भेड़ साथ ही कुछ ऊँटों के सहारे ही तय हो रहा था इस गाँव का सफर। गोपाल गुर्जर ने इस सफर का आयाम थोड़ा बड़ा किया। मशक्कतें कितनी आईं, यह चीन में कम्युनिस्ट आंदोलन के शिखर पुरुष रहे एवं विश्वविख्यात लेखक लुशून की एक कहानी 'बूढ़ा और पहाड़' से साफ होगा।

पहाड़ों से ढका एक गाँव था। सूरज की रोशनी उस गाँव को मयस्सर नहीं होती थी। इसी वजह से लोग पीले होते थे, और अन्य कई तरह की बीमारियों के शिकार। गाँव में एक बूढ़ा था। अचानक एक दिन उसने फावड़े उठाये और लगा पहाड़ पर मारने। यह सिलसिला उसने जारी रखा। वहाँ से जो भी गुजरता, बूढ़े के इस कृत्य पर थोड़ी देर हँसता और चल देता। किसी के पूछने पर बूढ़ा बता देता कि मैं पहाड़ तोड़ रहा हूँ। कई महीने गुजर गये, तो एक जवान से रहा नहीं गया। उसने बूढ़े से पूछ ही डाला कि बाबा तुम्हें विश्वास है कि तुम पहाड़ तोड़ डालोगे ? बूढ़े ने जवाब दिया कि विश्वास हो न हो बेटा, लेकिन पहाड़ को तोड़ने का क्रम मैंने शुरू कर दिया है। पहाड़ टूट भी रहा है। मेरे जीते जी पूरा पहाड़ न भी टूटे पर अगर आने वाली पीढ़ियाँ इस काम को जारी रखेंगी, तो सैकड़ों वर्ष बाद भी कभी न कभी तो यह पहाड़ टूटेगा। जवान इस बात से प्रभावित हुआ और वह भी पहाड़ तोड़ने के काम में जुट गया। इस तरह कई हाथ लगे इस काम में और हँसने वालों की शिकस्त हुई। पहाड़ टूट गया। सूरज की रोशनी ने अपने सुनहले कदम लुशून की कहानी के इस गाँव में रखे।

गोपाल गुर्जर ने भी जब बूजा में पानी के लिए पहाड़ बनाने की बात शुरू की, तो लोग हँसे। पर लोगों को जल्दी ही यह एहसास हो गया कि पानी के लिए पहाड़ बनाना परम्परा का निषेध नहीं है, बल्कि यह तो पारम्परिक 'सुराज' के हुनर की बात है। नंगी पहाड़ियों का तीखा दर्द और प्यास की गहरी आह ने लोगों के दिल में जीने की आग को ठंडा कर दिया था। परम्परा की खोह से मिली इस पते की बात से सूखी आँखें तक सजल हो गईं। सबने साथ दिया गोपाल गुर्जर का। देखते ही देखते पहाड़ से बहकर आने वाले पानी को रोकने के लिए पहाड़ खड़ा हो गया।

बूजा में पानी के लिए 1994 में शुरू हुआ गोपाल गुर्जर का यह विभूति प्रयास। लोगों ने साथ दिया और ऊपर से नीचे तक पहाड़ बनाये गये। मिट्टी के पहाड़। लोग दूरदराज से मिट्टी ला लाकर उसे एक जगह पर बाँधते हैं, इसीलिए कहते हैं बाँध। ये बाँध बने तो पानी की बहार आ गई। झर झर झर झर झरने बहने लगे। सूखे कुएँ तो पहले ही वर्ष में आगन्तुक पानी के आतिथ्य से धन्य हो गये। अब तो बेकार मानी जाने वाली बंजर जमीन में गेहूँ की फसल होने लगी है। पलायन तो जड़ मूल से समाप्त हो ही गया। लोग बताते हैं, ''इस वर्ष हमारे खेतों ने ढाई सौ मन अनाज पैदा किये हैं। पहले मवेशियों की हड्डियाँ चमड़ी उधेड़कर बाहर आने के लिए तैयार रहती थीं। इस वर्ष उनके लिए इतना चारा हुआ कि साल भर तक भर पेट खायें, तो भी कम न पड़े।''

आज से पचास साल पहले का बूजा का अतीत ऐसा ही सुखद था। बुद्धि और विवेक के मामले में भले ही अंधेर नगरी चौपट राजा वाला हाल नहीं था, उत्पादन और मूल्य के स्तर पर 'टके सेर भाजी और टके सेर खाजा' वाली स्थिति जरूर थी। पानी और पहाड़ का जीवन ऐसा बिल्कुल नहीं था कि अखरता। अखरती थी तो गुलामी। गुलामी की बेड़ियों का विष पानी और पहाड़ में घुला था। इसीलिए प्यास बुझते हुए भी बरकरार थी। पहाड़ का पेड़ों से ढके होना भी नंगे होने की तरह था। अत्यधिक सुखदायी था गुलामी के दौ सौ वर्षों से भी पहले का अतीत। तब अन्न उत्पादन के मामले में बूजा की बादशाहत थी। आज बूजा के लोग फिर उसी तरह अन्न उत्पादक बन गये हैं। तभी तो गोपाल गुर्जर ने अपने पूरे परिवार को बाँध बनाने में लगा दिया। लगभग सत्तर हजार रुपये का व्यक्तिगत शरीर श्रम गोपाल के परिवार ने किया। यह गोपाल के परिवार की बूजा के विकास के लिए महती भूमिका थी।

सत्तर हजार रुपये का शरीर श्रम कम नहीं होता है। अर्थ की मायानगरी में फूटी कौड़ी के साथ प्रवेश करने पर भी हर्षद मेहता बनने की गुंजाइश होती है। दलाली का गुर हो, तो सत्तर हजार को सत्तर अरब बनाने में महीने भर भी नहीं लगते हैं। यहाँ सत्तर हजार का परिणाम धीरे–धीरे सामने आने वाला था। लेकिन संतोष की लकीर अर्थ की माया से अधिक पोख्ता होती है। नहीं तो आम जनता को हो रहे कष्ट और करदाताओं के पैसे की धज्जियाँ नमकहराम नौकरशाह और राजनेता कैसे उड़ाते हैं, गोपाल गुर्जर को कहाँ पता है ?

लगभग इतनी ही रकम की सामग्री बाँध बनाने के लिए गोपाल गुर्जर को तरुण भारत संघ ने दी और बाँध बनकर तैयार हो गया। इससे 89 हजार पाँच सौ 90 घनफुट तो पक्का कार्य हुआ है। इसकी भराव क्षमता 75x10′ है। कितना भव्य लगता है देखने में यह बाँध..... यहाँ से वहाँ तक आकड़े के पत्तों से ढका है यह बाँध। बाँध की पहाड़ की तरफ वाली जड़ में रुका हुआ पानी और पानी के ठीक बीचों–बीच रोंझ का पेड़। गोपाल गुर्जर के इस बाँध को छींतराँवाला बाँध के नाम से भी जानते हैं।

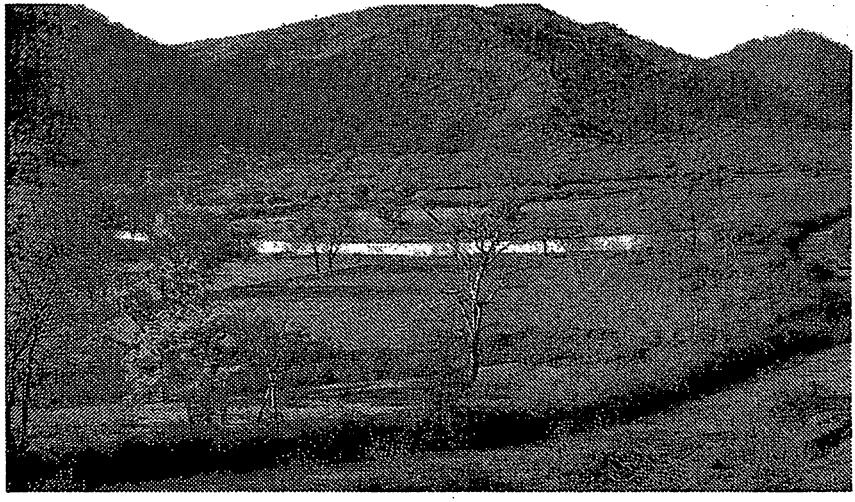

छींतराँवाला बाँध के बनने से निराशा की चादर हटी। अकाल और सूखे के अभिशाप को समूल नष्ट कर देने के संकल्प के तहत गोपाल गुर्जर के साथ मिलकर पूरे गाँव वाले अन्य विकासोन्मुख कार्य में भी लग गये। गाँव वालों ने मिलकर बनाया रामतलाई का जोहड़। 1995 में सामलाती जमीन पर बने इस जोहड़ में गाँव वालों ने 25 प्रतिशत श्रमदान किया, बाकी 75 प्रतिशत की जुगाड़ तरुण भारत संघ ने की। इस जगह पर पहले बहुत पुराना जोहड़ था। आजादी के दो तीन दशक बाद तक इस जोहड़ में पानी ठहरता था। फिर यहाँ मिट्टी भर गई और पानी के ठहरने की कोई

सूरत नहीं बची। दशकों तक गाँव वाले इस मुग़ालते में रहे कि रामतलाई के जोहड़ को सरकार पुनर्जीवित कर देगी। लेकिन सरकार ने बूजा के लोगों की आशा की कनात पलट दी, एक जोहड़ तक नहीं बनाया। सरकार तो नितान्त वैयक्तिकता के साथ आजादी के इन पचास वर्षों में अर्थनीति से लेकर समाज और प्रकृति नीति बनाने में लगी रही।

रामतलाई का जोहड़ बना, तो किशन लाल गुर्जर और रामसहाय गुर्जर का एनीकट भी बना। नई तलाई और पीली तलाई तो बनाई ही गई, साथ ही जंगलात वालों पर दबाव

डालकर गाँव वालों ने तीन क्लोजर भी बनवाये। इस तरह ग्रामीणों ने अपने अन्दर की हरियाली से गाँव की हरियाली में जान फूँकी। इस तरह गाँव में फिर से वह हवा बह चली, जिस हवा में संत्रास को मार गिराने वाली संजीवनी घुली होती है।

आज हमारी पचास साल की आजादी का वजूद यह है कि हम आजादी की दूसरी लड़ाई छेड़ने का आह्वान कर रहे हैं। बूजा ने एक तरह से पूरे देश को यह बताया है कि

आजादी अगर सही मायने में हो, तो कितनी हरी–भरी हो सकती है। बूजा ने अपने सामलाती संसाधनों की बेहद मर्मस्पर्शी सुरक्षा की है। बूजा के पहाड़ की हरीतिमा एक सपने की तरह लगती है।

हरियाली सिर्फ पहाड़ों पर नहीं है। बूजा की जीवनचर्या और संस्कृति में भी जन्मनी शुरू हुई है नई तरह की हरियाली। बूजा में निर्मल जलधारा का ही ठहराव नहीं हुआ है, वैज्ञानिक विचारधारा ने भी बूजा में अपना पड़ाव डाला है। अभाव के साथ खत्म हो रही है रूढ़ि और जड़ता। कितना सुकूनकारी है कि बूजा में बाल विवाह और नुक्ता प्रथा लगभग बन्द हो गई है। आपसी विवाद अब गाँव से बाहर विस्तार नहीं पाता। गाँव वाले संकल्पित हैं कि पुनः पानी व जंगल का संकट बूजा में नहीं होने देंगे।

पानी और जंगल के अभाव में बूजा के लोग नराधम नहीं हुए। उन्होंने रचा और चन्द दिनों में प्यासे गाँव को गोकुल बना डाला।

एक–एक चेहरे पर बदलाव की खुशी

संगठन में शक्ति है : डालूराम गुर्जर, उम्र 35 साल (1997 में)

पहले बूजा में एक ठाकुर हुआ करते थे छाजू सिंह। विपत्तियों की पिटारी थे। हर वक्त जिरहबाजी करना उनका शग़ल था। चूंकि धन्ना सेठ थे, इसीलिए छाजू सिंह का जोर चल भी जाता था। गाँव के पुराने कुएँ अपने आधिपत्य में उन्होंने रखे थे। लोगों को कुओं से पानी न लेने देना उनकी आदत थी। जो लेता, उस पर जुल्म करते। छाजू सिंह मवेशियों को सामलाती जमीन पर भी नहीं चरने देते थे। कुल मिलाकर उनके जुल्म से बूजा के लोग तंग आ चुके थे। अन्त में मिल बैठकर ग्रामीणों ने संगठन बनाया और लट्ठ बजाकर ठाकुर छाजू सिंह के पीछे पड़ गये। अन्ततः ठाकुर को गाँव से बाहर निकाल उनकी कोठरी पर गाँव वालों ने कब्जा कर लिया। वह कोठरी बूजा में आज भी मौजूद है।

बूजा के विषय में यह कहानी बताई हमें डालूराम गुर्जर ने। 35 साल के डालूराम गुर्जर वार्डपंच भी हैं। राजनीति की चिरपरिचित चालों से अच्छी तरह वाकिफ हैं और संगठन

की शक्ति में विश्वास रखते हैं। कहते हैं कि पहले तो हममें बिल्कुल ही समझदारी नहीं थी। एकदम दिमाग़ नहीं था। यही कारण था कि परदेस जाकर पल्लेदारी जैसा काम हम करते थे। लेकिन जब चेतना आई, तो अपना अच्छा–बुरा सब समझने लगे।

कैसे आई चेतना ? बताते हैं डालूराम। पहले यह गाँव पंचायत क्षेत्र में था। अब नगरपालिका क्षेत्र में है। इस नाते आई चेतना। यह मनोविज्ञान है कि स्वतंत्रता और सत्ता अपने साथ उत्तरदायित्व भी लाती है। डालूराम ने यह भी बताया कि एक दिन श्रवण लाल गुर्जर 'डोलते–डोलते' यहाँ आये। श्रवण लाल गुर्जर तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता हैं। उनके इस प्रश्न का हमारे पास कोई जवाब नहीं था कि तुम्हारे यहाँ पैदा क्यों नहीं होता है ? डालूराम गुर्जर ने बताया कि इससे पहले हमने कभी नहीं सोचा कि पैदा यानी उपज के लिए हम क्या उपाय कर सकते हैं ? पानी के प्रबन्ध के लिए क्या करना होगा ? इन परिस्थितियों में श्रवण लाल गुर्जर ने हमारी मदद की।

डालूराम बताते हैं कि पहले हमारे यहाँ साक्षरता का प्रतिशत बिल्कुल शून्य था। अब तो आधे से ज्यादा लोग साक्षर हैं। इस तरह शिक्षा जागरण भी बूजा में हुआ। पहले स्कूल के नाम पर टटघर था, जहाँ परिन्दा तक पर मारने नहीं जाता था। अब अधिकांश बच्चे स्कूल जाकर अक्षर के साथ नीति और बोध की पढ़ाई भी कर रहे हैं।

काश ये बाँध दस–बीस साल पहले बने होते :
गोपाल गुर्जर, 45 साल (1997 में)

गोपाल गुर्जर बता रहे हैं। पास में बैठे हैं ऋषपाल गुर्जर और रामजीलाल गुर्जर। काश, गाँव में ये बाँध दस–बीस साल पहले बने होते, तो गाँव का नक्शा ही कुछ और होता। और इस तरह गोपाल गुर्जर की आँखों में भविष्य के नक्शे की रेखाएँ उभर आती हैं। कहते हैं कि चमत्कार तो यह है कि तीन साल पहले जो अनाज की पैदावार होती थी, अब उसमें दूना अनाज पैदा होने लगा है। बूजा के लोग पहले

गाय, बकरी, भैंस, ऊँट आदि से ही गुजर बसर करते थे, अब तो खेती भी जीवन के अविभाज्य अंग की तरह हो रही है।

गोपाल गुर्जर के पास सात खेत हैं। 11 बीघा पक्की जमीन, कच्ची 22 बीघा। कुएँ की जमीन थी तीन बीघा। इस जमीन में भी कुछ हो जाता था, तो शुकर मानते थे गोपाल गुर्जर। बाकी 'बारानी' जमीनें थीं। बारानी, जिसमें कुआँ नहीं था। वन लगाने से पहले ये सारी जमीनें बंजर पड़ी रहती थीं। कोई मामूली बाजरा–वाजरा कभी–कभार हो जाता था। बस, इतने भर के लिए ही थीं ये जमीनें। गोपाल गुर्जर ये बताते हैं, तो उनकी आँखों के आगे अतीत रेंग जाता है, जो जाहिर है कि बहुत सुखद नहीं था। बाँध बना। उसके बाद ही कुओं में पानी बढ़ा। ये कुएँ सोलह साल पहले बने थे। कुओं की गहराई पचास हाथ की है।

अब पानी कुओं में बीस हाथ नीचे है। चना, सरसों, जौ, गेहूँ आदि की खेती होने लगी है। यह सब देखकर गोपाल गुर्जर को कैसा लग रहा है ? कितनी खुशी हो रही है ? गोपाल गुर्जर निश्छल तरीके से एक बार खिलखिलाते हैं। दरअसल बदलाव की खुशी अद्‌भुत रूप से संतोषकारी होती है। इसको बताया नहीं जा सकता। गोपाल इतना भर बताते हैं ''पहले अनाज बहुत कम होता था, अब बहुत ज्यादा होता है।'' पहले की सारी परेशानियाँ अब दूर हो गई हैं। तो हम तो पूरा खुश हैं भाई।

गोपाल गुर्जर बार–बार पहले की बात बताते हैं। लेकिन जिक्र छेड़ने के जैसा नहीं, यूँ ही। पहले फसल बोते, पर सारी मेहनत बेकार जाती। फागुन का महीना आते–आते फसल सूख जाती। इसीलिए लोग बाहर चले जाते थे कमाने। अब बाहर जाने की नौबत तो नहीं है कम से कम।

शिक्षित होंगे, तभी विकास होगा : राम सिंह, स्कूली छात्र

रामसिंह गुर्जर दसवीं के छात्र हैं। रोज विराट नगर के हाई स्कूल में पढ़ने जाते हैं। सवाल–जवाब में होशियार हैं, इसीलिए तो पूछने पर कहते हैं जंगल को बचाना अत्यन्त ही आवश्यक है। नहीं तो पशुओं के लिए बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी। पशुओं

के द्वारा हमें भोजन प्राप्त होता है। राम सिंह बताते हैं कि हमारे यहाँ खेती कम की जाती है, पशुपालन ज्यादा होता है। बकरी, भेड़, भैंस, गाय, ऊँट पालते हैं हम। गाँव में छह–सात ऊँट हैं। ऊँट हल जोतने के काम भी आता है और खेतों से घर सामान लाने ले जाने के काम में भी आता है।

राम सिंह बताते हैं कि गाँव के बहुत कम लड़के शिक्षित हैं। ज्यादातर अनपढ़ हैं। शिक्षा के प्रति यहाँ के लोगों की कम रुचि है। क्योंकि पहले से लोग यहाँ खेती करते आ रहे हैं। पुरानी तकनीक से। इसीलिए यहाँ के लोगों को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा मिलेगी, तभी गाँव के विकास के बारे में सोचने का उनको मौका मिलेगा।

राम सिंह शिक्षा न मिल पाने का एक कारण यह भी बताते हैं कि बाँधों से पहले बूजा में पानी की बहुत कमी थी। कुओं में पानी कम था। लोग दिन–रात कुओं पर लगे रहते थे, इसीलिए शिक्षा हासिल नहीं कर पाये। राम सिंह अपनी रुचियाँ गाँव के विकास और शिक्षा तक सीमित करना चाहते हैं।

हमें तो सात जनम का पुण्य मिला : किशन लाल गुर्जर

किशन लाल गुर्जर ने भी अपने खेतों में पानी रोकने के लिए बाँध बनवाया है। इनके बाँध से सिर्फ ये ही लाभान्वित नहीं हुए, पूरा का पूरा गाँव लाभ में रहा। किशन लाल कहते हैं ''हमें तो सात जनम का पुण्य मिल गया।'' इस बाँध से गाँव के कई कुओं का जलस्तर बढ़ गया है। किशन लाल गुर्जर के बाँध को नीचला बाँध के नाम से भी जानते हैं।

किशन लाल गुर्जर के भाई रामकरण गुर्जर बताते हैं कि हमारे पास छः खेत हैं। छः बीघा जमीन कुओं की है। कुल है 14 बीघा जमीन। पहले छः बीघा जमीन में खेती होती थी, आठ बीघा बंजर पड़ी रहती थी। अब तो चौदहों बीघा में फसल लहलहाने लगी है। यह कहते हुए उनके चेहरे पर प्रसन्नता की रेखाएँ उभर आती हैं।

बूजा में विवेकशील और मजबूत ग्रामसभा

संगठन की ताकत को समझकर बूजा के लोगों ने अपने यहाँ ग्रामसभा बनाई। यह ग्राम सभा तीन साल पहले बनी। इसमें ढाणी, पानी और प्रकृति के संरक्षण, संवर्द्धन को लेकर नियम–कानून बनाये गये। बूजा की ग्राम सभा अब दूसरे गाँव के पशुओं का प्रवेश गाँव में नहीं होने देती। पहले ऐसा धड़ल्ले से होता था।

तेवड़ी गाँव के साथ इस मामले को लेकर अच्छा–खासा झंझट हुआ। केस भी चला। जीत बूजा गाँव की हुई। अपने आत्मविश्वास की बदौलत ही बूजा ने यह केस जीता। अपने गाँव के जो शामलाती संसाधन हमारे कारण उर्वरक हो रहे हैं, उसका उपभोग दूसरे गाँव वाले कैसे कर सकते हैं ? बाद में इस मामले को लेकर बैराठ यानी विराट नगर के साथ भी केस चला। धन–जन के मामले में विराटनगर बूजा से बलिष्ठ है, फिर भी विजय बूजा के ही झोले में आई। नीतिगत विजय के इस सफर से बूजा गाँव की ग्राम सभा और मजबूत हुई।

बूजा की ग्राम सभा ने जंगल को लेकर कुछ नियम बनाये, जो इस प्रकार हैं :

1. अगर कोई बाहर का व्यक्ति बूजा के जंगल से पेड़ काटता हुआ नजर आएगा, तो उसे पाँच सौ इक्यावन रुपये का जुर्माना भरना पड़ेगा।
2. अगर गाँव का ही कोई व्यक्ति जंगल से पेड़ काटता है, तो इक्यावन रुपये जुर्माने के दण्ड का भागी उसको बनना पड़ेगा।
3. अगर किसी ने दूसरे व्यक्ति को जंगल काटते हुए देखा और आकर ग्राम सभा को नहीं बताया, तो उसे भी इक्यावन रुपये के दण्ड का भागी बनना पड़ेगा।

फिर ग्राम सभा के नियम और कानून गाँव की उन तमाम समस्याओं को लेकर बने, जो पहले सुलझाये नहीं सुलझते थे। बाहर के किसी तीसरे आदमी की जरूरत आ पड़ती थी। अब गाँव की समस्या गाँव में ही हल हो जाती है। तमाम नियम–कायदे गाँव के लोगों को मानने पड़ते हैं। नहीं तो हुक्का–पानी बन्द कर देने का डर ग्राम सभा पंचायत के आगे रख देती है। आस–पास के गाँव भी बूजा की ग्राम सभा से अब सीख लेने लगे हैं।

बूजा में महिला संगठन भी

हमारे देश में स्त्री त्रासदी रही है कि उसे अंधेरे में रखने की साजिशों पर साजिशें रचाई जाती रहीं। न उन्हें सोचने का मौका देने की उदारता किसी ने भी नहीं बरती, न उन्हें खुली हवा में आने के लिए बन्धनमुक्त किया। राजस्थान का नाम इस मामले में अव्वल रहा है। पर बूजा इस मामले में प्रगति का बेहतर उदाहरण है।

बूजा में महिलाओं ने मिलकर अपना महिला संगठन बनाया। गाँव की फूली गूजर, मूली गूजर, भँवरी गूजर, संती गूजर, मुनी गूजर, और धापाँ गूजर इस महिला संगठन की कार्यकर्ता बनकर सामने आई। ये महिलाएँ बूजा के जंगलों के रख–रखाव और उसकी सुरक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं। कहती हैं अब हम हमारे जंगल को नष्ट नहीं होने देंगी। चाहे हमारी जान ही क्यों न चली जाये।

बूजा का सफरनामा

अभाव से समृद्धि तक

कहते हैं महाभारत काल में पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास का वक्त विराटनगर और इसके आस–पास के क्षेत्र में ही काटा था। विराटनगर जयपुर जिले की एक तहसील है और इसी तहसील से सटा हुआ गाँव है बूजा। इसकी इतिहास कथा पाँच सौ साल पहले से शुरू होती है। लगभग पाँच सौ साल पहले एक राजपूत परिवार के ठाकुर बूज सिंह के नाम पर इस गाँव का नाम पड़ा बूजा। अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच एक हरित बिन्दु की तरह चमकता हुआ यह गाँव बहुत ही खूबसूरत लगता है। तब, जब इन श्रृंखलाओं पर व्यवस्था की ओछी उच्छृंखलता का खतरा मँडरा रहा हो। पक्के दो सौ बीघे के कुल रकबे वाले इस गाँव में आवागमन का रास्ता कच्चा है तथा विराट नगर से दक्षिण की ओर पड़ता ह

बूजा की कुल आबादी छः सौ 75 है, जो गूजर जाति के कोली व झींझड़ गोत्र के 52 एवं गौड ब्राह्मण के एक परिवारों में बँटी हुई है। इस आबादी में पुरुषों की संख्या तीन सौ एवं स्त्रियों की संख्या एक सौ 50 है। बच्चे एक सौ 25 एवं बच्चियाँ एक सौ की संख्या में हैं। बूजा की यह आबादी मूलतः खेती पर टिकी हुई है। हालांकि कुछ दिनों पहले तक यह स्थिति नहीं थी, जब चारों ओर पानी का अभाव था। दूर–दूर तक बंजर

जमीनें थीं और सूरज की ताप से बचने के लिए पेड़ की छाँह का नामोनिशान तक नहीं था। बूजा वासी खेती में अपनी पुरानी तकनीक का इस्तेमाल करते हैं। रासायनिक खाद के व्यापक प्रयोग के इस समय में अपने जानवरों से प्राप्त खाद को ही उपयोग में लाते हैं। अन्न के बाद की अपनी जरूरतों को बूजा के लोग अनाज के विक्रय से पूरा करते हैं।

हर वक्त के अकाल में जब खेती लगभग खत्म–सी हो गई थी, बूजा में जीने का आधार था पशुपालन। आज भी इस गाँव में 1865 की संख्या में पशुधन है। इन पशुओं में 12 सौ बकरियाँ, एक सौ 50 भैंसें, दो सौ गायें, तीन सौ भेड़ें, छः ऊँट तथा दस बैल हैं। इतनी संख्या में पशुधन होने से आर्थिक विकास का ग्राफ तो ऊँचा हो रहा है, पर इस वजह से शैक्षणिक आधार थोड़ा कमजोर पड़ता जा रहा है। बच्चों का ज्यादातर समय तो पशुओं को चराने में ही चला जाता है। हालांकि शिक्षा के प्रति अब यहाँ के लोग पूरी तरह साकांक्ष हो रहे हैं, जागरूक हो रहे हैं। गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय है, जिसमें छात्रों की संख्या 50 है।

बूजा में कुल 15 कुएँ हैं। इन 15 कुओं में से नौ कुएँ सूखे पड़े हुए थे। छः कुओं में अगर पानी था भी, तो कई हाथ नीचे तक था। ऐसे में सिंचाई का कोई सवाल ही नहीं उठता है। कई बीघे जमीन पर मिट्टी की पपड़ी पड़ी रहती थी। गाँव के किसान इन्हें देखकर सिर्फ आह भरने के सिवा और कर भी क्या सकते थे। अन्ततः जब हालत बहुत ज्यादा दयनीय हो गई, तो इसी गाँव के श्योबक्स गूजर के पुत्र रामगोपाल गूजर ने भूरियावास के श्रवण लाल गूजर से संपर्क किया। श्रवण लाल गूजर तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता हैं। गोपाल ने तरुण भारत संघ का नाम सुन रखा था कि यह संस्था गाँव–गाँव में पानी लाने का चमत्कार कर रही है। हालाँकि बाद में उसे पता चल गया कि यह संस्था गाँव–गाँव में पानी लाने के चमत्कार का गुर बताती है, न कि स्वयं चमत्कार करती है।

अन्य गाँवों में जल–संरक्षण कार्य

गढ़ी मामोड़

गढ़ी मामोड़ एक ऐतिहासिक गाँव है, जिसमें गुर्जर व मीणा जाति का बाहुल्य है। यहाँ मेहर की ढाणी में भरगड़ गोत्र के गुर्जर निवास करते हैं। इन्हें अलवर रियासत के संस्थापक राव प्रताप सिंह जी ने 'मेहर' की पदवी से नवाजा था।

राव प्रतापसिंह जी आमेर रियासत के अन्तर्गत माचैड़ी, राजगढ़ व आधा राजपुर इन ढाई गाँवों के जागीरदार थे। किसी कारण से रुष्ट होकर वे भरतपुर के राजा से जा मिले। भरतपुर के जाट राजा ने इनकी मदद से आमेर पर चढ़ाई कर दी। अपना पैतृक गाँव होने के कारण राव प्रतापसिंह का विचार बदल गया और वे भरतपुर के विरुद्ध हो गये। तब तत्कालीन आमेर नरेश ने इन्हें आमेर और भरतपुर का कुछ भू–भाग दबा लेने को कहा। इन्होंने भरतपुर का काफी भाग दबा लिया और आमेर राज्य को दबाने के लिए पशुओं के सींगों पर तेल से भीगे कपड़े बाँध कर आग लगा दी। आमेर वालों ने किसी अन्य राजा का हमला समझ कर अपनी बारुद काम में ले ली। तब इन्होंने उनके काफी भू–भाग को दबा लिया। वहाँ से थककर जब वे वापस अलवर की तरफ आ रहे थे तो इनके सैनिकों को जोरों की भूख लगी। तब गढ़ी मामोड़ के कालूराम भरगड़ ने इनके सैनिकों को दूध, दही, राबड़ी और रोटी–चटनी का भोजन कराया। सैनिक तृप्त हुए। राव प्रतापसिंह जी ने कालूराम भरगड़ की सेवा (मेहर) के बदले में उसे वंश परम्परागत 'मेहर' की प्रतिष्ठित पदवी दे दी। वर्तमान में उसके सभी वंशज भरगड़ गोत्र के बजाय 'मेहर' के नाम से ज्यादा प्रसिद्ध हैं। यह प्रतिष्ठा का सूचक है। इस गाँव के रामकर्ण गुर्जर भी मेहर हैं। इन्होंने ने ही यह कहानी सुनाई थी।

ये प्रारम्भ से ही सामाजिक कामों में रुचि लेते रहे हैं। गाँव का संगठन बनाने में, श्रमदान जुटाने में तथा लोगों में संस्कार विकसित करने के शिक्षण–प्रशिक्षण में भी इनकी खासी भूमिका रही है। ये ऐतिहासिक जानकारी में भी रुचि रखते हैं। यहाँ के ऐतिहासिक कुण्डों की सफाई भी इन्होंने लोगों के श्रमदान से करवाई। गाँव के पश्चिमोत्तर में स्थित हवाड़ा वाले जोहड़ को भी इन्होंने लोगों के श्रमदान से गहरा किया तथा इसके बगल से बहकर जाने वाले नाले को भी रोककर इसी जोहड़ में मिला लिया।

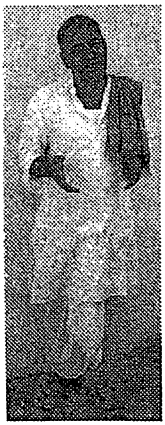

रामकरण गुर्जर अपनी कहानी बताते हुए कहते हैं कि ''2 अक्टूबर 1988 को गांधी जयन्ती एवं संस्था के स्थापना दिवस पर मेरा व श्री छोटू सिंह जी चौहान का परिचय तरुण भारत संघ के श्री राजेन्द्र सिंह जी एवं अन्य कार्यकर्ताओं से हुआ। इसके बाद त.भा.सं. के कार्यकर्ताओं का गाँव में आना– जाना शुरू हो गया। जल, जंगल, जमीन के विषय पर गाँव वालों के साथ चर्चा हुई। पहले यह चर्चा चाय की थड़ी, बनिए की दूकान या सब्जी की दूकान पर बैठकर होती, पर बाद में गाँव की सार्वजनिक जगह पर बैठ कर होने लगी।

गाँव के जंगल में जोहड़ था। वह जोहड़ हवाड़ा के नाम से जाना जाता है। हवाड़ा जोहड़ जीर्ण–शीर्ण हो चुका था। उसका अस्तित्व खतरे में था। एक दिन संस्था के कार्यकर्ता श्री मुरारी लाल शर्मा व श्री जगदीश गुर्जर गाँव में आये तब उनसे मैंने और श्री छोटू सिंह चौहान ने इस जोहड के पुनर्निर्माण की चर्चा शुरू की। तब उन्होंने भरोसा दिलवाया कि यदि आप सभी ग्रामवासी सहमत होकर एक–चौथाई श्रमदान करेंगे तो हम इस कार्य में आपका सहयोग कर देंगे। काम गाँव का होगा, विकास गाँव का होगा और हिसाब भी गाँव के पास ही रहेगा। उनकी इस बात से गाँव वाले सहमत हो गये।

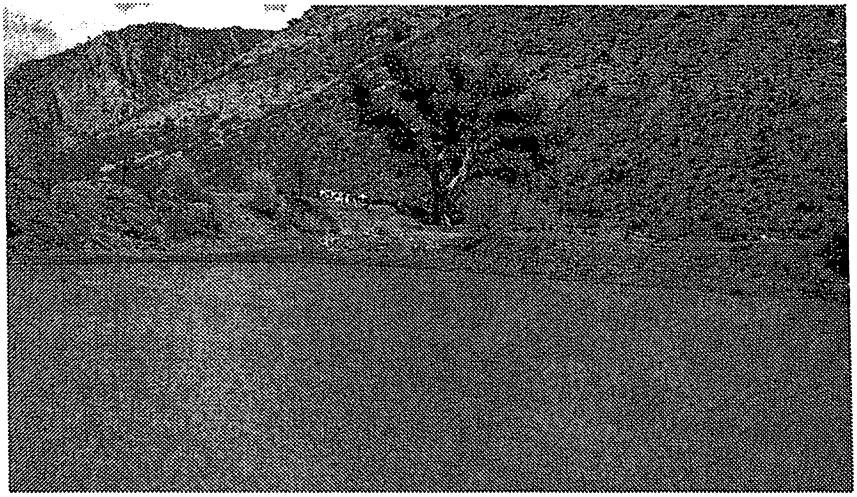

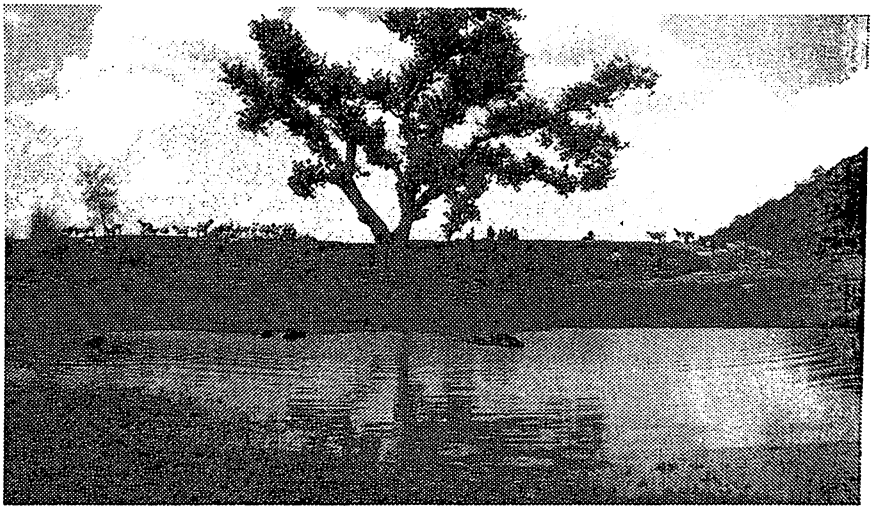

इस काम के लिए गाँव में कमेटी गठित हुई तथा उस कमेटी में श्री छोटू सिंह को अध्यक्ष बनाया गया एवं उनकी देखरेख में इस कार्य को करने का निर्णय लिया गया। इस जोहड़ का निर्माण कार्य बहुत बड़ा था। कार्य शुरू हुआ तो उस समय कोई परेशानी नहीं थी। लेकिन ज्यों–ज्यों काम होने लगा तो परेशानियाँ आनी शुरू हो गईं। कुछ लोग इस जोहड़ को गाँव का जोहड़ न मानकर गुर्जर जाति का जोहड़ कहने लगे। वे कहते थे कि यह जोहड़ तो गुर्जर जाति का है और गुर्जर जाति के ही काम आयेगा। इस अफ़वाह से श्रमदान का कार्य एकदम से रुक गया और जन सहयोग की राशि भी रुक गई। अत: संस्था ने भी काम करना बन्द कर दिया। ट्रैक्टर वाले को भी काम करने के लिए मना कर दिया गया। यह काम पूर्णतः हो जाता तो उसमें लगाई गई राशि एवं जनता का श्रमदान दोनों का दुरुपयोग होता।

ऐसे समय में संस्था के कार्यकर्ता एवं गाँव के इन जागरूक नागरिकों ने एक मुहिम की बात सोची। चूँकि पहले इस जोहड़ का निर्माण अजबपुरा के सेठ श्री चिरंजी लाल जी गुप्ता ने करवाया था; इसलिए उनके वंशजों से सम्पर्क करने के लिए गाँव के लोग अजबपुरा गाँव में पहुँचे। उनके पोते श्री महेशचन्द जी गुप्ता उस समय अजबपुरा गाँव के सरपंच थे। संस्था के कार्यकर्ता एवं गढ़ी गाँव के नागरिकों ने उनसे बातचीत की।

उन्हें बताया कि आपके दादा ने कभी 'हवाड़ा जोहड़' का निर्माण करवाया था, वह जोहड़ आज जीर्ण–शीर्ण हो चुका है। अतः आपको भी उसके पुनर्निर्माण हेतु सहयोग करना चाहिए। इस पर सेठ जी (महेश चन्द जी गुप्ता) ने जोहड़ को देखने की इच्छा जाहिर की। तब संस्था के कार्यकर्ताओं ने उन्हें मौके पर ले जाकर जोहड़ दिखाया। जोहड़ का मौका देख कर सेठ जी प्रसन्न हो गये। उन्होंने मौके पर ही अपनी शुद्ध आय में से तत्काल 1000–रु. निकाल कर बाँध निर्माण समिति को दे दिये और काम शुरू करने को कह दिया। सेठ जी ने अपने साथ गये हुए लोगों से भी उसी समय 2000 रुपये की सहयता राशि दिलवाई।

अब गाँव की समिति व तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्री मुरारी लाल शर्मा ने काम शुरू कर दिया। लोगों ने शारीरिक मेहनत भी की और ट्रैक्टर से भी काम किया। यह जोहड़ गाँव से 3 कि. मी. की दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित है। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्री मुरारी लाल जी शर्मा का विकलांग होते हुए भी रोज़ 3 कि. मी. पैदल चलकर गाँव में आना, फिर गाँव में से जोहड़ पर कार्यरत तीन व्यक्तियों के लिए रसद सामग्री लेकर वापस जोहड़ पर पहुँचना, फिर वहाँ से बीलाट गाँव में जाकर पानी लाना फिर स्वयं ही उन तीन व्यक्तियों का भोजन तैयार करना और रात को 10–11 बजे सोना तथा पुनः सुबह जल्दी उठकर फिर गाँव में आना; यह कोई छोटा– मोटा काम नहीं था। गाँव के लोग कार्य पूर्ण कराने के लिए कृत संकल्प थे। पचास दिन तक इसी तरह से मेहनत कर जोहड़ का काम पूरा किया गया। गाँव के लिए एक अच्छा जोहड़ बनकर तैयार हो गया।

जोहड़ को जब गाँव के लोगों ने पहली बार देखा तो लोगों के मुँह से बरबस ही यह शब्द निकला 'यह जोहड़ नहीं है, यह तो गाँव गढ़ी, खरकड़ी, बीलाट, बासणा व चाँदपुरी के लोगों के लिए 'पुष्कर झील' है।' वाकई में यह सत्य है कि इस जोहड़ निर्माण के बाद इन गाँवों के कुओं का जल स्तर ऊपर आया है। जंगल में चरने वाले पशुओं को जोहड़ में बारहों महीने पीने को पानी मिल गया है। पशुधन में भी वृद्धि हुई है जिससे गाँव की आमदनी में इजाफा हुआ। इस काम को देखकर गाँव वालों को संस्था पर और ज्यादा विश्वास हुआ तथा अब गाँव के लोगों ने भी संस्था में आना–जाना शुरू कर दिया।

संस्था के सम्पर्क में आने वाले ज्यादातर नवयुवक थे। मैंने ने इन युवकों का एक संगठन तैयार किया, जिसका मुख्य उद्देश्य युवकों को सामाजिक सरोकार से जोड़ कर उनमें सामाजिक ज्ञान एवं पारम्परिक जन जीवन के प्रति सकारात्मक सोच पैदा करना था। इस सकारात्मक सोच का प्रभाव गाँव में पड़ने लग गया। इस संगठन के माध्यम से गाँव के युवा लोग आपस में चर्चा व विचार–विमर्श करने लगे। आखिर गाँव के युवकों का ध्यान कुण्ड मामोड़ की ओर आकर्षित हो गया।

अरावली की पर्वत श्रृंखला से जुड़ा यह 'मामोड़' स्थान प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक कारणों से प्रसिद्ध रहा है। यहाँ पर कुण्ड व बावड़ी बनी हुई हैं। उद्गम से पानी निरन्तर बहता रहता है। एक बावड़ी तथा दो कुण्डों का पानी तो बहकर निकलता रहा है। लेकिन एक कुण्ड का पानी इकट्ठा ही रहता था। पानी का निकास नहीं होने से उसमें कीड़े पड़ चुके थे। प्लास्टिक की थैलियाँ एवं अन्य गन्दगी कुण्ड में भरपूर बनी हुई थी। सभी नौजवानों ने मिलकर सर्वसम्मति से सभी कुण्डों की सफाई करने का

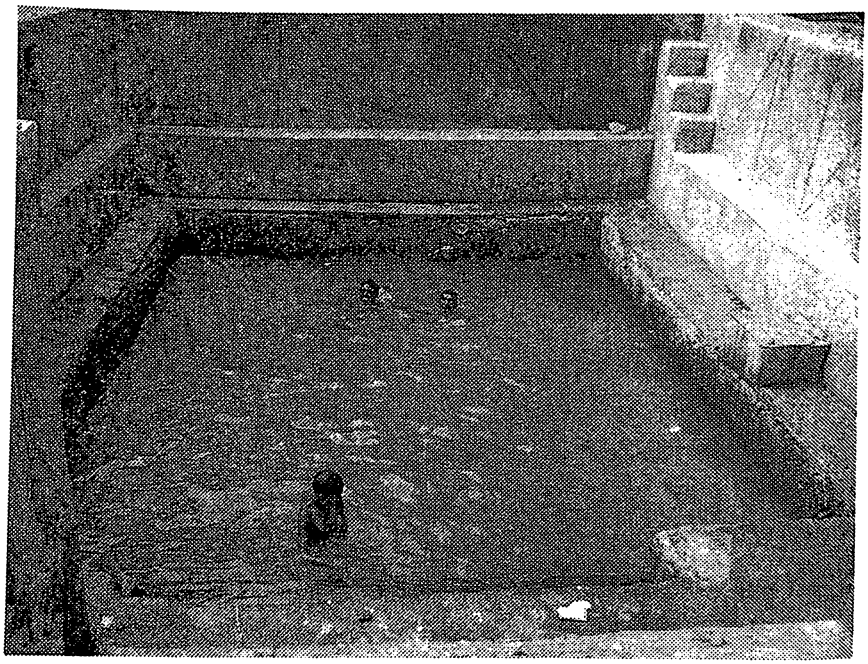

विचार तय कर लिया। इसी दौरान तरुण भारत संघ के सहयोग से 5 दिवसीय शिविर भी लगाया गया।

5 दिन के इस शिविर में गाँव के सभी नवयुवकों ने मिल कर उन कुण्डों की सफाई का काम शुरू कर दिया । श्रृंखला बनाकर सभी युवकों ने बाल्टी से पानी बाहर निकालना शुरू किया । युवकों में इस बात को लेकर जोश और जज्बा था। उत्साह इतना बढ़ रहा था कि न तो किसी को थकान की चिन्ता थी और न ही भूख प्यास की। बस एक ही लक्ष्य था कि किसी प्रकार इन कुण्डों की सफाई हो जाय । आखिरकार लक्ष्य पूरा हुआ और कुण्डों के पैंदे तक की सफाई का काम दिन ढलते–ढलते तक पूरा कर दिया गया।

आखिर में रह गई बावड़ी, जो जल स्रोत का मुख्य उद्‌गम था। उस कार्य को भी दूसरे दिन से ही गति मिल गई । लेकिन बाल्टियों से पानी निकालना मुश्किल हो रहा था; इसलिए जेनरेटर से पानी निकाला गया और इसके बाद कीचड़, पत्थर, प्लास्टिक व पेड़–पौधों के पत्ते आदि को निकाल कर बावड़ी को पूरी तरह से साफ़ कर दिया गया। उस दिन सभी लोग थक गये थे, इसलिए विश्राम किया। फिर नाश्ता बना और आपस में चर्चा–परिचर्चा हुई। इस विचार–विमर्श में एक बात उभर कर सामने आई कि यहाँ एक जनाना कुण्ड की व्यवस्था की जावे, जिससे महिलाओं को भी स्नान करने की सुविधा मिल सके।

सभी युवाओं ने मिलकर जनाना कुण्ड हेतु चन्दा इकट्‌ठा किया और काम चालू कर दिया। जब कार्य सुचारू रूप से चल पड़ा तो गाँव के अन्य प्रभावशाली लोग भी इस कार्य से जुड़ गये। और एक अच्छे जनाना कुण्ड का निर्माण हो गया। अब महिलाएँ आराम से स्नान कर सकती हैं। इस तरह तरुण भारत संघ व गाँव के लोगों ने मिल कर इन कुण्डों का काम भी किया और जल, जंगल, जमीन संरक्षण का काम भी किया। वृक्ष लगाये गये, पानी का महत्त्व समझाया गया और प्रदूषण मुक्त जीवन की कल्पना को साकार करने के लिए लोगों ने संकल्प भी लिया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पारम्परिक रूप से जल संरक्षण एवं वन संरक्षण की सोच पैदा हो। पहले के जमाने के लोगों का ज्ञान इतना विकसित था

कि लोग कुएँ, बावड़ी, तालाब, नाड़–नाड़ी आदि का निर्माण स्वयं मेहनत कर लेते थे। 'देव बनी' व 'धराड़ी प्रथा' आदि के द्वारा वृक्षों का बचाव करते थे। आज हम अपनी पुरानी परम्पराओं को भूल गये हैं, उन्हें जानबूझ कर मिटा रहे हैं। यदि ऐसा ही रहा तो आगे आने वाले समय में पानी का ऐसा संकट आयेगा कि जीव–मात्र की कल्पना करना भी बेमानी हो जायेगा। इन सभी कारणों से पानी का अस्तित्व खतरे में है। जब पानी ही खतरे में है तो जीवन भी खतरे में होगा और खतरे में होगी सृष्टि भी। इन सबसे परे हटकर आज हमें बुजुर्गो की उन्हीं पुरानी परम्पराओं को पुनर्जीवित करना पड़ेगा। हमें कुओं, तालाबों, बावड़ियों, नाड़ा–नाड़ियों व नदियों का महत्त्व समझना होगा। फिर से समाज की उन्हीं धारणाओं को सशक्त करना होगा, जिन्हें पहले लोग समझते थे।''

रामकरण गुर्जर के अलावा हवाड़ा वाले जोहड़ के काम में यहाँ के श्री छोटू सिंह का भी विशेष योगदान रहा है। छोटू सिंह चौहान गढ़ी मामोड़ की ढाणी कानूगाळी में रहते हैं। ये परमार्थ के काम के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इन्होंने अपने जीवन में कभी भी पैसा इकट्ठा नहीं होने दिया। पैसा आते ही ये उसे समाज कार्य में लगा देते हैं। तरुण भारत संघ के साथ ये पिछले 20–25 साल से जुड़े हुए हैं। अपने गाँव में जोहड़ के काम के लिए उगाही करने में ये सबसे ज्यादा रुचि रखते थे। इन्हीं की विशेष रुचि के कारण इस गाँव में 'हवाडा जोहड़' सहित अन्य बहुत सारे पानी के काम सम्भव हो सके।

कुछ माह पहले ही उनको एक दिन किसी के द्वारा या अखबार आदि के माध्यम से मालूम हुआ कि कल अमुक समय पर बहुत अच्छा मुहूर्त है। इस मुहूर्त में जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं वे अवश्य पूरे होते हैं। इन्होंने आव देखा न ताव तुरन्त तैयारी करके बड़े ही उत्साह से मुहूर्त सामग्री खरीदी, बाँटने के लिए गुड़ का कट्टा खरीदा और गाँव के कुछ लोगों को साथ लेकर पहाड़ के ऊपर चले गये। वहाँ एक जोहड़ बनाने की चर्चा लोगों में बहुत सालों से उठती रहती थी। उन्होंने निर्धारित समय पर पहुँच कर मुहूर्त लगा दिया। कितने

सरल हृदय व्यक्ति हैं। अपने ही बलबूते मुहूर्त लगा दिया। सम्भव है उनके मन का विचार शायद कभी पूरा हो जाय। एक बार जब हम इनसे मिलने गये, उस वक्त भी इनके हाथ में एक नीम का पौधा था, जिसे वे गड्ढा खोद कर लगा रहे थे।

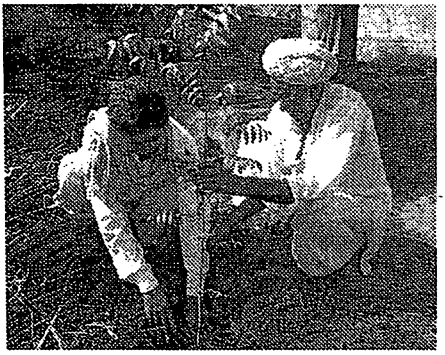

मामोड़ कुण्डों का ऐतिहासिक महत्त्व

मामोड़ के कुण्डों और मन्दिरों का इतिहास काफी पुराना है। वैसे तो इनके निर्माण काल के सम्बन्ध में अभी तक कोई भी शिलालेख या दस्तावेज नहीं मिला, लेकिन फिर भी ये संरचनाएँ 400–500 वर्षों का इतिहास अपने आप में सँजोए हुए प्रतीत होती हैं। यह स्थान माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि (मण्डावरा के पास स्थित) होने के कारण मामोड़ कहलाया अथवा यहाँ की पहाड़ियों में आये तीन वक्राकार मोड़ अर्थात् महा–मोड़ होने के कारण मामोड़ कहलाया, निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि यहाँ मोरों की अधिकता होने के कारण इस जगह का नाम महामोर अर्थात् मामोड़ कहा जाने लगा हो। कुछ भी हो, इस स्थान की अनुपम छटा व मनोहारी सुन्दरता मन को मुग्ध कर देती है।

जनश्रुति है कि किसी जमाने में यह स्थान चम्पा नगरी के नाम से विख्यात था। कहते हैं एक बार यहाँ के निवासी किन्हीं भाई–बहन का बचपन में बिछड़ाव हो गया था, तब यह नगरी इतनी बड़ी थी कि वे कई वर्षों तक एक–दूसरे को ढूँढते रहे, परन्तु मिले नहीं। अन्त में 12 वर्ष बाद वे संयोग से आपस में मिल गये। तब दोनों ने लम्बी अवधि तक पाए बिछोह के दुःख को याद कर के दुःखी मन से इस नगरी को उजड़ जाने का शाप दे दिया। कालान्तर में यह नगरी धीरे–धीरे कर के उजड़ गई।

जनश्रुति के अनुसार इसी नगरी में प्रसिद्ध भक्त कर्माबाई हुई थी। कर्माबाई द्वारा श्रद्धापूर्वक बनाई गई बाजरे की खिचड़ी को भोग लगाने पर स्वयं भगवान् कृष्ण ने मामोड़ नामक स्थान पर ही आकर खाया था।

एक अन्य दन्तकथा के अनुसार एक ग्वाले की गाय के दूध को भगवान शंकर प्रतिदिन पी जाते थे। एक दिन ग्वाले ने उन्हें रँगे हाथों पकड़ लिया। तब शंकर जी भाग कर अपने स्थान शिव मन्दिर वाली गुमटी में घुसने लगे। तभी ग्वाले ने पीछे से अपनी खरवाड़ी (कुल्हाड़ी) को फैंक कर चोरी से दूध पीने वाले चोर (शंकर भगवान) के सिर पर दे मारी। कहा जाता है कि तभी से यहाँ के भगवान शिव की पत्थर की मूर्ति के सिर पर कुल्हाड़ी से कटने जैसा निशान बना हुआ है। कुण्ड के ऊपर की तरफ के इस निशान वाले मन्दिर में रघुनाथ जी व हनुमान जी के उप–मन्दिर भी हैं। इसके पास ही बाबा आलमचन्द जी का मन्दिर तथा उसके निकट ही माता वैष्णवी देवी का मन्दिर भी है। बाबा आलमचन्द व माता वैष्णवी देवी के बारे में भी अनेक प्रकार की दन्त कथाएँ प्रचलित हैं।

यहाँ प्राचीन नगर होने के अवशेष आज भी यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं। कुल मिला कर इस क्षेत्र के लोगों के लिए इस स्थान का ऐतिहासिक व पुरातात्त्विक महत्त्व तो है ही, साथ ही पानी को बचाने व जंगल को बचाने में भी बड़ा महत्त्व है।

मालूताना

मालूताना गाँव में पानी के काम की शुरुआत श्री जगदीश गुर्जर व श्री श्रवण शर्मा ने पहले ही कर दी थी, जिसे संस्था की कार्यकर्ता कु. भागीरथी राठौर ने उसी गाँव की महिला संगठन में लगी शकुन्तला सोनी तथा शिक्षा के क्षेत्र में लगे रणजीत सिंह, राजेश शर्मा व रामजीलाल बलाई के सहयोग से और ज्यादा बढ़ाया। इनके अलावा यहाँ के श्री मुरारी लाल जी शर्मा (अध्यापक) ने भी इस काम का विचार फैलाने में काफी मदद की। भागीरथी ने इन लोगों के साथ लग कर महिला चेतना

व पानी का काम, दोनों को आगे बढ़ाया। उल्लेखनीय है कि भागीरथी राठौर भाईसाहब श्री राजेन्द्र सिंह जी के साथ राष्ट्रीय जल यात्रा में भी रही थी और देश भर में जल–चेतना जागृत करने का सफल प्रयास किया था।

मालूताना में ही हनुमान का गुवाड़ा से आगे गोयल्याँ की ढाणी में एक झूँतराळी जोहड़ी बनाई गई, जिसे बनने के बाद आज तक कभी भी नहीं सूखने दिया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में यहाँ पर बस रहे भगवाना बाबा ने नारायणपुर के पास

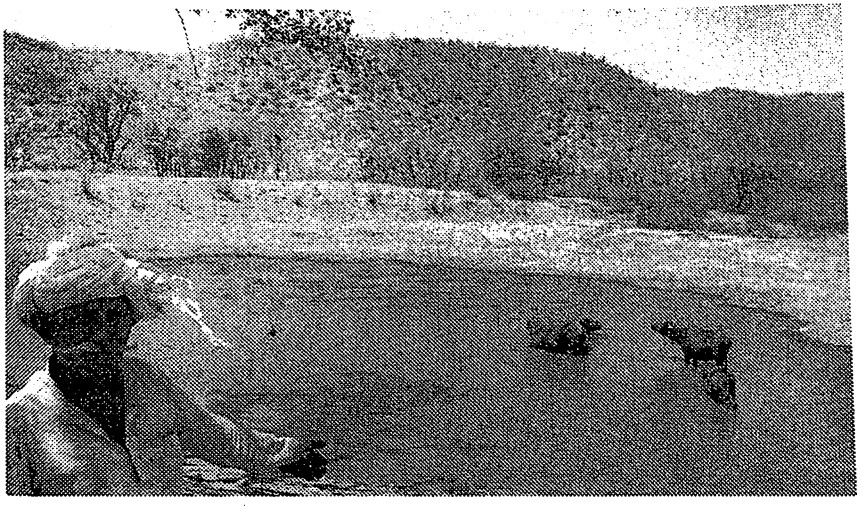

मोरड़ी की ढाणी से आकर यहाँ जमीन खरीदी थी। इस जोहड़ी में सबसे ज्यादा उन्होंने ही मदद की थी। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि भगवाना बाबा ने अकाल में भी इसे कभी नहीं सूखने दिया। बरसात का पानी सूख जाने पर वह इसे अपने कुएं से हमेशा भरते रहे हैं।

एक बार जब इन्हें अपने कुएँ का काम करना पड़ा तब यह कुआँ सूख गया था। ऐसी स्थिति में उनके पूरे परिवार ने महीनों तक अपने सिर से पानी ला–लाकर जोहड़ में डाला था। पूछने पर वह भाव–विभोर होकर अपनी ही बोली में कहते हैं, ''और काम तो म्हे म्हारा सुवारथ का मार्‌या कराँ छाँ, पण या काम तो सब जीव–जन्तू, कीड़ी–मकोड़ी, उडण–पखेरू और जंगली ज्यानबराँ का हित मैं आबाळो काम छै।'' तभी पास में ही खड़ा उनका बेटा भी कहता है, '' ईं जोहड़ी मैं पाणी भरबासूँ जंगली ज्यानबर अर मोर्‌या म्हारी खेती मैं बी नुकसान करीं छीं; पण म्हारो काँईं खाँय छीं। वा तो वाँका ई भाग को छै। दोनों पिता–पुत्र का कितना सहज भाव है ?

जादू का बास

विराट नगर के आसपास के क्षेत्र में बूजा गाँव के अलावा, जादू का बास, छींतोली और बीलवाड़ी आदि गाँवों में भी पानी के उल्लेखनीय काम हुए हैं। इस क्षेत्र में काम की शुरुआत करने में 'श्री मस्तराम बाबाजी' का विशेष योगदान रहा है।

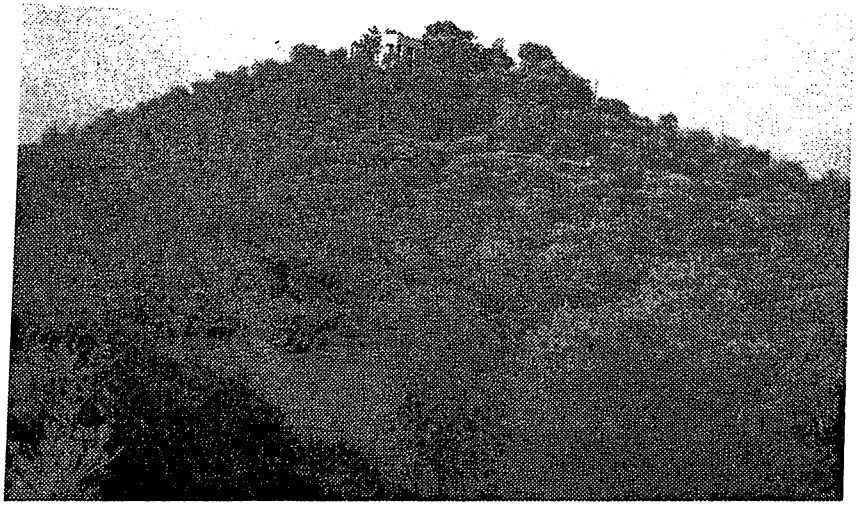

श्री मस्तराम बाबाजी की साधना स्थली सरिस्का क्षेत्र के क्रास्का गाँव में भी रही है। क्रास्का में पहले ही संस्था द्वारा जल–संरक्षण का काम शुरू हो गया था। इसलिए श्री मस्तराम बाबाजी ने वहाँ के कामों को देख कर जादू का बास में भी पानी का काम करवाने की प्रेरणा अपने स्थानीय सेवकों को दी।

क्रास्का में श्री मस्तराम बाबाजी को लोग मस्ता बाबा के नाम से जानते थे। वहाँ पर उन्हें लोग सुल्फा, गाँजा पीने वाले फक्कड़ के रूप में ही जानते थे। लेकिन जादू का बास में उनकी पहचान एक सिद्ध पुरुष के रूप में थी। वास्तव में वह एक सिद्ध पुरुष थे भी। श्री मस्तराम बाबाजी ने यहाँ टेकड़ी के ऊपर ही एक आश्रम भी बना लिया था।

इस टेकड़ी के नीचे ही अपनी खेती करने वाले जगदीश बाबा एक बार बैराठ गये हुए थे; वहाँ उन्हें संस्था के कार्यकर्ता राजू सिंह (राजेन्द्र सिंह) राठौर मिल गये। परिचय व बातचीत के बाद जगदीश बाबा उन्हें जादू का बास की टेकड़ी पर मस्तराम बाबाजी

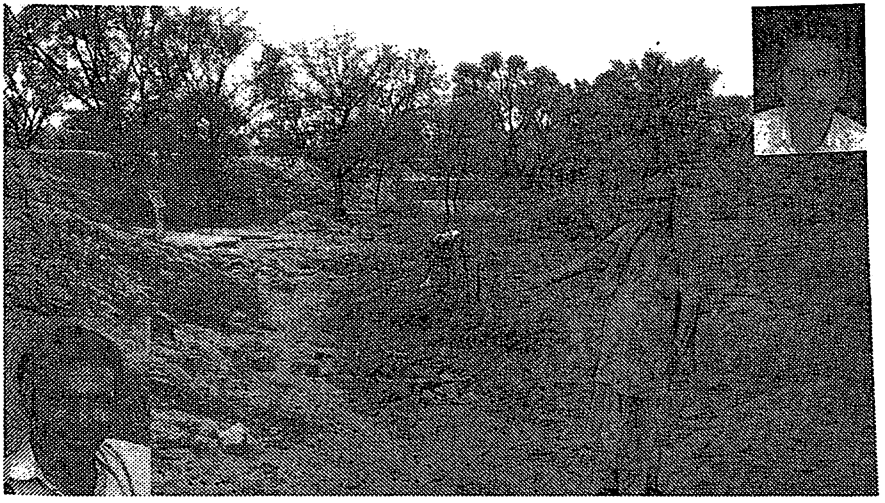

के पास ले गये। वहाँ पर पानी के काम के बारे में चर्चा हुई। राजू सिंह ने गाँव के श्रमदान और संस्था के सहयोग की स्पष्टता की। बस! तभी टेकड़ी के नीचे दो जोहड़ बनाने की बात तय हो गई। बाबा ने अपने सेवकों को तत्काल काम शुरू करने का आदेश दे दिया।

उनके प्रमुख शिष्य तो श्री हरीदास जी महाराज हैं, पर उनके सेवक और भक्त बहुत सारे लोग थे। उनमें से पानी के काम में विशेष रुचि लेने वालों में जादू का बास के श्री लल्लूराम गुर्जर, बहड़ा की ढाणी (छींतोली) के श्री रामचन्दर गुर्जर और सूरजमल की ढाणी (ज़यसिंहपुरा) के श्री श्रवण सिंह प्रमुख रहे हैं। इन्होंने सबसे पहले मस्तराम बाबाजी वाला पहला जोहड़ बनाया था। पर बाद में आसपास के क्षेत्र में बहुत सारे जोहड़, बाँध और एनीकट बनाए । स्थानीय जन–समुदाय का सहयोग व श्रमदान भी इन्होंने ही जुटाया। इसके अलावा गाँव का संगठन बनाने तथा जंगल व पानी के प्रति लोगों की सोच बनाने में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

जादू का बास के पास ही गोगेरा गाँव में भी इन्होंने कई काम करवाये। गोगेरा गाँव के लोगों ने बताया कि यहाँ पर बने जोहड़ों से कुओं के जल स्तर में काफी बढ़ोतरी हुई है। गोगेरा एक ऐतिहासिक गाँव है। गाँव के दक्षिण–पूर्व में पहाड़ी पर गोगेश्वर महादेव का एक पुराना स्थान है। गोगेरा गाँव में जल–संरक्षण के प्रचार हेतु गढ़बसई के श्री महेश चन्द शर्मा व फतेह सिंह जी भी गये थे। उन्होंने यहाँ के छींतर बलाई व अन्य ग्रामवासियों को पानी व जंगल को बचाने की बात बताई थी।

छींतोली

छींतोली गाँव यहाँ का मशहूर गाँव है। यह एक तरफ तो ऐतिहासिक नगर विराट नगर से सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है और दूसरी तरफ राष्ट्रीय राज मार्ग पर स्थित पावटा से

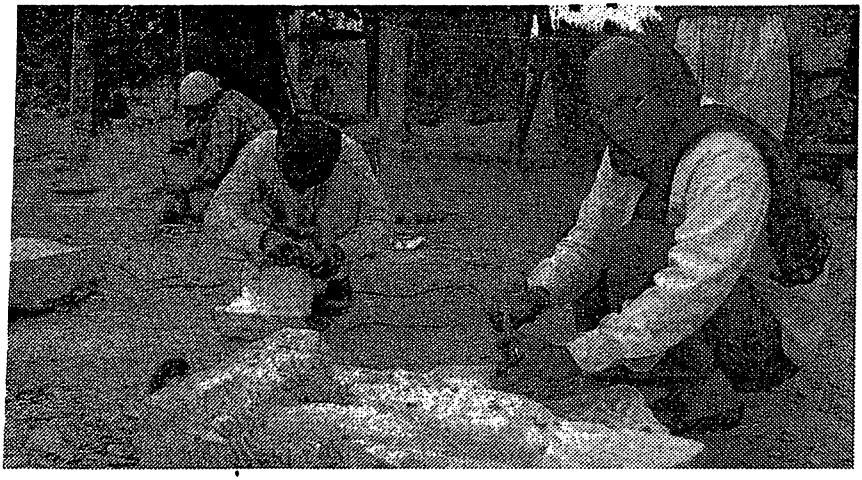

भी जुड़ा हुआ है। छींतोली गाँव बहुत पहले से ही मूर्ति कला के लिए मशहूर रहा है। यहाँ मूर्तिकारों के लगभग पचास–साठ परिवार हैं। ये लोग शिल्प कला व मूर्ति कला के विशेषज्ञ हैं। यहाँ मूर्तियों के लिए अधिकांश पत्थर भैंसलाणा से आता है। भैंसलाणा का पत्थर काला सलेटी रंग का होता है। यहाँ पर झिरी की खानों से कुछ सफेद मार्बल भी आता है। भैंसलाणा के काले पत्थर के शिवलिंग ज्यादा बनाये जाते हैं। वैसे इस पत्थर की हनुमान जी, दुर्गा जी, गणेश जी व अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियाँ भी बहुत बनती हैं। पहले यहाँ मूर्ति कला के अच्छे विशेषज्ञ रहे हैं। और आज भी इस कला के सभी कलाकार अच्छी–अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं, जिनमें से सूरज शर्मा व रोशन शर्मा को इस कला में विशेष महारत हासिल है।

इस गाँव के पश्चिम की पहाड़ी में पिछले दस साल से हो रहे भयानक खनन से दुःखी होकर यहाँ के हनुमान शर्मा (मूर्तिकार) बताते हैं कि यहाँ पर होने वाले खनन से गाँव के सभी लोग बहुत परेशान हैं। वे एक संगठन बना कर इसके विरुद्ध न्यायालय में न्याय की माँग भी कर रहे हैं। पर अभी तक सिवा आश्वासन के अन्य कोई कार्रवाही नहीं हुई है । लेकिन वे अभी भी इस अवैध खनन के विरोध में लगे हुए हैं। यहाँ के वैद्य विश्वम्भर दयाल जी जोशी आयुर्वेद की अच्छी जानकारी रखते हैं। ये आध्यात्मिक क्षेत्र में भी विशेष विद्वत्ता–प्राप्त हैं। इसके अलावा इन्हें ऐतिहासिक व सामाजिक विषयों में भी विशेष रुचि है। वे अपने पुराने दस्तावेजों व अपनी स्मृति के आधार पर बताते हैं कि छींतोली गाँव पहले किसी जमाने में मीणों की बस्ती थी। इन्हीं मीणाओं में छींतर नाम का एक प्रसिद्ध व्यक्ति हुआ था। उसके नाम पर ही इस गाँव का नाम छींतोली पड़ा। शनैः शनैः ये मीणा यहाँ से पलायन कर गए।

वर्तमान में इन मीणाओं के वंशज अचरोल गाँव में भी रहते हैं। मीणाओं के बाद यहाँ पर गुर्जर आये। उन्हीं गुर्जरों में से कुछ लोग जादू का बास में जाकर बस गए। गुर्जरों के बाद यहाँ पर मूर्तिकार आये। ये मूर्तिकार वास्तव में तो आदि गौड़ ब्राह्मण ही हैं। पर इनके पूर्वजों ने पूर्वकाल में किसी कारण से मूर्ति कला व शिल्प कला का काम अपना लिया था।

सूरजमल की ढाणी

छींतोली के पास ही सूरजमल की ढाणी है, जिसमें गुर्जर, राजपूत व अन्य जातियाँ भी रहती हैं। यहाँ के श्री श्रमणसिंह व बरड़ा की ढाणी के श्री रामचन्दर गुर्जर ने भी पानी

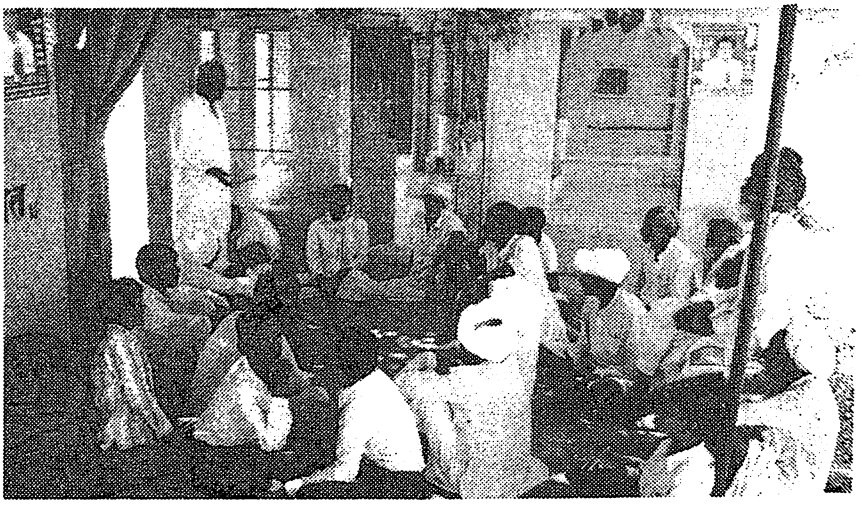

के बड़े अच्छे–अच्छे काम किये हैं। यहाँ पर गढ़बसई के श्री महेशचन्द शर्मा व फतेहसिंह जी भी साबी–संसद की तैयारी हेतु गये थे।

रामपुर

साबी नदी जलागम क्षेत्र में बानसूर के रामपुर चौहान गाँव के आस–पास गुढ़ा, कल्याणपुरा आदि गाँवों में भी पानी के बहुत अच्छे काम हुए हैं। प्रारम्भ में यहाँ पर

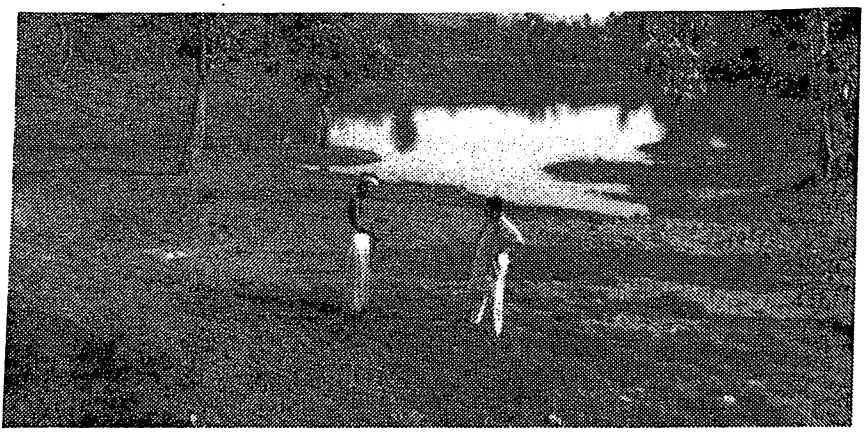

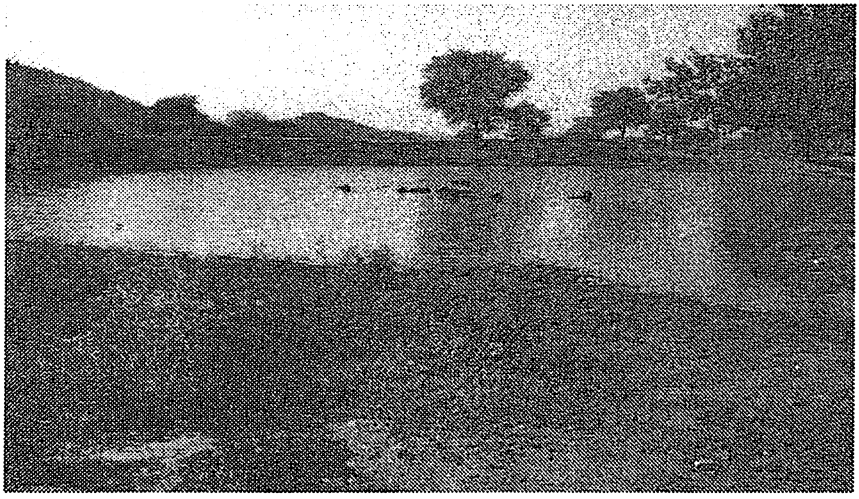

संस्था के कार्यकर्ता श्री जगदीश गुर्जर ने श्री मामराज चौधरी व श्री भूप सिंह के सहयोग से बहुत सारे जोहड़–बाँध बनवाये, जिसमें गाँव के सभी लोगों की भूमिका रही। मामराज जी व भूप सिंह जी अपने–अपने कामों में संलग्न रहते हुए भी सार्वजनिक कार्यों में हमेशा समय देते रहे हैं। बाद में वहाँ पर संस्था के कार्यकर्ता श्री श्रवण शर्मा, हीरा लाल गुर्जर व हनुमान मीणा ने भी जगदीश गुर्जर के निर्देशन में जल संरक्षण तथा जंगल संरक्षण के अच्छे काम किये। उल्लेखनीय है कि यहाँ के जंगल से यहाँ के कुछ लोग लकड़ियाँ काटकर ऊँटों पर लादकर बाहर बेच कर आते थे और जंगलात विभाग के कर्मचारियों के भी काबू में नहीं आ रहे थे। संस्था के कार्यकर्ताओं ने इस क्षेत्र के गाँवों में संगठन बनाकर ऊँट वालों पर रोक लगवाई। वहाँ के जंगलात कर्मचारी जो ऊँट वालों से मिले हुए थे, उन पर भी सख्ती की। काफी मशक्कत के बाद आखिर गाँव का जंगल बच पाया।

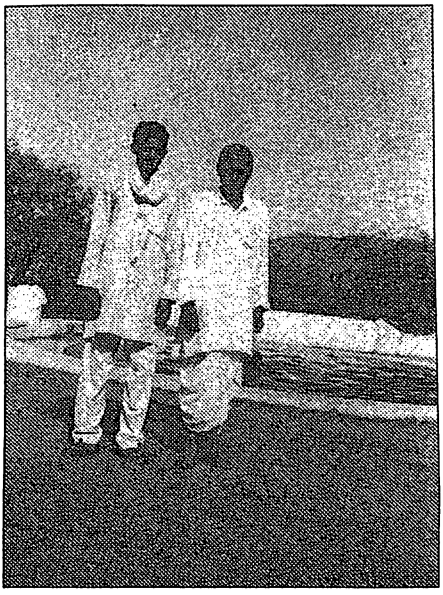

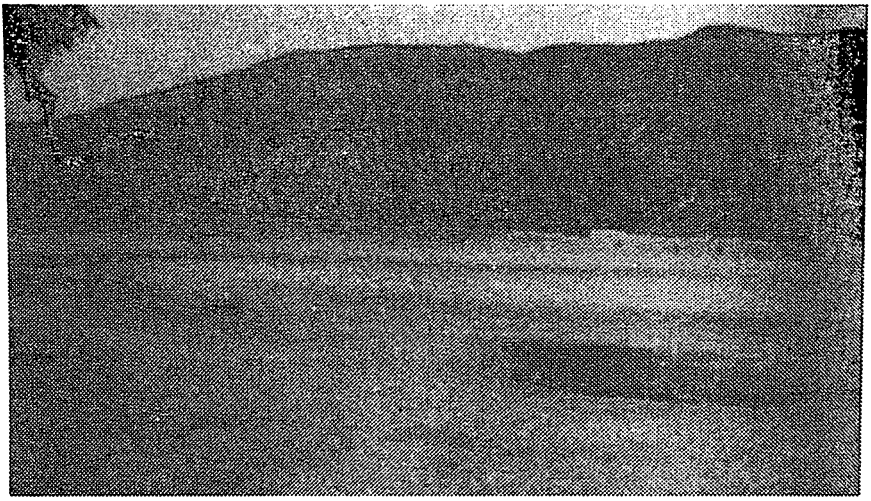

लेकड़ी

बानसूर क्षेत्र में एक गाँव है लेकड़ी। लेकड़ी के ऐतिहासिक जोहड़ 'नीमड़ीवाला' में 1995 ई. में एक पुराना पीपल का पेड़ गिर गया था। उस पर ग्राम पंचायत व तहसील के कारिन्दों ने अपना हक़ जमाने की कोशिश की। कुछ अन्य लोगों ने भी इस पर अपना–अपना हक जताने का प्रयास किया। पेड़ बहुत पुराना था, जिसे कभी इसी गाँव के रामजीलाल धानका व उनके छोटे भाई सूरजभान धानका (वर्तमान विधायक) के पूर्वजों ने धर्मार्थ लगाया था। गिरे हुए इस पेड़ को निरर्थक जाते देख कर रामजीलाल धानका ने कहा कि यह पेड़ तो हमारे बुजुर्गो द्वारा धर्मार्थ लगाया हुआ था, इसे हम नहीं ले जाने देंगे। हम तो इसे बेच कर इसके पैसे को इसी जोहड़ की मरम्मत में लगाएँगे। यह कह कर उन्होंने उस पेड़ को बेच दिया और उसी जोहड़ का काम कराने के बारे में सोचने लगे, जिसमें वह पेड़ खड़ा था।

संयोग से उन्हीं दिनों तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्री मुरारी लाल शर्मा अपने जल चेतना अभियान के दौरान वहाँ पहुँच गए। उन्होंने गाँव वालों को बताया कि यदि चौथाई श्रमदान सामूहिक रूप से पूरे गाँव का हो तो इस जोहड़ में हम तीन–चौथाई सहयोग संस्था की तरफ से कर सकते हैं। इस बात को सुन कर गाँव वालों ने पूरे गाँव की मीटिंग की। मीटिंग में तय हुआ कि जो पैसे नीमड़ीवाला

जोहड़ में गिरे हुए पीपल के पेड़ को बेचने से मिलें हैं, उनमें गाँव के हर घर से उगाही कर के और भी पैसे मिला लेंगे। फिर इस राशि को श्रमदान के रूप में दे देंगे। तीन–चौथाई सहयोग संस्था की तरफ से था ही; काम शुरू हो गया। गाँव के लोगों ने भी काम किया और ट्रैक्टरों से भी काम हुआ। जीर्ण–शीर्ण हो चुका और मिट्टी से भर चुका जोहड़ ठीक तरह से बन कर तैयार हो गया। जोहड़ को एक नये रूप में देख कर गाँव के सब लोगों को खुशी हुई।

पर सबसे ज्यादा खुशी हुई यहाँ के रामजीलाल धानका और मातादीन सिंह जी को। जब तक भी इस जोहड़ पर काम चलता रहा, रामजीलाल धानका अपना पूरा समय

इसकी देखरेख व व्यवस्था में लगाते थे। इनके साथ स्व. मातादीन सिंह जी भी अपना समय देते थे। मातादीन सिंह जी संस्था के कार्यकर्ता मुरारी लाल व अन्य साथियों को रहने खाने में भी अच्छी मदद करते थे और उन्हें अपने परिवार के सदस्य की तरह से रखते थे।

लेकड़ी के 'नीमड़ी वाला जोहड़' के पास एक बावड़ी है, जिसे 'बोदन भगत की बावड़ी' के नाम से जाना जाता है। बोदन भगत का जन्म इसी गाँव में गुर्जर परिवार में हुआ था। प्रारम्भ से ही वह धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इन्होंने अपने विवाह के लिए अपने माँ

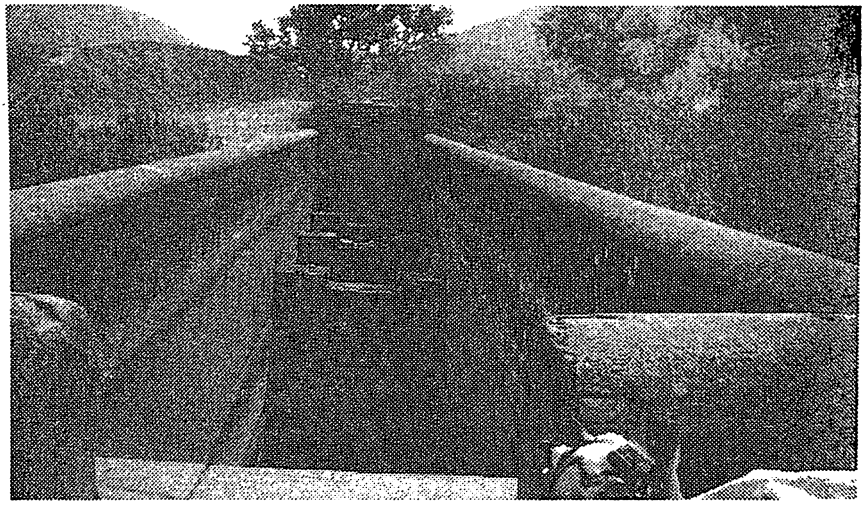

बाप को मना कर दिया था। उसके बाद वे पूरी तरह से इसी जोहड़ पर धूणा डाल कर भक्ति भाव से लगे। बाद में उन्होंने इसी जोहड़ के पास एक बावड़ी का भी निर्माण करवाया, जो आज भी विद्यमान है।

कहते है, इसी गाँव में एक सेठ सेठानी भी रहते थे। सेठानी भक्तिमती और पतिव्रता थी। वह प्रतिदिन सेठ जी के चरण धोकर उसका चरणामृत लेकर ही भोजन करती थी। एक बार सेठ जी को कहीं बाहर जाना पड़ गया। वे शाम तक नहीं लौटे। सेठानी ने भोजन नहीं किया। सेठ का भतीजा सेठानी (अपनी चाची) से द्वेषभाव रखता था। उसने सेठानी को सीढ़ियों पर से धक्का दे दिया। उसको चोट लगी। दुःखी होकर सेठानी ने शाप दिया कि जा! तेरा वंश नहीं चलेगा। सेठानी पतिव्रता थी इसलिए उसका शाप लग गया।

उधर सेठजी का वह भतीजा बोदन भगत की शरण में चला गया। बोदन भगत ने अपनी साधना के अहंकार में आकर वरदान दे दिया कि जा ! तेरे नौ महीने बाद बेटा हो जायेगा। पर नौ महीने बीत गये, उसके बेटा नहीं हुआ। और न ही बेटा होने के कोई लक्षण दिखाई दिये। तब बोदन भगत ने प्रतिज्ञा की कि जब तक उसे (सेठ के भतीजे को) पुत्र न हो जायेगा, तब तक मैं भोजन नहीं करूँगा। बोदन भगत उसी जोहड़ व बावड़ी के पास स्थित अपने धूणे पर ही अन्न–जल त्याग कर बैठ गया। उसको अपनी भक्ति का अहंकार था। इसलिए उसका वरदान सफल नहीं हुआ। और सेठानी

भक्तिमती और पतिव्रता थी; इसलिए उसका शाप सफल हो गया। अन्न–जल त्याग के कारण बोदन भगत का स्वर्गवास हो गया। पर 'नीमड़ी वाला जोहड' पर 'बोदन भगत की बावड़ी' आज भी विद्यमान है।

बबेड़ी

बानसूर क्षेत्र में वर्षा–जल–संरक्षण के बहुत सारे काम हुए हैं। इस क्षेत्र में बबेड़ी और इसके आसपास के गाँवों में बड़े अच्छे–अच्छे काम हुए हैं। बबेड़ी गाँव में पानी के काम करवाने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका यहाँ के सरपंच जसवन्त गुर्जर व रामतलाई आश्रम के 'महन्त श्री अरुण भारती जी महाराज' की रही है।

श्री अरुण भारती जी महाराज ने पाँच वर्ष की अवस्था में ही संन्यास ले लिया था। फिर दस वर्ष तक वे अपने गुरुजी की सेवा में रहे। इसके बाद वे अलवर जिले के विभिन्न तीर्थस्थलों पर घुमक्कड़ साधु के रूप में घूमते रहे, जहाँ उन्हें तरह–तरह के अच्छे–बुरे अनुभव होते रहे। सन् 1975 ई. से वे यहाँ रामतळाई पर आश्रम बना कर स्थाई रूप से रहने लग गए।

35 वर्ष पहले की स्थिति को याद कर के 'बाबा अरुण भारती जी' कहते हैं कि "1975 में जब मैं यहाँ आया था, तब यहाँ पर (रामतळाई में) 50 बीघा का जंगल

था। जंगल में कैर, जाळ, हींच, जाँट व पीपल आदि प्रजातियों के पेड़ बहुतायत में थे। उन दिनों तळाई में लगभग आठ महीने पानी रहता था। कुछ वर्षो बाद यह तळाई जीर्ण–शीर्ण होकर टूट गई। उन्हीं दिनों संयोग से तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता मुरारी लाल शर्मा से मेरा सम्पर्क हो गया। मुरारी शर्मा ने मुझे संस्था के बारे में पूरी जानकारी दी और यह भी बताया कि जहाँ पर गाँव के लोग स्वयं पानी के लिए काम करते हैं, वहाँ हमारी संस्था भी उनकी मदद करती है। आश्रम व गाँव के लोगों के सहयोग से रामतळाई का जीर्णोद्धार किया गया। प्रारम्भ में तो इसमें अच्छा पानी भरता रहा, पर बाद में दुर्योग से निरन्तर अकाल पड़ते रहने के कारण तळाई पूरी नहीं भरती थी। इसलिए तळाई प्रायः सूखी रहने लगी। यदि बरसात नियमित व पर्याप्त होती रहे तो इसमें पानी बारहों महीने भरा रह सकता है।''

आगे वह कहते हैं कि ''35 वर्ष पूर्व जब मैं यहाँ आया था, तब मैं यहाँ से थोड़ी ही दूर मुख्य साबी नदी पर शौच के लिए जाता था, उस समय ऊपर से सूखी दिखाई देने वाली नदी में से बालिश्त भर रेत हटाने पर ही शुद्ध पानी मिल जाता था। क्योंकि तब बरसात के बाद भी नदी कई महीनों तक बहती थी। अब चूँकि जगह जगह पर बोरिंग लगते जा रहे हैं और बरसात भी पर्याप्त नहीं होती, इसलिए भू–जल–स्तर में निरन्तर गिरावट आती जा रही है। यदि अच्छी बारिश होती रहे, पानी का दोहन अधिक न हो और जल–संरक्षण के काम इसी तरह से होते रहें, तो इस क्षेत्र में कभी भी पानी की कमी नहीं आयेगी। लेकिन जरूरत है सकारात्मक सोच की और संगठित होकर शामलाती काम करने की। इस गाँव में संस्था व ग्राम समुदाय द्वारा पानी के काफी अच्छे–अच्छे काम हुए हैं।''

बबेड़ी गाँव में सबसे पहले यहाँ के पीर बाबा वाले जोहड़ में पानी का काम किया गया। यह जोहड़ गाँव के पास ही स्थित है। पानी भर जाने पर यह सबसे ज्यादा पशुओं के काम आता है। इस जोहड़ के पास में ही बसे न्हार्‌या बाबा कहते हैं कि यह जोहड़ पशुओं के काम तो आता ही है, साथ ही इसमें पानी भरने पर आसपास के कुओं का जल–स्तर भी ऊपर आता है।

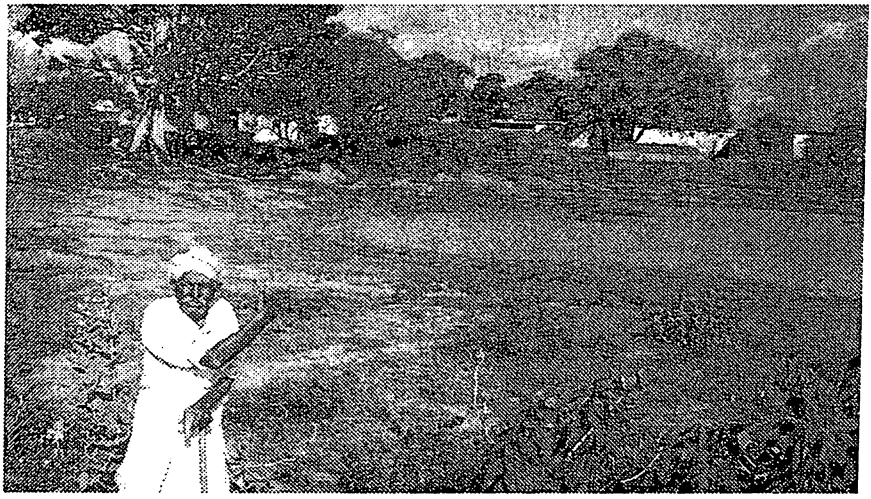

पीर बाबा के जोहड़ के बाद इस गाँव में काळी घोड़ी वाली जोहड़ी का काम हुआ। यह जोहड़ गाँव से जब रामतळाई की तरफ जाते हैं, तब रास्ते में आता है। इसमें भी गाँव के पशु पानी पीने आते हैं। इसके थोड़ा आगे जाने पर रामतळाई आश्रम आता है; जहाँ पर एक पुराना जोहड़ रामतळाई नाम से मशहूर है। इस आश्रम में 'बाबा श्री अरुण भारती जी महाराज' विराजते हैं। इन्होंने इस तळाई का काम बहुत ही सूझबूझपूर्वक कराया। और चूँकि यहाँ पर आश्रम में आसपास व दूर-दूर के लोग बड़ी संख्या में

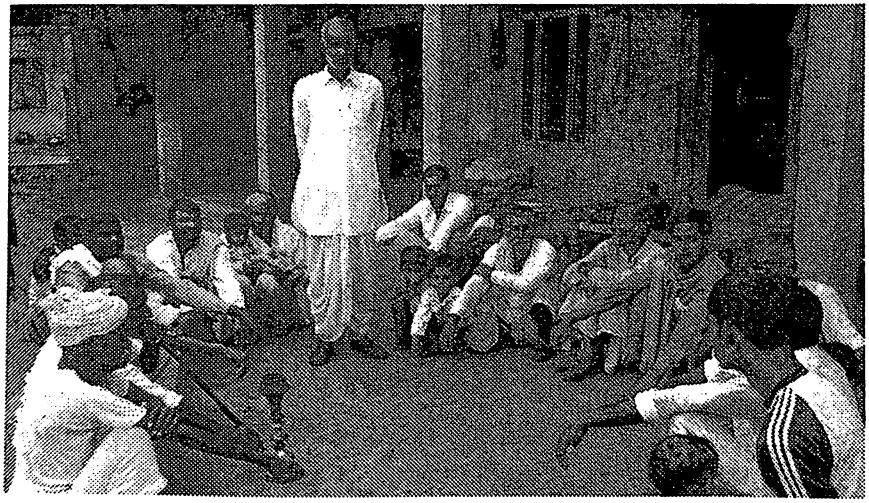

आते हैं; इसलिए यहाँ पर होते हुए काम को तथा हो चुके काम को देख कर वे अपने यहाँ भी पानी के काम की माँग करने लगे। फलस्वरूप आसपास के गाँवों में भी जगह-जगह पर पानी के काम होने लगे। संस्था के कार्यकर्ता मुरारी लाल शर्मा अधिकांश समय इस आश्रम पर ही रुकते थे। यहाँ रहते हुए वे गाँव-गाँव में जाकर जोहड़, बाँध, एनीकट आदि के काम कराने लगे। धीरे-धीरे कर के इस क्षेत्र के काफी सारे गाँवों में पानी को सहेजने का काम होता चला गया।

गाँव का इतिहास

बबेड़ी गाँव का इतिहास काफी पुराना है। बबेड़ी गाँव को सम्वत् 1471 ई. की वैशाख सुदी तीज शनिवार को पूतली गाँव से उठ कर आये हुए कसाणा गोत्र के गुर्जर 'देवासी' ने आबाद किया था। देवासी का पिता राहड़ था, जो मोरोड़ी के राम सिंह सूद की बेटी खम्मो को ब्याहा था। बबेड़ी में कसाणा गोत्र के भँवर राव व ऊखलेड़ी में सूद गोत्र के एक अन्य वीर गुर्जर दोनों बड़े ताकतवर हुए हैं।

एक बार वे मोरोड़ी गाँव के तत्कालीन नम्बरदार रावत गोत्र के गुर्जर के पास गए। उस समय वह रावत नम्बरदार अपने गोडा एकठा कर के (घुटने मोड़ कर) उदास होकर कुछ सोच रहा था। उसे चिन्तित देख कर बबेड़ी के भँवर राव कसाणा व ऊखलेड़ी के सूद ने उससे पूछा कि ''ऐसे गोडा एकठा कर के उदास-उदास कैसे बैठे हो ? तब रावत नम्बरदार ने जवाब दिया कि पड़ोसी गाँव का 'पीपा' नाम का एक अहीर हमारे गाँव के जंगल में गायों को जबरन चरा कर ले जाता है। वह नागा (ओछा) है। समझ में नहीं आ रहा, क्या करें ? यह सोच कर ही मैं परेशान हूँ। तब बबेड़ी के भँवर राव कसाणा व ऊखलेड़ी के सूद ने कहा कि अब आप इस बात की चिन्ता मत करो; इसे हम पर छोड़ दो, इसे हम देख लेंगे। यह बात किसी तरह से पीपा अहीर को भी मालूम हो गई।

संयोग से एक बार पीपा अहीर बैलगाड़ी में रखे रुई के बोरों में छुप कर नारनौल से आ रहा था। जब वह बबेड़ी के पास मरूकड़ी पहाड़ी के पास से गुजर रहा था, तब बबेड़ी के भँवर राव कसाणा व ऊखलेड़ी के सूद ने जाँच करने के लिए रुई के बोरों में सेल घुसेड़-घुसेड़ कर देखा, तो रुई में से रोने की आवाज आई और खून भी निकला। तब रुई के बोरों को खोल कर देखा तो वह पीपा अहीर निकला। तत्काल उसका सिर काट

लिया गया। वह कटा हुआ सिर उन्होंने मोरोड़ी के नम्बरदार रावत को ले जाकर दे दिया; और कहा कि अब हमने आपके भय को हमेशा के लिए दूर कर दिया है। रावत बहुत खुश हुआ और उनका बड़ा अहसान माना। फिर उनके अहसान का बदला चुकाने की तरकीब सोचने के लिए उसने अपने परिवार वालों से अलग जाकर बातचीत की। सबने भलाई का बदला भलाई से ही चुकाने की बात तय की। जिसके अनुसार मोरोड़ी के नम्बरदार रावत ने अपनी एक बेटी 'बेड़ी बाई' का विवाह बबेड़ी (तब इस गाँव का नाम यह नहीं था) के भँवर राव कसाणा से कर दिया। और तभी से उसी 'बेड़ी बाई' के नाम पर इस गाँव का नाम 'बबेडी' पड़ गया।

रावत ने अपनी दूसरी बेटी का विवाह ऊखलेड़ी (तब इस गाँव का नाम भी यह नहीं था) के उस 'सूद' गोत्र के गुर्जर से कर दिया। उस विवाह में बेटी के पिता उस रावत ने दहेज में सोने का ऊखल और मूसल दिया। सोने का ऊखल देने के कारण उस गाँव का नाम ऊखलेड़ी पड़ गया। मोरोड़ी के रावत ने अपनी उन दोनों बेटियों को छः–छः हजार बीघा जमीन भी दी। इन पुराने सम्बन्धों के कारण आज भी इन दोनों गाँवों (बबेड़ी और ऊखलेड़ी) के लोग आपस में सम्बन्ध (रिश्ते) नहीं करते और भाईचारा ही रखते हैं। इस कहानी के कुछ अंश झीड़ा की ढ़ाणी के प्रभु, धाड़ा व जगदीश ने बताए और कुछ अंश बबेड़ी के सरपंच जसवंत गुर्जर की डायरी से लिए गये है।

मोरोड़ी

बबेड़ी के पास ही मोरोड़ी गाँव है। यहाँ पर भी वर्षा–जल को सहेजने का बड़ा अच्छा काम हुआ है। यहाँ के फूलचन्द 'कँवल' (धानका) पानी के काम में सबसे ज्यादा रुचि रखते हैं। इनको यह गुण पुश्तैनी तौर पर मिला है। इनके दादा ने वर्ष 1939 ई. में गोघाट नाम से एक बाँध मोरोड़ी गाँव के पूर्व दिशा में बनाया था। कालान्तर में वह बाँध टूट गया।

बाद में वर्ष 1997 ई. में तरुण भारत संघ के सहयोग से इस बाँध (जोहड़) का पुनः जीर्णोद्धार किया गया। वर्तमान में इस बाँध (जोहड़) को धानका वाला जोहड़ (या बलाई वाला जोहड़) के नाम से जानते हैं। यद्यपि पिछले कई वर्षों से लगातार पर्याप्त वर्षा न होने के कारण वर्तमान में इसमें पानी नहीं है ; पर यदि अच्छी वर्षा होती है तो इस जोहड़ में पानी खूब भरता है। इसमें जब पानी भरता है तब पशु–पक्षियों को तो

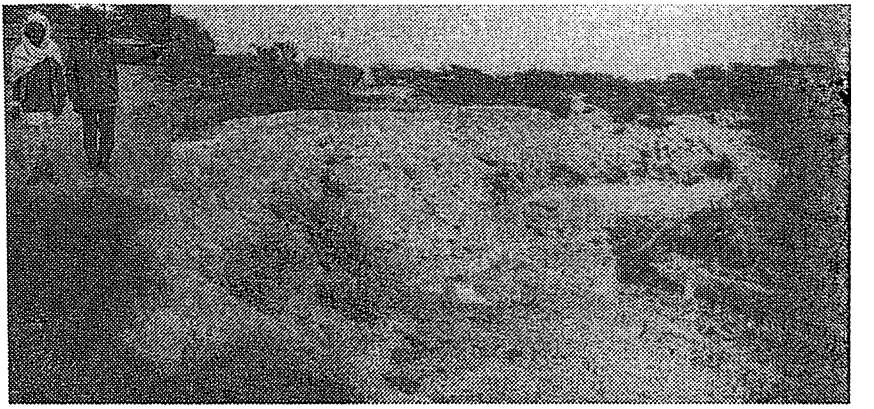

पानी मिलता ही है, आसपास के कुओं का जल–स्तर भी ऊपर आता है। यह एक ऐतिहासिक जोहड़ है। इसके प्रथम निर्माण सम्बन्धी पुराने दस्तावेज यहाँ के फूलचन्द धानका के पास से देखने को मिले हैं।

उन दस्तावेजों के अनुसार इस जोहड़ को सर्वप्रथम 1939 ई. में इसी गाँव के मान

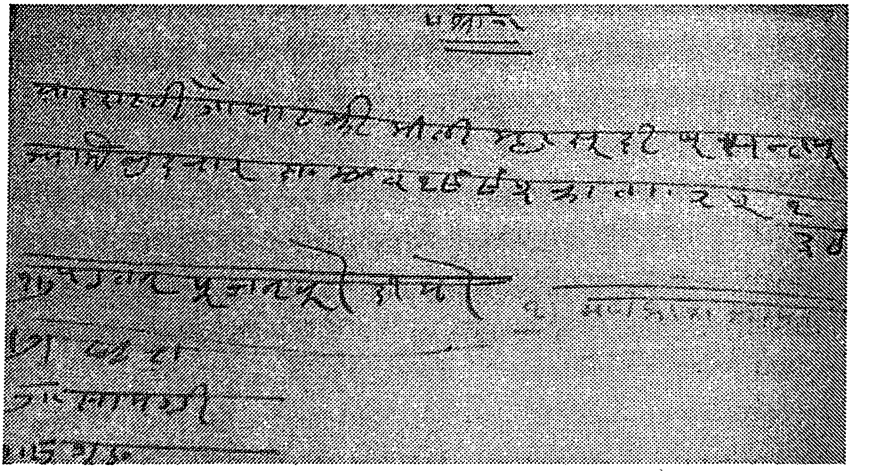

सिंह धानका के पुत्र नत्थूराम धानका ने बनवाया था। जब यह बाँध पहली बार वर्षा–जल से भरा तब नत्थूराम धानका व उनकी पत्नि (फूलचन्द धानका के दादा व दादी) ने अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने सिर पर गुड़ की भेली रख कर भरे हुए जोहड़ में प्रवेश किया और उसमें स्नान भी किया था। इस बात से उस समय की उनकी जल के प्रति पवित्र भावना के दर्शन होते हैं। इस भावना को आज भी फूलचन्द धानका

बरकरार रखे हुए हैं। इन्होंने ही इस पुराने व टूट चुके जोहड़ का तरुण भारत संघ व गाँव वालों के सहयोग से जीर्णोद्धार करवाया है।

इसके अलावा यह सामाजिक कार्यो से भी जुड़े रहते हैं। पानी के काम को आगे बढ़ाने हेतु तरुण भारत संघ से सम्पर्क बनाने की प्रेरणा इन्हें इनके रिश्तेदार लेकड़ी गाँव के रामजीलाल धानका व सूरजभान धानका से मिली। सूरजभान धानका वर्तमान में विधायक हैं। इन्होंने ही संस्था के कार्यकर्ता मुरारी लाल शर्मा को मोरोड़ी गाँव के फूलचन्द धानका के पास पहुँचाया था।

गाँव में पानी के काम को फैलाने में फूलचन्द धानका के साथ इसी गाँव के पूरणमल मिस्त्री (खाती) का सहयोग सबसे ज्यादा रहा है। पूरणमल मिस्त्री ने संस्था के कार्यकर्ता मुरारी लाल शर्मा के साथ गाँव का संगठन बनाने व लोगों में जल–चेतना लाने का काम तो किया ही, साथ ही उन्हें बड़ी ही श्रद्धा व सम्मान के साथ अपने परिवार के सदस्यों की तरह से रखा भी। वह आज भी उसी तरह से सेवा का भाव रखते हैं। पूरणमल मिस्त्री (खाती) व फूलचन्द धानका की मोरोड़ी गाँव के संगठन व जल–चेतना में समान भागीदारी रही है। इन दोनों को गाँव के सार्वजनिक कार्यो में गाँव के सभी लोगों का पूरा साथ रहता है।

उक्त गाँवों के अलावा भी साबी नदी जलागम क्षेत्र में बहुत सारे ऐसे गाँव हैं, जहाँ के लोगों ने संस्था के साथ मिल कर बरसात के पानी को धरती के पेट में बैठाने का काम किया है। उन में से प्रमुख हैं:– बीलवाड़ी, बयावास, लाखाळा, टोरड़ा, तालू का बास, देवली, गुढ़ा, नाथूसर, ढिगारिया, हींसला, मानकोट, तिबारा, बसई जोगियान, नारायणपुर, खरकड़ी, बीलाट, बिलाली, बड़ागाँव, बुर्जा, पाली, चतरपुरा, बिशालू, फूट्या जोहड़ा, महणपुर, मुगलपुर, देवसरण, नारोळ, गुवाड़ाँ, लाडपुर, आदि। इन सभी गाँवों में पानी को सहेजने के बहुत अच्छे–अच्छे काम हुए हैं। इन सभी गाँवों में बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जिन्होंने अपने जीवन में पानी और जंगल को बचाने के काम को ही सर्वश्रेष्ठ काम माना है। उनके द्वारा किये गये कामों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

मेवात में जल संरक्षण कार्य

शादीपुर

शादीपुर गाँव मेवात क्षेत्र का सबसे दुर्गम गाँव है। कहा भी जाता है कि जिसने शादीपुर व आदूपुर गाँवों को नहीं देखा, उसने मेवात ही क्या देखा ? वर्ष 1991 में जब संस्था के कार्यकर्ता जगदीश गुर्जर व रामेन्द्रसिंह वहाँ जाते थे, तब गाँव के लोगों के साथ बरसात के पानी को रोकने के बारे में भी चर्चा चलती थी। चर्चा के दौरान लोगों ने बताया कि यहाँ पानी की बड़ी समस्या है। तब उन्होंने गाँववालों को बताया कि यदि यहाँ पर कोई उपयुक्त जगह हो तो कोई अच्छा–सा बाँध बना लो।

गाँव के लोगों ने बताया गाँव के दक्षिण में बाँध बनाने की एक अच्छी जगह तो है, पर वहाँ मिट्टी रेतीली है, जिससे कटान हो सकता है। इसलिए वहाँ बाँध बनाने में खतरा भी है और खर्चा भी ज्यादा है। गाँव के लोग इतना ज्यादा खर्चा वहन नहीं कर सकते। फिर जब उन्हें बताया गया कि पानी के काम के लिए थोड़ा बहुत सहयोग तो हमारी संस्था भी कर सकती है। पर असल काम तो गाँव के लोगों को ही मिल कर करना होगा। बाँध की पाल मजबूत बनाएँगे, जिससे टूटने का कोई खतरा नहीं रहेगा। लोगों ने बताया कि मिट्टी का काम तो हम स्वयं कर लेंगे, पर पिचिंग के काम में आप पत्थर व चिनाई की मदद करें, तो बाँध बन सकता है।

बात दोनों तरफ से तय हो गई। काम शुरू हो गया और बड़े ही उत्साह से पूरा भी हो गया। बाद में पाल की पिचिंग के लिए कुछ पत्थर भी संस्था की तरफ से डलवाये गये। पर किन्हीं कारणों से पिचिंग का काम नहीं हो पाया।

पहली बरसात में ही जब इस बाँध में पानी भरा तो उसका लाभ पास के कुओं में भी हुआ और पशुओं को भी पीने के लिए पानी मिलने लगा। इस बाँध के बनने के बाद यद्यपि अधिकतर वर्षों में अकाल ही रहा, पर फिर भी बीच–बीच में कुछ सालों में बारिश होती रही, जिससे बाँध में पानी भरता रहा और जमीन का जल–स्तर ऊपर आता रहा।

बाँध के बनने के बाद जब सी. एस. ई. के डायरेक्टर श्री अनिल अग्रवाल और तरुण भारत संघ के श्री राजेन्द्र सिंह जी शादीपुर की ग्राम सभा में गये थे, तब लोगों ने उन्हें गाँव के श्रमदान से बने बाँध से हुए लाभ के बारे में बताया कि 'अब हमारे गाँव में पीने के पानी की समस्या नहीं है। पशुओं के लिए भी पानी उपलब्ध है और लोगों को भी पानी मिल रहा है। इसके अलावा अब खेती भी अच्छी होने लगी है। श्री अनिल अग्रवाल ने भी गाँव के प्रयास को सराहा और कहा कि अगर देश के सभी गाँव शादीपुर की तरह से मिलकर काम करने लग जायें तो देश की हालत ही सुधर जायेगी। भाई साहब ने भी लोगों को भविष्य में अपने गाँव के संगठन को बनाये रखकर जनहित के कामों को करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें पानी व जंगल बचाने के काम को प्राथमिकता देने की बात कही। गाँव के लोगों ने उनकी सीख को भविष्य में कार्य रूप में क्रियान्वित करने की दिलाशा दी। फिर आगन्तुक मेहमानों को भोजन कराकर गाँव के लोगों ने भी भोजन किया और बाँध की सफलता की खुशी में भोजन के लिए बनाई खीर को तबर्रुक (प्रसाद) की तरह लूट लूट कर मजे से खाया था। यह भी उनके द्वारा खुशी को प्रकट करने का एक तरीका था।

काफी अर्से के बाद दिनांक 2 जनवरी 2010 को भाई साहब श्री राजेन्द्र सिंह, बघोला (हरियाणा) के सरपंच इब्राहिम खान व संस्था के कार्यकर्ताओं के साथ घने कोहरे में प्रातःकाल जब पुनः शादीपुर पहुँचे तो पहले बाँध को देखा। फिर गाँव में जाकर लोगों से बातचीत हुई। श्री युनूस की बैठक में मीटिंग हुई। बातचीत में लोगों ने बताया कि बाँध बनने से पहले यहाँ

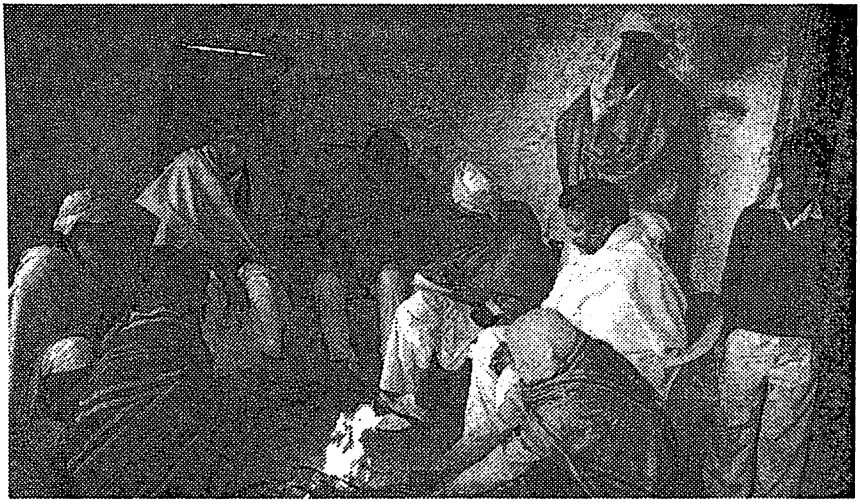

पर केवल बरसाती फसल ही कभी–कभी होती थी। पर अब यहाँ पर रबी की फसल में गेहूँ, जौ, प्याज आदि भी होने लगे हैं। पहले हमें अनाज खरीदना पड़ता था, पर अब तो हम अनाज बेच भी देते हैं। सौ बातों की एक बात कि यह बाँध तो हमारे लिए एक वरदान सिद्ध हुआ है।'

गाँव की मीटिंग में यहाँ के हाजी फजरू, युनूस साहब, लियाकत, हासन, जबरदीन, आसू, रती, साहून, खुर्शीद, रफीक, उस्मान, मुश्ताक, शाहिद तथा ढाकपुरी के हारून भी थे।

हारून ने हमें पाण्डवकालीन वह कुआँ भी दिखाया, जिसे कालान्तर में कोटला के राजा बहादुर नाहर खाँ के चिस्ती ने रास्ता भूल जाने पर खोज निकाला था। उस समय यहाँ घना जंगल था। चिश्ती ने इस कुएँ का पानी मशक में भर कर जब राजा को भेंट किया तो वह पानी राजा को अच्छा लगा। चिश्ती से पूरी जानकारी लेकर राजा ने उस कुएँ का जीर्णोद्धार कराया। आज भी इस कुएँ को पुराना कुआँ कहते हैं।

उन्होंने बताया कि मुल्क तकसीम होने पर हमारे ज्यादातर कुटुम्बी लोग पाकिस्तान चले गये। बस हम दो भाई ही यहाँ रहे। हम भी 19 दिसम्बर 1947 को गांधी जी के घासेडा आने के कारण ही यहाँ रुक पाये। युनूस के पिता हाजी फजरू जो काफी उमर–रशीदा हैं, ने बताया कि मुल्क तकसीम के वक्त मैं जवान था। हम लोग भी पाकिस्तान जाने के लिए रेवासन गाँव तक पहुँच गये थे। पर गांधी जी के कहने पर वापस लौट आये। हाजी फजरू आगे कहते हैं कि मुल्क तकसीम होने के बाद भी गांधी जी की तमन्ना थी कि मैं पाकिस्तान तकसीम के फैसले को पुनः रद्द करवाऊँ, पर वे अपनी ख्वाहिश पूरी न कर सके, और 30 जनवरी 1948 को गोली से मार दिये गये।

बाझोट

बाझोट गाँव में तीन बाँध बने हैं जो बहुत ही उपयुक्त जगह पर बने हैं। यहाँ के काम में 'प्रभु बाबा' का सहयोग सबसे ज्यादा रहा है। पिछले दो साल के अकाल के बावजूद

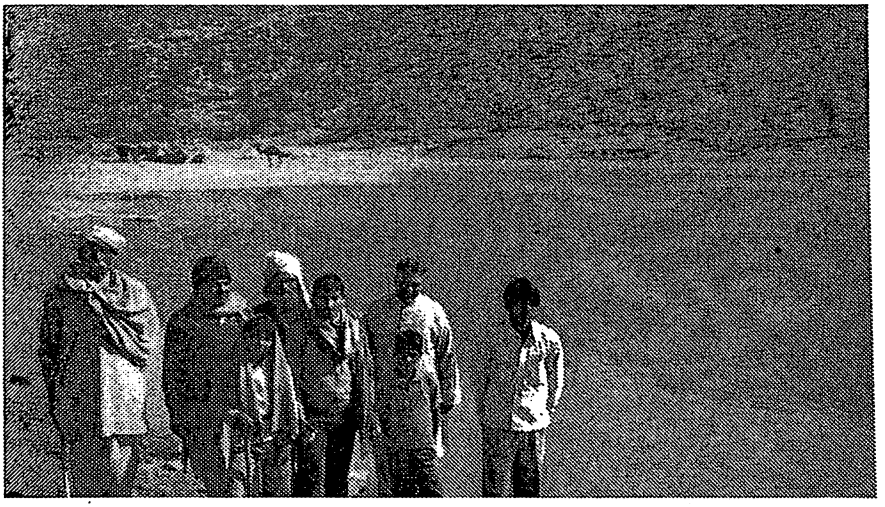

इस बाँध में इस साल भी पानी था। यहाँ पर आस–पास के गाँवों के सभी पशु चरने के लिए आते हैं। ये पशु इसी बाँध में पानी पीते हैं। यहाँ पर मिले ग्वाले कहते हैं, ''यू तो सब तैं बड़ो पुन्न को काम है।'' प्रभु बाबा भी अपने बाँध में भरे हुए पानी को देख कर बहुत खुश होते हैं।

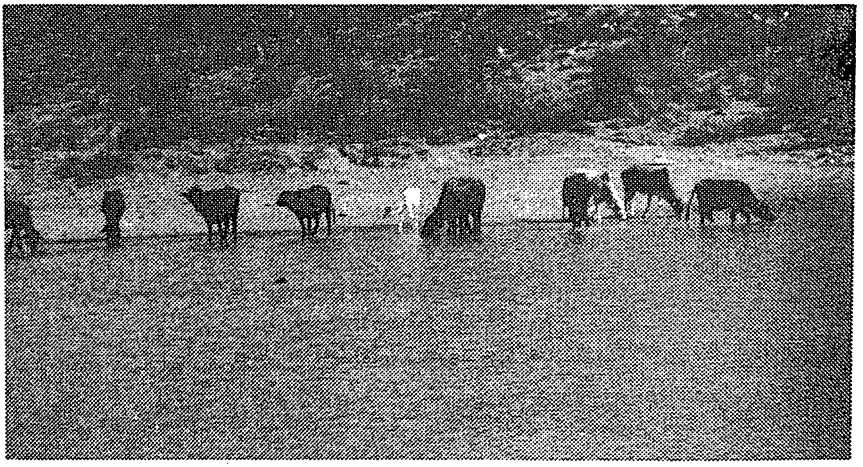

माँचा

माँचा में भी पानी के बहुत अच्छे–अच्छे काम हुए हैं। इस कारण यहाँ की खेती की उपज में दोगुनी तक बढ़ोतरी हुई है।

बाघोर

बाघोर गाँव में भी पानी का काम हुआ है। जिससे लोगों की पानी की आवश्यकता पूरी हुई है। साथ ही पशुओं को भी पानी उपलब्ध हुआ है। इस प्रयास से बाघोर गाँव बहुत लाभान्वित हुआ है।

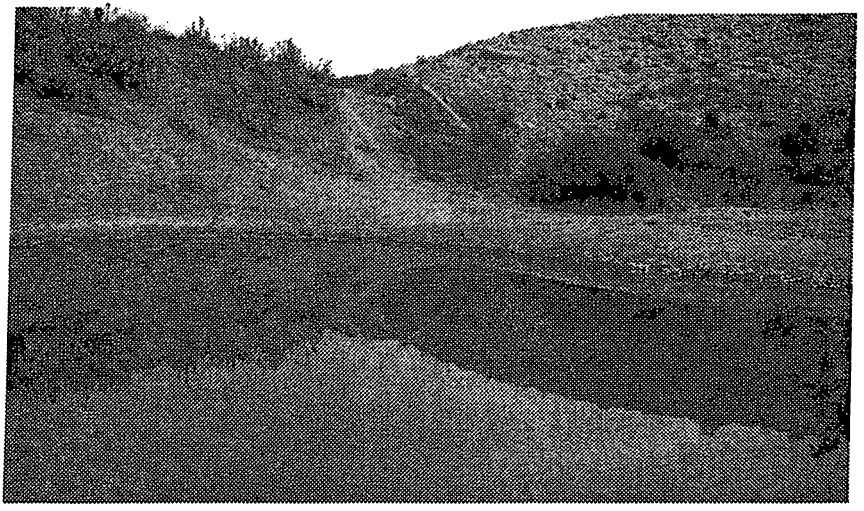

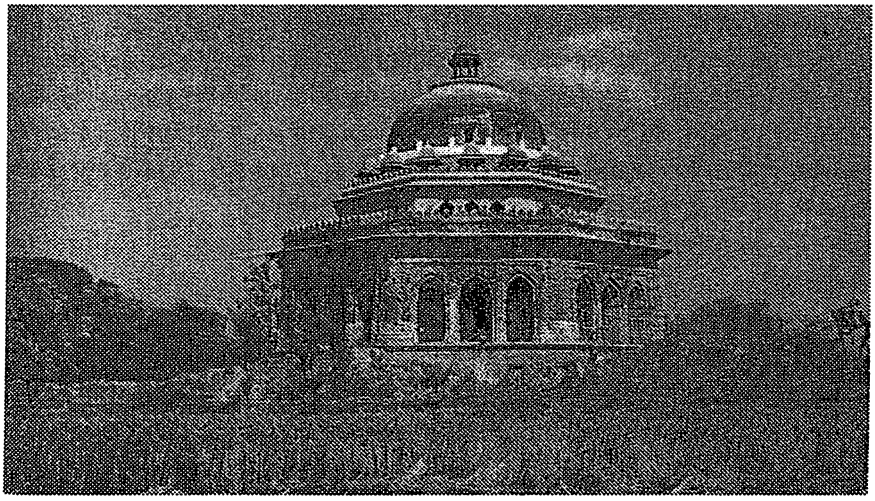

तिजारा

तिजारा में यहाँ का किला, सूरजमुखी बाँध और भरथरी की गुम्बद प्रसिद्ध हैं। यहाँ भी पानी के अच्छे काम हुए हैं।

सरहटा

मेवात में तिजारा के पास सरहटा में पानी के बहुत अच्छे काम हुए हैं। जिनसे कुओं के जल–स्तर में वृद्धि के साथ–साथ फसल की उपज में भी बढ़ोतरी हुई है। पशुओं को भी पीने के लिए पानी मिलने लगा है। सरहटा एक ऐतिहासिक गाँव है। इसी गाँव के स्व. जीत खाँ वल्द उमराव खाँ, एक अच्छे शायर थे। वह विभिन्न विषयों पर शायरी (कविताएँ) लिखते थे। उन्होंने सन् 1985–86 व 87 के भीषण अकाल तथा सन् 1988 की अतिवृष्टि के बारे में ये कविताएँ लिखी हैं।

सन् 1985 व 86 के अकाल की दास्तान

सन् पिच्यासी–छियासी ने मिल कर के जुलम गुजार दिये,
सब न्यार नै लम्बे पार दिये।
धाप्या घर का छोरा छोरी ले दराँत पहाड़ कूँ उतार दिये।
कोई काटै ढाक पहार'न मैं, कोई गुँथ रहो झुंडा झार'न मैं,
ज्यो बैठी डोलै ही कार'न मैं, उनका भी लहँगा फार दिये।
सन् पिच्यासी .....

कोई डोलै यारा प्यारा पै, कोई जीजा पै कोई सारा पै,
कोई बाँध कै कमर उधारा पै, भई एक ढकोला न्यार दिये।
फिर न्यार दियो नहिं काई नै, खुद माँ का जाया भाई नै,
ना दया करी अन्यायी नै, रीता घर पे तै तार दिये।
भई माँग्या न्यार मिलै कैसे, जो डोलै ले'र नगद पैसे,
उनको भी कोई ना देसै, तुम्हें किसने बना गँवार दिये,
सब न्यार नै लम्ब पार दिये।
सन् पिच्यासी .....

जाकी भैंस चरै ही निरी चूरी, उननै छोड़ी नाहिं गरी तूरी,
जिनपै न्यार'न के बोंगे भर रे, नोट'न के गल्ले ढार दिये।
सब न्यार नै लम्बे पार दिये।
सन् पिच्यासी .....

सन् 1987 का भीषण अकाल

सन् पिच्यासी छियासी की, दादी सत्यासी आई है,
जो बरखा संग ना लाई है।
पहले पिच्यासी नै मारे, फिर छियासी नै घर घाले।
सन् सत्यासी नै कर डाले अब न्यार बड़े दुःखदाई है।
यू साल बड़ी निरमोही है, जाने बरखा कहाँ जा सोई है।
जो फसल तलक ना बोई है, जनता तो नूँ घबराई है।
सन् पिच्यासी.....

जब बरसे सावन साढ़ नहीं, भादू को भी आइसाद नहीं।
लगा कुवार का वार सवाद नहीं, जब पड़ी फसल मैं लाई है।
करी कवा लागे झूँठ खारद नहीं, मेरै ज्यादा बात तो याद नहीं।
हुवा दो-दो कूड़ी नाज नहीं, कातक की जो फसल उठाई है।
सन् पिच्यासी .....

कातक की तो ऐसी-तैसी, आगै भी बीत रही जैसी।
मैं कविता मैं कह दूँ वैसी, सुन लो सब लोग लुगाई है।
कोई कहै मोपै नाज नहीं, और बिना नाज कै राज नहीं।
और उन पै रही लिहाज नहीं, जिन पै कुछ-कुछ बोहताई है।
वो चाहैं तुनलू मैं तूड़ा, सौ रुपया मन बिक जाय पूरा।
अर वो भी नगद, उधार नहीं, ना छोड़ छूट की पाई है।
सन् पिच्यासी ....

लेने गर होंगे कड़बी तूड़े, भाड़े में ही होंगे पूरे।
एक तरफ न्यार पालो झूड़ें, कुछ भाड़े वाले भाई हैं।
बिन न्यार नाज और चारे के, जनता मर जाए बिन मारे के।
कुदरत बिन तेरे सहारे के, दुनिया मैं कौन सहाय करे।
मजबूर लोग हो बैठ रहे, और न्यार का खर्चा मेट रहे।
बूढ़ी–ठेरिन को बेच रहे, खुद बन के धनी कसाई है।
सन् पिच्यासी .....

जो कहते लोग गऊ माता, उस मात से तोड़ रहे नाता।
बेटा हो'र बेच खाता, है न्यार के डर के माइ है।
कविता कहते दिल पिघल रहा, बज बरबादी का बिगल रहा।
जितना धन अब के बिगड़ रहा, याकी कैसे हो भरपाई है।
ये तो थे बिन बरखा के फल, कातक की गइ है सूख फसल।
बैसाख की बात भी मूँड के बल, करने के लिए बिजाई है।
सन् पिच्यासी .....

थे साहुकार वो चोरि करे, अर कुआ छोड़ के बोर करे।
मर गिर कर इतना जोर करे, पूठन पै पैप चढ़ाई है।
जहाँ कदी से पानी ना पहुँचे, वहाँ ना छोड़े नीचे ऊँचे।
लिए रबड़ के पैप असल पूछे, चीती से देंय दिखाई हैं।
सन् पिच्यासी .....

घर फोड़–फोड़ के औरन के, सब काम चला रहे बोरन के।
बन गई अजैन्सी चोरन के घर करगे खूब कमाई है।
कहिं ऐसी भी बेमारी है, धरती मैं पानी खारी है।
और कहीं नहर ना आरी है, कैसे हो कार कमाई है।
सन् पिच्यासी .....

इकसार हैं नहर ढहर बागर, सब ने दिये बेच ढोर डाँगर।
जो खाया करते थे साँगर, उनकी तो किन्हें चलाई है।
चाहे रोटी लगी रहै मुँह के, ना खाइ जाय मर रे भूके।
सब पेट बाँध डीजल फूँकै, फूँके से आफत आई है।
सन् पिच्यासी छिंयासी की, दादी सत्यासी आई है,
जो बरखा संग ना लाई है।

सन् 1988 में भारी बरसात (अतिवृष्टि)

उनसे पूछो जिनने देखी हो मसानी भरती।
घोर घटा अम्बर में छागे काले काले बदरा।
होन लगी बरसात तो एकदम नर–नारी गये घबरा।
हरली समली केला भीजी, भीजी शीला सरती।
मुकती हिम्मत ढिड्ड बँधाई, दिल कर लीनो गाडो।
पर ठण्डी–ठण्डी पौन चली तो चढ़ चढ़ आवै जाडो।
भैया फिर तो फिर फिर कर कै, याद सतावै घर की।
दुकनदार कहैं यहाँ पै आके, हम गैबिन मैं मारे।
भीज गये सामान मिठाई, ना लेय खरीदनहारे।
सब ठाली बैठे बैठै झूंठे, पड़ गये तम्बू सरकी।
सदा मसानी में जनता, पानी की खातिर तरसी।
पर अब कै सन् अट्ठयासी मैं तो ऐसी बरखा बरसी।
जैसी खुद अपनी आँखन ते 'जीत खाँ' ने ना देखी।
उनसे पूछो जिनने देखी .....

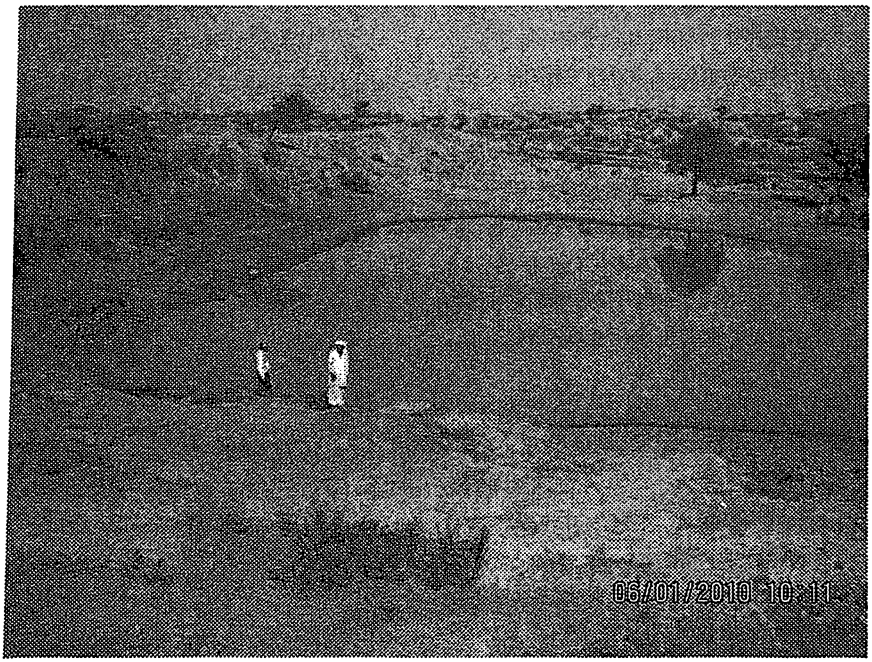

उल्लेखनीय व्यक्ति और उनके विचार

नाँगलवानी गाँव के श्री शैतान सिंह जी अपने गाँव और आसपास की ढ़ाणियों में वर्षा जल को सहेजने के बड़े अच्छे काम किये है। ये संस्था के अन्य कार्यक्रमों से भी नियमित रूप से जुड़े हुए हैं। ये पानी और जंगल को बचाने में विशेष रुचि रखते हैं। इनके गाँव के पूर्व में पहाड़ी के ढाल में एक प्राचीन देवबनी स्थित है। जिसमें धोक के सघन पेड़ लगे हुए हैं।

गढ़बसई के घूणीनाथ जी के मन्दिर के महन्त श्री बालकनाथ जी महाराज को गुरु सागर बाँध बनाने की बहुत बड़ी तमन्ना थी। वे यहाँ पर बाँध बनाने के लिए, मुझे जब भी मिलते थे, तभी कहते थे। जब मैं श्री बजरंग सिंह जी व बहनजी मगन कँवर के साथ उनको बाँध की जगह के चयन (साइट सलैक्शन) के लिए बुलाने गया तो वे बिना एक भी क्षण की देर लगाए, तुरन्त हमारे साथ साइट पर चल दिये। काम शुरू हो जाने पर उनको ही सबसे ज्यादा खुशी हुई थी और बीच में ही काम बन्द हो जाने पर दुःख भी उनको ही सबसे ज्यादा हुआ था। उन्होंने व उनके शिष्य श्री भोलानाथ जी महाराज ने इस बाँध के प्रारम्भिक काम में तन मन धन से सहयोग किया था।

इसी गाँव के श्री महेशचन्द जी शर्मा गाँव के अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। मनसा सागर के काम के प्रारम्भ में ही ये संस्था से जुड़ गये थे। मनसा सागर के लोकार्पण व जल–पूजन के अवसर पर इन्होंने ही गुरु सागर बाँध निर्माण के लिए तरुण भारत संघ के श्री राजेन्द्र सिंह जी के समक्ष सर्वप्रथम प्रस्ताव रखा था। बाँध का काम शुरू होने से लेकर पूरा होने तक इनका निस्वार्थ योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। ये गाँव के

सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। ये मृदुभाषी, द्वेष भाव से रहित एवं गाँव के काम के लिए समर्पित व्यक्ति हैं। इन्होंने केवल अपने गाँव में ही नहीं साबी नदी के अन्य गाँवों में भी पानी के प्रति लोगों में चेतना जाग्रत करने हेतु एक अभियान चलाया था। जिसके अन्तर्गत यह जादू का बास, गोगेरा, छींतोली, सूरजमल की ढाणी तथा नारायणपुर व बानूसर क्षेत्र के भी गाँवों में गये थे।

पूछने पर ये अपने ही शब्दों में कहते हैं कि ''मैं गोपाल सिंह जी के माध्यम से तरुण भारत संघ से जुड़ा। पहले मनसा सागर और बाद में गुरु सागर के काम में सहभागी रहा। इन कामों में निर्धारित श्रमदान जुटाने में कार्य किया। इन कामों के पूरा होने पर जब इनमें पहली बार पानी भरा तो उसके प्रभाव से आसपास के गाँवों के तीन–चार किलोमीटर तक के कुओं में जल–स्तर ऊपर आया। हमने ब्रह्म–समाज द्वारा किया जाने वाला 'श्रावणी–कर्म' जो कि प्राय: गंगा–यमुना जैसे पवित्र तीर्थों पर ही किया जाता है, यहाँ पर विधि–विधान से किया। मुझे यह काम बहुत अच्छा लगता है, इसीलिए मैं साबी नदी जलागम क्षेत्र के बहुत सारे गाँवों में जल, जंगल व जमीन संरक्षण की चेतना, उसके रखरखाव और 'साबी संसद' के गठन की गुजारिश के लिए भी गया। वहाँ मीटिंग भी की और लोगों से बात भी हुई और रात्रि विश्राम भी वहीं पर किया।

मैं भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी के कार्यों से प्रभावित होकर जल बिरादरी के सम्मेलनों में दिल्ली आदि जगहों पर भी गया। वहाँ उनके विचार सुन कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। हमारी सरकार विदेशी कम्पनियों के दबाव में आकर हमारे वेद वर्णित पवित्र जल को प्रदूषित कर के भारतवर्ष को कलंकित करने में सहयोग कर रही है। यह अत्यन्त अनुचित कार्य है।

अतः हम सभी देशवासियों को संगठित होकर इसे बचाने का सतत् प्रयास करना चाहिए। अन्यथा जल के बिना जीवन ही समाप्त हो जयेगा।''

जल, जंगल व जमीन के संरक्षण में बहनजी मगन कँवर का लगाव प्रारम्भ से ही रहा है। विशेष रूप से जंगल को बचाने के काम में उनकी आन्तरिक रुचि हमेशा से ही रही है। जंगल को किसी भी प्रकार से बचाने का प्रयास करना उनका प्रमुख ध्येय है। ये गाँव के

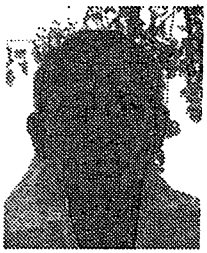

सभी सामुदायिक कामों में स्वाभाविक रूप से ही सक्रिय रहती हैं। संस्था द्वारा अब तक किये गये सभी कार्यो में इनका सक्रिय योगदान रहा है।

श्री फतेह सिंह जी एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने 1998 से आज तक संस्था द्वारा गाँव में किये गये कार्यो में सकारात्मक भूमिका निभाई है। इन्होंने देवी की बनी में वृक्षारोपण कार्य से लेकर अन्य देवबनियों में वृक्षारोपण करने के साथ–साथ मनसा सागर, कुण्ड, बीड़ाँ का बाँध, बीड़ाँ की जोहड़ी, गुरु सागर व अन्य सभी सामुदायिक कार्यों में प्रारम्भ से ही सक्रिय सहयोग दिया है। शारीरिक व आर्थिक सहयोग के साथ–साथ इनकी प्राकृतिक संसाधनों के प्रति वैचारिक भूमिका भी सबसे महत्त्वपूर्ण रही है। इनके वैचारिक व सकारात्मक सहयोग के कारण ही गाँव में ऐसे

काम सम्भव हो सके हैं। इन्होंने श्री बजरंग सिंह जी, नवल सिंह, दलवीर सिंह व कोटड़ी के समस्त बन्धुओं व पूरे गाँव को प्रोत्साहित कर के जल–जंगल व जमीन का काम किया। इन्होंने श्री महेशचन्द जी शर्मा को साथ लेकर साबी नदी क्षेत्र के अन्य गाँवों में भी जन चेतना जाग्रत की और 'साबी संसद' बनाने की गुजारिश की।

गोवड़ी गाँव के श्री रामेश्वर दयाल सरपंच ने श्री चिरंजी लाल जी शर्मा के साथ मिल कर बोध शिक्षा समिति के श्री योगेन्द्र जी को गाँव के सदस्य की भूमिका निभाते हुए बाँध के काम में सहयोग करने के लिए तैयार किया। इन्हीं के कारण बोध गाँव, गढ़बसई और गोवड़ी में आपसी समन्वयन सम्भव हो सका। गुरु सागर के काम में इन्होंने सरकारी नीतियों से परे हट कर पूर्ण पारदर्शिता के साथ काम किया है। ये संस्थागत हर काम में सक्रियता से भागीदार रहते हैं।

14 मार्च 1967 तदनुसार फाल्गुन शुक्ला द्वितीया (फुलेरा दौज) को गढ़बसई गाँव में जन्में चिरंजी लाल जी शर्मा बचपन से ही क्रियाशील, ईश वन्दना में रुचि रखने वाले

तथा गुरुजनों व बुजुर्गों का सम्मान करने वाले व्यक्ति रहे हैं। ये सामाजिक भलाई के कामों में गहरी रुचि रखते हैं। स्पष्टवादी एवं पारदर्शी व्यक्ति हैं। इन्होंने घर की आर्थिक विषमताओं से संघर्ष करते हुए, श्री परमानन्द जी मिश्रा की प्रेरणा से 'मास्टर ऑफ कॉमर्स' वित्तीय प्रबन्धन से डिग्री प्राप्त कर राजकीय सेवा में शिक्षक के रूप में जुड़ कर बच्चों को सिखाने के काम के साथ–साथ उनसे भी सतत् रूप से सीखने का कार्य कर रहे हैं। गुरु सागर के रुके हुए काम को पुनः शुरू करवा कर उसे पूरा करवाने में श्री चिरंजी लाल जी शर्मा की महती भूमिका रही है। इन्होंने जल–जंगल व जमीन संरक्षण के कार्यो में अपनी भूमिका का अपने ही शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया है :–

''संस्था से प्रथम मिलनः–सन् 1998–99 के ग्रीष्मावकाश में सरकारी शिक्षकों का लोक जुम्बिश परियोजना में मिल कर प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत जैसे ही तरुण भारत संघ के मुख्य द्वार पर प्रवेश किया तो दीवार पर जल, जंगल व जमीन का नारा देखते ही अन्तर्मन को कचोट गया। मैंने मन ही मन संकल्प लिया कि मैं भी अपने गाँव के व्यर्थ बह कर जा रहे जल को, जंगल की अन्धाधुन्ध कटाई को तथा जमीन के कटाव को रोकने हेतु भरसक प्रयास करूँगा। यहाँ पर मुझे इस संस्था में कार्यरत कार्यकर्ता मेरे गाँव के श्री गोपाल सिंह जी मिले; उनसे बातचीत की। प्रशिक्षण समय के पश्चात् मुझे जो भी विश्राम का समय मिला, उसमें मैं अपने साथियों के साथ न रह कर श्री गोपाल सिंह जी के कक्ष में ही जाकर उनसे अपने मन की बात कही। उन्होंने मेरे विचार को सुन कर 'एक और एक ग्यारह' वाली कहावत कह कर मुझे समझाया और विश्वास दिलाया कि यदि आप इस संकल्प को दृढ़ता से लेंगे तो आपका सपना भविष्य में अवश्य साकार होगा। भाई गोपाल सिंह जी ने उन दस दिनों में अपनी संस्था के उद्देश्य, कर्त्तव्य और कार्य–योजनाओं के बारे में सामान्य जानकारी देकर मुझे कृतार्थ किया।

उसी दौरान उन्होंने भाईसाहब राजेन्द्र सिंह जी से भी मेरे मन की भावना बतला कर अपने गाँव के सदस्य के रूप में मेरा परिचय करवाया। उनसे भी मुझे भविष्य में समय निकाल कर इस पुनीत कार्य में मन से जुटने की प्रेरणा मिली।

भाई साहब व संस्था के कार्यकर्ताओं से मिल कर मेरे मन को जो शान्ति मिली, उसे लिखने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। इतना अवश्य कहूँगा कि मैं तभी से संस्था का प्रत्यक्ष कार्यकर्ता न बन कर भी परोक्ष कार्यकर्ता बन गया। तभी संस्था द्वारा जल, जंगल, जमीन के बचाव अभियान में मैं भी अपने मन कर्म वचन व यथोचित धन से इस यज्ञ में आहुति देकर अपने जीवन को सार्थक बनाने का मन बना लिया।

प्रशिक्षण सम्पूर्ण हुआ, हम घर लौट कर आये। यहाँ मैंने अपने घर, परिवार, समाज, समुदाय, शाला के बच्चों व उनके अभिभावकों को भी जल, जंगल व जमीन को बचाने हेतु संकल्प लेकर इस पुनीत कार्य को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित किया। अब मुझे जहाँ भी मौका मिलता है, मैं इस पुनीत कार्य के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करके कार्य की शुरुआत करने का प्रयास करता हूँ।

मैंने जो स्वप्न मन में सँजोया था, मेरे गाँव के उस एक बहुत बड़े बाँध (गुरु सागर) की नींव खुदाई का मुहूर्त 6 दिसम्बर 2003 लगाया जाकर साकार हुआ। जिसका शिलान्यास भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी के सान्निध्य में डा. गुरुदास जी अग्रवाल के कर कमलों से 21 दिसम्बर 2003 को ग्रामवासियों की उपस्थिति में लगाया गया। उस वक्त तत्कालीन बाँध निर्माण समिति के 21 सदस्यों में मैं राजकीय शिक्षा कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण सहयोग नहीं दे सका; लेकिन समय निकाल कर श्रमदान देने व गाँव की हिस्सा राशि एकत्र करवाने में मन से सहयोग देता रहा। इस बाँध के कार्य का प्रथम चरण जून, 2004 में नींव भराई स्तर तक ही होकर रुक–सा गया।

चूँकि मैं पूरा समय नहीं दे पा रहा था, इसलिए मुझे काम बन्द हो जाने के कारणों का पता नहीं लगा। मैंने तत्कालीन बाँध निर्माण समिति के सदस्यों से पूछताछ की तो पता चला कि संस्था अपना निर्धारित सहयोग देने से मुकर रही है। मैंने भाई गोपाल सिंह जी से दूरभाष पर सम्पर्क किया, उन्होंने सम्पूर्ण चर्चा का प्रत्युत्तर दूरभाष पर न देकर गाँव में ही आकर घर पर बैठ कर सम्पूर्ण विस्तृत चर्चा पर विचार–विमर्श करने हेतु आश्वस्त किया।

कुछ दिनों बाद गोपाल सिंह जी गाँव पधारे। मुझे उनके आने की सूचना मिली; मैं तो उनसे मिलने को पहले से ही बेताब था। मैंने इस बाँध के रुके हुए काम को पुनः चालू करवाने की अपेक्षा रख कर दूरभाष पर श्री रामेश्वर दयाल सरपंच को शीघ्र ही आने का आग्रह किया। वह आ गये। हमने मनसा सागर पर बैठ कर श्री गोपाल सिंह जी व कन्हैया लाल जी से गुरु सागर के काम के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की। चर्चा में पूर्व बाँध निर्माण समिति के कुछ सदस्यों द्वारा पत्थर, बजरी, श्रमिक आदि की दर बढ़ा कर श्रमदान के समायोजन की बात सुन कर मुझे बड़ा खेद हुआ। इस तरह से समायोजन करना संस्था की पारदर्शिता के सिद्धान्तों के खिलाफ बात थी। श्रमदान की इस व्यवस्था को पूर्णरूपेण छलावा समझ कर संस्था द्वारा सहयोग के लिए मना करना मेरे मन में समझ आ गया।

मैंने मन ही मन तुरन्त निर्णय लिया कि गाँव के लोगों का मन पुनः जीत कर उनके मन में पारदर्शिता की बात बैठाई जायेगी। साथ ही गाँव की सीमा में ही शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही संस्था 'बोध शिक्षा समिति' से भी गाँव के सदस्य की हैसियत से सहयोग लेने की बात मन में आई। फिर हमने बाँध निर्माण समिति का पुनर्गठन करने की बात तय कर के बैठक समाप्त की।

दिनांक 12-5-06 को शिव-मन्दिर (पंचायत भवन के पास) में नवगठित बाँध निर्माण समिति की बैठक नये सिरे से शुरू की; जिसमें ग्रामवासियों के साथ बोध शिक्षा समिति के सदस्यों ने भी ग्रामवासी की हैसियत से भाग लिया। पुरानी समिति में से किसी को हटाया नहीं गया, पर उन में से एक-दो सदस्य स्वतः ही निष्क्रिय हो गये थे। साथ ही दो-तीन नये सदस्य भी जोड़े गये, जिनमें से एक सदस्य के रूप में मुझे भी जोड़ा गया। नवगठित बाँध निर्माण समिति ने सर्वसम्मति से मुझे सचिव के पद पर कार्य करने व पूर्ण पारदर्शिता के साथ सम्पूर्ण कार्य के आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने की जिम्मेदारी दी।

जिस प्रकार हनुमान जी को सीताजी की खोज करने का एक अनूठा काम दिया गया था, ठीक उसी प्रकार नवगठित बाँध निर्माण समिति के लिए भी इस बाँध के काम को पूरा करवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। 25-5-06 को बोध शिक्षा समिति के

कार्यालय बोधगाँव में बाँध निर्माण समिति की बैठक हुई; जिसमें बाँध के शेष कार्य में लगभग आठ लाख रुपये की लागत का अनुमान लगाया गया। इस बैठक में सम्बन्धित दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधि व ग्राम समुदाय के लोग उपस्थित थे। चर्चा के बाद बैठक में सर्वसम्मति से तय हुआ कि पूर्व में तरुण भारत संघ में तय किये गये निर्णय के अनुसार काम के इस दूसरे चरण में समुदाय द्वारा 33 प्रतिशत के बजाय 25 प्रतिशत श्रमदान दिया जायेगा; जिसमें 20 प्रतिशत भाग ग्राम–सदस्य के रूप में बोध शिक्षा समिति द्वारा तथा 5 प्रतिशत भाग ग्राम समुदाय द्वारा दिया जायेगा। शेष 75 प्रतिशत भाग तरुण भारत संघ वहन करेगा। बैठक में यह भी तय हुआ कि पूरा काम पूर्ण पारदर्शिता व ईमानदारी के साथ होगा।

बाँध निर्माण के कार्य में कारीगर, मजदूर व सामग्री की दर सर्वसम्मति से निर्धारित कर के दिनांक 29–5–06 से गुरु सागर बाँध के दूसरे चरण का श्रीगणेश हो गया।

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन।
ओ हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।।

इस अभियान गीत को ध्यान में रख कर कार्य में विधिवत निरन्तरता रखते हुए तीव्रगति से निर्माण कार्य कर के बरसात से पूर्व ही इस काम को पूरा कर दिया गया। नियमित साप्ताहिक बैठक कर के सभी सदस्यों का काम के प्रति लगाव पैदा करना व मन से जुड़ कर कार्य को गति देना अपने आप में एक नवाचार था।

बाँध निर्माण के द्वितीय चरण की उपलब्धि व कार्यावलोकन हेतु जब भाई राजेन्द्र सिंह जी पधारे, तब उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा था कि 'गढ़बसई गाँव आने वाले समय में सम्पूर्ण उपखण्ड में पानी वाले गाँव के रूप में जाना जायेगा। क्योंकि यहाँ के ग्रामवासियों ने एक बड़ा बाँध बना कर अपनी सूझबूझ, संगठन व मेहनत का परिचय दिया है। एक तरफ जहाँ भू–जल–स्तर दिनोंदिन न्यून होता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ यहाँ पर गाँव की समझ और श्रम से बनाये गये बाँधों के कारण जल–स्तर अपेक्षाकृत ऊपर रहेगा।'

आखिर 31–12–2006 को बाँध निर्माण का कार्य सम्पूर्ण कर के मंजिल तय हुई। मासिक बैठक में विस्तृत रूप से द्वितीय चरण के काम का आय–व्यय का लेखा–जोखा व निर्माण–स्थल पर श्रमिकों, करीगरों व ट्रैक्टर द्वारा सीमेन्ट व सामग्री पहुँचाने आदि के भुगतान का कार्य पारदर्शिता से होता रहा। काम निरन्तर आगे बढ़ता रहा और अन्त में निर्विघ्न कार्य पूर्ण कर के मंजिल व चुनौती को पूर्ण किया गया।

इस बाँध की चर्चा का सिलसिला तहसील, जिला, राज्य व राष्ट्र–स्तर पर फैल गया; जिसका श्रेय स्पष्ट रूप से भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी को ही जाता है। उन्हें मेरे गाँव के जल–संसाधन की चर्चा व जल–नीति निर्धारण हेतु समाज की सहभागिता का उदाहरण देश के विभिन्न भागों में प्रस्तुत करना था। इसलिए उन्हीं की प्रेरणा से बाँध निर्माण में समाज की भूमिका के अवलोकनार्थ 2 दिसम्बर, 2006 को माननीय प्रधान मन्त्री जी श्री मनमोहन सिंह जी की सुपुत्री बहन दमन सिंह भी यहाँ पधारीं। इस अवसर पर सम्पूर्ण जिला प्रशासन भी उपस्थित था। मैंने इस बाँध निर्माण के बारे में आद्योपान्त संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण, आय–व्यय की जानकारी, बाँध निर्माण के लाभ तथा भविष्य में रख–रखाव की व्यवस्था आदि के बारे में बताया। दमन बहन जी ने इस अवसर पर कहा–

यहाँ आकर अच्छा अच्छा लगा – क्योंकि इतने सारे लोगों ने अपना-अपना काम छोड़कर मुझे समय दिया। इससे मुझे कई नई बातें समझने को मिलीं। और यह भी देखा कि एक मज़बूत समुदाय कमाल का काम कर सकता है।

धन्यवाद

दमन

2.12.06.

इस बाँध निर्माण से यहाँ की जनता व किसान भाइयों को उपलब्धियाँ

1. जल–संरक्षण, जल–रिचार्ज व जल उपयोगिता के महत्त्व का ज्ञान कराना।
2. सूखे कुओं में पुनः जल का आना व खेतों की सिंचाई में सहायक होना।
3. दूरदराज तक जल–स्तर में सुधार व जल–संरक्षण हेतु दृढ़ संकल्पित होना।
4. संस्था व गाँव के जन–सहयोग से तैयार बाँध की रीति–नीति के अनुरूप ही राज्य–सरकार से बाँध निर्माण करवाना तथा व्यर्थ बह कर जाते वर्षा–जल का संचय करना।
5. इस बाँध में अभी तक एक ही बार पानी भरा है जिससे अब तक जितना आर्थिक सहयोग किसानों ने दिया है, उसका सौ गुना लाभ तो मिल चुका है और यदि इन्द्रदेव की कृपा रही तो भविष्य में भी मिलता रहेगा।
6. पहली ही बरिश में यह बाँध अपनी भराव क्षमता तक पानी से लबालब भर गया था; मात्र अपरा निकलना बाकी रहा था। भरे हुए बाँध का अनूठा व मनमोहक दृश्य देखने के लिए सम्पूर्ण ग्रामवासियों का ताँता लग गया था। पानी की पर्याप्त भराव क्षमता होने से साबी नदी के इस उद्‌गम स्थल से सूखी हुई नदी का पुनर्प्रवाह शुरू हो गया। बहती हुई नदी को देख कर 1980 तक बहने वाली इसी नदी का दृश्य याद आने लगा। एकबारगी मन गद्‌गद् हो गया। बाँध के भरने से इस गाँव सहित आसपास के गाँवों में भी जल–स्तर ऊँचा हो गया था। यदि समय–समय पर बरसात होती रहेगी तो भविष्य में भी पानी के संकट से निजात पाई जा सकती है।

तीस वर्ष बाद पुनर्प्रवाहित हुई साबी नदी की इस पवित्र धारा में मेरे गाँव के सभी विप्र बन्धु समाज, आचार्य पं. शान्तनुनरेश जी वशिष्ठ के सान्निध्य में श्रावणी कर्म, जो गंगा नदी के हरिद्वार जैसे पवित्र तीर्थों पर ही किया जाता है, पहली बार यहाँ पर किया गया। इसका श्रेय यहाँ के मनसा सागर व गुरु सागर बाँधों को ही जाता है। निर्मल जल को बहते देख कर इस पावन पर्व पर सभी विप्र समाज ने भाई राजेन्द्र सिंह जी व उनकी संस्था के कार्यकर्ताओं को साधुवाद दिया। 'श्रावणी कर्म' का पुण्य लाभ लगातार दो वर्षों तक मिलता रहा। वर्तमान में यद्यपि दो वर्ष से पड़ रहे अकाल के कारण यह प्रवाह लुप्त हो गया है; पर यह निश्चित है कि यदि अच्छी बारिश होगी और बाँध भरेंगे तो यह नदी फिर से बहने लगेगी।

रहीमदास जी की यह उक्ति सत्य ही है कि 'रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।' आज स्वार्थी मानव स्वयं अपने हाथों जल–संकट पैदा करता जा रहा है। स्वार्थवश जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई होती जा रही है। धरती माता का पेट फोड़ कर (बोरिंग लगा कर) कुओं को हमेशा के लिए जलहीन कर दिया है। जल–जंगल–जमीन के संरक्षण के नाम पर भी केवल दिखावा ही किया जाता है। आज के युग में भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी, गोपाल सिंह जी, जगदीश जी, कन्हैयालाल जी जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं की तरह से तन–मन से जुड़ कर काम करने वाला होना चाहिए। यदि मानव मात्र इस पुनीत कार्य में तन–मन से नहीं जुड़ेगा तो अब वह समय दूर नहीं है कि पीने के लिए एक बूँद जल के लिए भी तरसना पड़ेगा।

मैं तो ईश्वर से यही कामना करता हूँ कि जब तक मैं इस मृत्यु–लोक में हूँ, तन–मन से अन्तिम श्वास तक इस पुनीत कार्य में लगा रहूँगा। मेरी सेवा मेरे गाँव, मेरे क्षेत्र व मेरे देश के काम आये।''

'जल संसद' निर्माण का प्रयास

अरवरी संसद की तर्ज पर अन्य नदी–घाटी क्षेत्रों में भी 'नदी संसद' बनाने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में साबी नदी क्षेत्र में भी 'साबी संसद' बनाने के उद्देश्य से गाँव–गाँव में जाकर इस हेतु चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया गया। चेतना जागृति के लिए संस्था के कार्यकर्ताओं के अलावा गाँवों के स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं ने भी साबी नदी क्षेत्र में भ्रमण किया।

करौली जिले के सपोटरा तहसील के गाँव खिजूरा में राष्ट्रीय स्तर पर एक जलकुंभ का आयोजन किया गया, जिसमें कुंभ का वास्तवित उद्देश्य और महत्त्व समझाया गया था। इसके बाद अन्य नदी क्षेत्रों में भी जलकुंभ का एक अभियान चलाया गया। इसी शृंखला में साबी नदी के गाँवों में भी विभिन्न जगहों पर जलकुंभ किये गये। साबी नदी संसद बनाने के लिए तरुण आश्रम, भीकमपुरा में भी साबी नदी क्षेत्र के लोगों का एक सम्मेलन किया गया, जिसमें विभिन्न गाँवों के लोगों ने भाग लिया। सभी ने 'साबी संसद' के गठन व 'जल कुंभ' के आयोजन के लिए चर्चा की। इस अवसर पर गढ़बसई के श्री महेशचन्द शर्मा, चिरंजीलाल जी शर्मा, फतेहसिंह जी व सालेटा के

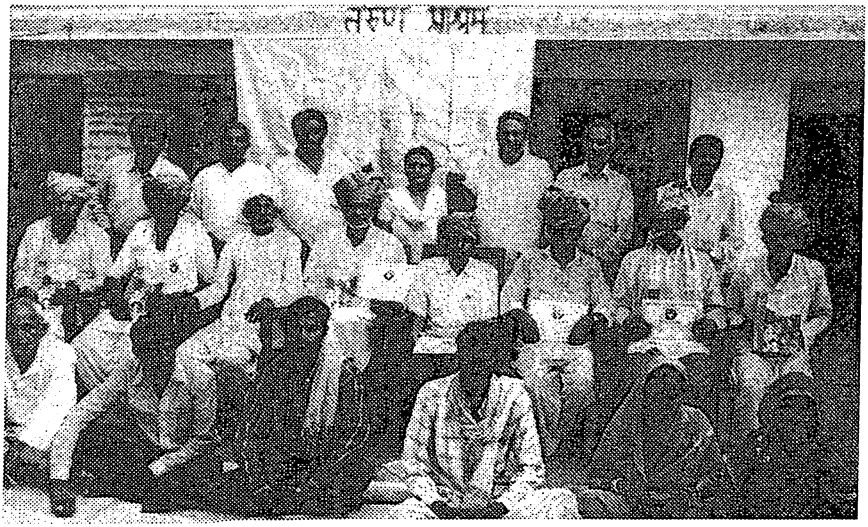

राजेन्द्र सिंह जी, नांगल के शैतानसिंह जी, बूजा गाँव के किशन जी गुर्जर, जादू का बास के लल्लू जी गुर्जर, बरड़ा की ढाणी के रामचन्द्र जी गुर्जर, सूरजमल की ढाणी के श्रवणसिंह जी, चतरपुरा के ताराचन्द जी टेलर व विक्रमसिंह जी, छींतोली के हनुमान जी शर्मा मूर्तिकार व अन्य बहुत सारे लोगों ने अपने–अपने विचार रखे।

इस अवसर पर सालेटा के श्री राजेन्द्रसिंह जी ने जलसंकट से बचने के लिए लोगों

को जल संरक्षण करने के लिए चेतावनी दी और साबी संसद के निर्माण के लिए गाँव के संगठन पर भी जोर दिया। गढ़बसई के श्री फतेहसिंह जी ने भी जल संरक्षण और जंगल संरक्षण करने पर जोर दिया। अन्य लोगों ने भी जल, जंगल और जमीन संरक्षण हेतु 'साबी संसद' बनाकर सक्रियता से काम करने की बात कही।

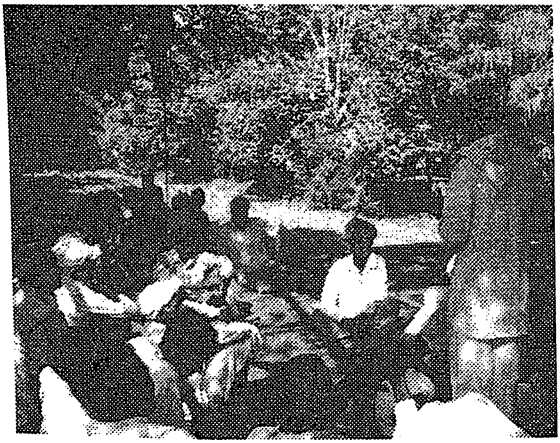

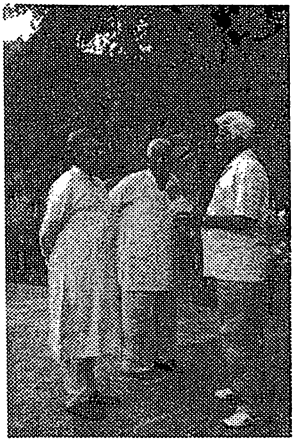

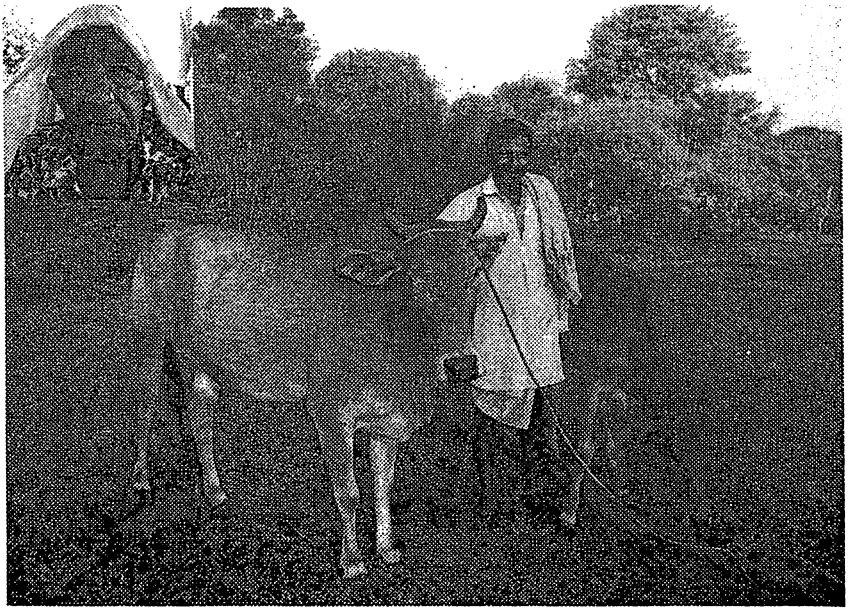

साबी नदी के पुनर्जीवन के लिए क्या करें ?

- साबी नदी के प्राचीन बहाव वाली मुख्य धारा का विस्तार सुनिश्चित किया जाये।
- गन्दे नालों का उत्सर्जन साबी नदी में नहीं किया जाये।
- 'बिरला कॉटन मिल्स' व 'डी.सी.एम.' फैक्ट्रियों के द्वारा उत्सर्जित गन्दे नालों को जिस तरह से साबी नदी में डालने पर रोक लगाई गई, उसी तरह से अभी और सैकड़ों फैक्ट्रियों के गन्दे पानी के नाले, जो साबी नदी में डाले जा रहे हैं, पर शीघ्र रोक लगाई जाए। ट्रीटमेंट प्लाण्ट लगाकर पानी का शोधन करें।
- सीवरेज का पानी ट्रीटमेण्ट किये बिना नदी में नहीं डालें, क्योंकि नदियों में सीवर लाइन का पानी डालने का अधिकार नहीं है।
- साबी नदी के जलागम क्षेत्र (कैचमैन्ट एरिया) में रेलवे लाइन व सड़कें बनने की वजह से भी नदी के बहने के रास्ते अवरुद्ध हुए हैं।
- बोरिंग–ट्यूबवैल व बेवरेज फैक्ट्रियों द्वारा किये जा रहे अत्यधिक दोहन पर रोक लगाई जाए।
- कम पानी वाली फसल करें, क्योंकि अधिक पानी वाली फसलों के कारण पानी की माँग बढ़ती है।
- नदी के जलागम क्षेत्र में बड़े बाँधों की जगह छोटे–छोटे बाँध बनाना चाहिए।
- नदी के जलागम क्षेत्र में पेड़–पौधे व वनस्पति लगाकर भी जल–संरक्षण किया जाये।
- साबी नदी जलागम क्षेत्र के समाज में जल–संरक्षण हेतु जन–जागृति अभियान चलाया जाए।

राजस्थानी जळ–दोहा

जळ हीरा जळ मोतियाँ, जळ लालन का लाल। जळ की माया जगत मैं, जळ बिन जगत कँगाल।।
कहाँ ताळ और कहाँ तळाई, कहँ भैंरू का बासा। संगत छोड़ कुसंगत आया, ऊतरबा का साँसा।।
सीर सगाई चाकरी, राजीपा को काम। मेह तो बरसैंगा वहीं, इहाँ राजी व्है राम।।
सौ कूआ एक बावड़ी, सौ बावड़ि एक ताळासौ हाथाँ की नाळ सूँ बड़ी पचहत्ती पाळ।।
जोहड़ा बाँधो पोखरा, पाणी पहली पाळ। बरसंताँ घण वार सूँ, रुकै न पाणी भाळ।।
मेह की शोभा बीजळी, सरवर शोभा पाळ। बेटी शोभा बाप की, तो घर की शोभा नार।।
नदी नीर बड–आँकुरो, उत्तम प्रीति प्रवाह। ऐ पहली धीमा बहैं, आगे बहैं अथाह।।
जळ ताता जळ सीयळा,निरमळ बिश्वा बीस। जळ मैं ही जीवन बसै,जळ में ही जगदीश।
सौ हाथी सौ ऊँटडा, पूत निपूती होय। मेहा तो बरस्या भला, होणी हो सो होय।।
नदी बैद सज्जन गुणी, पण्डित ज्ञानी राज। एता नहिं जिण गाँव मैं, तहँ बसबो बेकाज।।
पीपळ काटै, हळ घडै, धन कन्या को खाय। सींव तोड़ खेती करै, जड़ामूळ सैं जाय।।
बिद्या बापरती भली, छळक्या भला निवाँण। सुरनर तो कथता भला, सुणता भला सुजाण।।
म्यारस गौरी गंगजळ, भोजन भला ज खीर। बसबो तो ब्रज को भलो, मरबो गंगा तीर।।
नाळा नदियाँ सूँ मिळै, नदियाँ सरवर जाँय। बेलाँ बिरछाँ सूँ मिळैं, बिरखा जद व्है जाय।।
मोराँ बिन मँगरा किस्या, मेह बिन किसी मल्हार। पिव बिन तीजाँ है किसी, तिय बिन किस्यो तिंवार।
चिड़ी ज न्हावै रेत मैं, मेहा आवणहार। जळ मैं न्हावै चिड़कली, मेह बिदा तिण वार।।
मींडक पाणी सूँ निकळ, बारै बैठैं आय। अथवा कूकैं जोर सूँ, बिरखा दौड़ी आय।।
तीतर पंखी बादळी, बिधवा काजळ रेख। वा बरसै वा घर करै, ई मैं मीन न मेख।।
पपियो तो पिउ पिउ करै, मोराँ घणी अजग्ग। छत्र कर्याँ मोर्यो सिरै, नदियाँ बहैं अथग्ग।।
पीतळ काँसी लोह नै जिण दिन काट चढन्त। डंक कहै सुण भड़ूरी, जळधर जळ बरसंत।।
साँप गोयरा मींडका, कीड़ी मकोड़ी जाण। दर छोडैं बाहर भमैं नहीं मेह की हाण।।
रात्यूँ बोलैं कागला, दिन मैं बोलैं स्याळ। कै नगरी को राजा मरै, कै पड़ै अचूक्यो काळ।।
रास पुराणी बाजरो, मींडक फुदक जुवार। इक्कड़ दुक्कड़ मोठियो कीड़ी नाळ गुवार।।
बिगड़ै बासण चाक पर, माटी अधिक उभार। ऊमस आगम समझ कै, मेहा कहै कुम्हार।।
साल बसौला बींधणी, कठिन कुहाड़ै होय। समझो मेहा मोकळो, कहै सुथारो तोय।।
सुकरवार की बादळी, रही सनीसर छाय। डंक कहै सुण भड़ूळी, बरस्याँ बिन नहिं जाय।।
जेठ बदी दसमी दिवस, अगर सनीसर होय। पाणी होय न धरण पर, बिरला जीवैं कोय।।
धुर असाढ पड़वा दिवस, जै अम्बर गरजन्त। छत्री छत्री जूझवैं निश्चै काळ पड़न्त।।
आसाढाँ धुर अष्टमी, चन्द्र सेवरा छाय। च्यार मास चवतो रहै, ज्यूँ भाँडै रै राय।।
दो सावण दो भादवा, दो काती दो माह। ढाँढा ढोरी बेच कर, नाज बिसावण जाह।।
सावण पहली पंचमी जै बाजै बहु बाय। काळ पड़ै सब देस मैं मिनख मिनख नै खाय।।

सावण मास सूरियो बाजै, भादरवै परवाई। आसोजाँ मैं बजै समदरी, काती साख सवाई।।
भादरवै जग रैळसी, जै छट अनुराधा होय। डंक कहै सुण भड़ूळी, करो न चिन्ता कोय।।
आसोजाँ का मेहड़ा, दोन्यूँ बात विनाश। बोरटियाँ मैं बोर नहिं, बणिया नहीं कपास।।
पिछवा मुड़को खावताँ बँधबा लागी आस। बाजण लाग्यो सूरियो, भरियो हिये हुलास।।
पाबू हड़बू रामदे, गोगादे जेहा। पाँचूँ पीर पधारज्यो, माँगळिया मेहा।।
जळ की काया जळ की माया, जळ सूँ ही सब जीव बणाया। कहत कबीर सुणो भई साधो जळ मैं हाड कहाँ सूँ आया।।

नीति का दोहा

लावा तीतर लार, हर कोई हाका करै। सिंहाँ तणी शिकार रमणी मुस्कल राजिया।।
कारज सरै न कोय, बळ प्राक्रम हिम्मत बिनाँ। हळकार्याँ कीं होय, रँग्या सियाळाँ राजिया।।
गुण अवगुण जिण गाँव, सुणै न कोई साँभळै। उण नगरी विच नाँव रोही आछी राजिया।।
रेखा काचै कुम्भ की, पक्याँ अमिट व्है जाय। आदत ना छूटै कदे, बचपण मैं पड़ जाय।।
तन उजळा मन साँवळा, बुगला कपटी भेख। इण सूँ तो कागा भला बाहर भीतर एक।।
हित मैं चित मैं हाथ मैं, खत मैं मत मैं खोट। दिल मैं दरसावै दया, पाप लियाँ सिर पोट।।
काग कुहाड़ो कुटिल नर काटै ही काटै। सुई सुहागो सापुरस साँठै ही साँठै।।
ज्याँ का ऊँचा बैठणा, ज्याँ का खेत निवाँण। वाँ का बैरी के करैं ज्याँ का मीत दिवाण।।
धनवंताँ काँटो लग्यो, साय करैं सब कोय। निरधन पड्यो पहाड़ सैं, बात न पूछै कोय।।
सतजुग मैं सतकार, सत पुरसाँ होतो घणो। कळजुग मैं करतार, चुगलखोर रो चतरसी।।
बस कर कोयल बावळी, बिरथा कूक मरैह। आ मँडळी कागाँ तणी, काँव काँव समझैह।।
सोनो सीसो सुघड़ नर, गुण धीरा बोलन्त। काँसी कुतो कुमाणसाँ कर लाग्याँ कूकन्त।।
धन जोबन अर ठाकरी ता ऊपर अविवेक। ऐ च्यारूँ भेळा हुवै, अनरथ करैं अनेक।।
नाज पुराणो घी नयो, अग्याकारी नार। पंथ तुरी चढ चालणो, पुन्न तणा फळ च्यार।।
सचिव बैद गुरु तीन ये, प्रिय बोलैं भय आश। राज देह अरु धर्म को, होत बेग ही नाश।।
धोळा धोळा सब भला, धोळा भला न केश। नार रमै नहिं रिपु डरैं, ना दर करै नरेश।।
गैलो गँडक गुलाम, बुचकार्याँ बाँथाँ पड़ै। कूट्याँ देवै काम, रीस न कीजै राजिया।।
किरपण कै दाळद नहीं, ना सूराँ कै सीस। दाताराँ कै धन नहीं, ना कायर कै रीस।।
सूमण पूछै सूम सूँ, काहे मुक्ख मलीन। कहा गाँठ सैं गिर पड्यो, कै काहू को दीन।।
नहीं गाँठ सूँ गिर पड्यो, ना काहू को दीन। देवत देख्या और कूँ तासों मुक्ख मलीन।।
घोड़ी वै घर और छा, खाती दाणो घास। अै घर घोड़ी आँपणा, कर गोबिंद की आस।।
जिण रो अनजळ खाय, खळ तिण री खोटी करै, जड़ामूळ सैं जाय, राम न राखै राजिया।।
पैर पिछाणै पगरखी, नैण पिछाणै नेह। चोर पिछाणै पगलिया, मोर पिछाणै मेह।।
आवतड़ाँ हँस गळ मिलै, जावत गळ मिल रोय। टूटी वाँकी झोंपड़ी, सम्मन का घर सोय।।
आयाँ कहै न आव, जाताँ उठ जावै नहीं। तिण घर कदे न पाँव, परत न दीजे पीठवा।।
आव नहीं आदर नहीं, नहिं नैणा मैं नेह। वाँ घर कदे न जाइये, चाहे कंचन बरसै मेह।।
आव घणी आदर घणो, घण नैणा मैं नेह, वाँ घर दौड़ै जाइये, चाहे पत्थर बरसै मेह।।

जीकारो अमरित जिस्यो, भावै जग नै भाळ। है रैकारो आक पय, गरल बराबर गाळ।।
काहू की जाण्याँ बिना, भली भाँत सब रीत। तीन न कीजे भूल कर, प्रीत बिरोध प्रतीत।।
मर जाऊँ माँगूँ नहीं, अपणे तन रै काज। परमारथ रै कारणै, माँगत आवै न लाज।।
अति को भलो न बोलबो, अति की भली न चुप। अति को भलो न बरसबो, अति की भली न धूप।।
समै को मीठो बोलबो, समै की मीठी चुप। उन्हाळै छाया भली रजब सियाळै धूप।।
चणा चाब कर कै कहै, म्हे चाँवळ खाया। नहीं छान पर फूस, कहै म्हे हेली सैं आया।।
जो सुख चावो जीव को, बाताँ त्यागो च्यार। चोरी चुगली जामनी, और पराई नार।।
जाण्यो न हाळी बाळदी, सगो न जाण्यो मिंत। या काळ कत्या सूँ जाणगो कामण भाखै कंथ।।
हाथ जळै उँगळी जळैं, जळैं बतीसूँ दंत। हाथ जोड़ कामण कहै, छोड़ तमाखू कंथ।।
बाँस चढी नटणी कहै, होत न नटियो कोय। मैं नट नट नटणी भई, नटै सो नटणी होय।।
खेती पाती बीनती, और घोड़ा को तंग। आपूँ आप सम्हाळिए, चाहे लाख लोग हों संग।।
घोचो लाग्याँ घाव, घी गेहूँ भावै घणा। अहड़ा तो उमराव, रोट्याँ मुहँगा राजिया।।
छाछ छाबळी छोकरा छन्दागारी नार। च्यारूँ छछ्छा तद मिळैं, जद तूठै करतार।।
कूरी भोजन अजा धन, घर कळहवंती नार। मैला पहरैं कापड़ा , तो नरग निसाणी च्यार।।
हाथ कुरहाड़ी घराँ गँडकड़, द्वारै फिरैं खटीका वाँ को साँवरियो के करै, वै तो नरक मैं ज्याँगा नचीत।।
सावण छाछ न घालती भर बैसाखाँ दूध। गरज दिवानी गूजरी, घर मैं माँदो पूत।

ककहरा

पुरानी पढ़ाई

कक्को रै केवळियो, खख्या गूणी चीवरियो, गग्गा गौरी गाय, घघ्घा जी को घटूल्यो, नन्नो राम दूबळो।
चड़ा चड़ा की चंच्या, छछ्छा पटको पोट्याळो, जज्जो जेर बाणियो, झझ्झायाँ की हाँसोली, नन्नो खाण्डो चन्दरमा।
टट्टाळी पोळी, ठठ्ठो देर गणावण्यो, डड्डा डाबर घाटोड़ी, ढढ्ढा ढूपर पूँछोड़ी, आणा ताणा तीन लीकटी।
तत्तो तम्बोळी ताम्बो, थथ्थो थावरियो, दद्दो दिवाळ्या लीकटियो, धध्धो धन्नक छोड्याँ जाय आगै नन्यो भाग्यो जाय।
पा पा पाटकड़ी, फफ्फो फळियार को, बब्बा बाणी बैंगणियाँ, भभ्भा मूँछ कटार को, मम्मा लेकण स्यार को।
आया साया पेट को, रर्रो रावत रींकळो, लल्लो लाभ सुवाळ्याँ को, ववास्तलोक बिन्दोळी,
शशम फुलारो, षाम षाम खाखरियो, सस्सो हिंगोटो, हा हा हींदोली, दो घराँ पर बिन्दोली। क्ष त्र ज्ञ।

बारखड़ी

बरकनम् 'क', कन्नै 'का', पिछ्यूँ 'कि', अर्यूं 'की', ल्होड़े 'कु', बड्डे 'कू' इकमत 'के', दोमत 'कै', काणा लेकण मात 'को', दौ मात की कन्या 'कौ', बिशती बिन्दू 'कं', आगळ बिन्दी कक्क:।

पं. हनुमान सहाय शर्मा,
344–बी, शंकर नगर, ब्रह्मपुरी,
जयपुर–मो. : 9828561190

साबी नदी के पुनर्जीवन का प्रयास

जल बिरादरी राजस्थान
गांव आनन्दपुर,
डा. मॉढन,
तहसील नीमराणा,
जिला अलवर (राज.)

जल बिरादरी हरियाणा
गांव बघोला, डॉ. हिरवाडी
तहसील फिरोजपुर झिरका
जिला मेवात–नूँह (हरियाणा)

क्रमांक .....

दिनांक 15 नवम्बर, 2015

सेवा में,

बहन उमा भारती जी, जल संसाधन मंत्री,

भारत सरकार।

विषय : साबी नदी जल चेतना यात्रा पूर्ण होने पर ज्ञापन ।

महोदया,

जल बिरादरी राजस्थान व हरियाणा ने संयुक्त रूप से साबी नदी को पुनर्जीवित करने हेतु एक जन–चेतना का शुभारम्भ दिनांक 05 सितम्बर, 2015 को राजघाट, नई दिल्ली से किया था। यह यात्रा दो चरणों में की गई। पहला चरण राजस्थान व दूसरा चरण हरियाणा रखा गया। 5 सितम्बर, 2015 को ही हरियाणा के राज्यपाल को तथा मुख्यमंत्री को भी यह ज्ञापन भेजा। इसी दिन राजेन्द्रसिंह, जल पुरुष, ने अपनी विश्वशान्ति जलयात्रा का दूसरा चरण आरम्भ किया। इस अवसर पर रेलवे मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने कहा कि वे भी रेलवे में जल साक्षरता हेतु रेल चलायेंगे। इस यात्रा की शुरुआत में वजीराबाद पुल के पास साबी और यमुना के संगम से गांधी शान्ति प्रतिष्ठान तक पदयात्रा करके व गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में ही सभा का आयोजन करके हुई। इस यात्रा का समापन आज दिनांक 25 नवम्बर, 2015 को राजघाट पर ही रखा गया है। साबी नदी राजस्थान के सीकर जिले के अजीतगढ़ से शुरू होकर हरियाणा होती हुई दिल्ली पहुंचकर यमुना नदी में मिलती है।

यह नदी दशकों से मृतप्राय है। इसकी यात्रा के दौरान जनसम्पर्क से जो जनता की आवाज निकलकर आई, उसे आपकी सेवा में इस ज्ञापन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है :-

1. साबी नदी व उसके आसपास की जनता नदी के साथ छेड़खानी ना करे और आवश्यकतानुसार ही पानी का दोहन करे। (इसके लिए जल बिरादरी राजस्थान व हरियाणा ने अपने-अपने क्षेत्र में जन-जागरण अभियान शुरू कर दिया है।
2. साबी नदी के लिए कायम की गई भूमि की पैमाइश राज्य सरकार कराये और यदि नदी में कोई नाजायज कब्जा है, तो उसे हटाया जावे।
3. साबी नदी के दो-दो किलोमीटर दोनों ओर की जमीन से पानी का दोहन करने वाले उद्योगों जैसे-शराब, बीयर या बोतल बन्द पानी के उद्योगों को हटाया जावे, ताकि नदी पुनर्जीवित हो सके। आशा की जाती है कि आप इस ज्ञापन पर विशेष ध्यान देकर साबी नदी को पुनर्जीवित करने के पुनीत कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

प्रार्थी
अध्यक्ष,
जल बिरादरी राजस्थान
8104457226

प्रार्थी
अध्यक्ष,
जल बिरादरी हरियाणा
9416362790

साबी नदी बहाव क्षेत्र

NIIT विश्वविद्यालय, नीमराना के शोधार्थी छात्रों द्वारा किया गया साबी नदी का तुलनात्मक अध्ययन

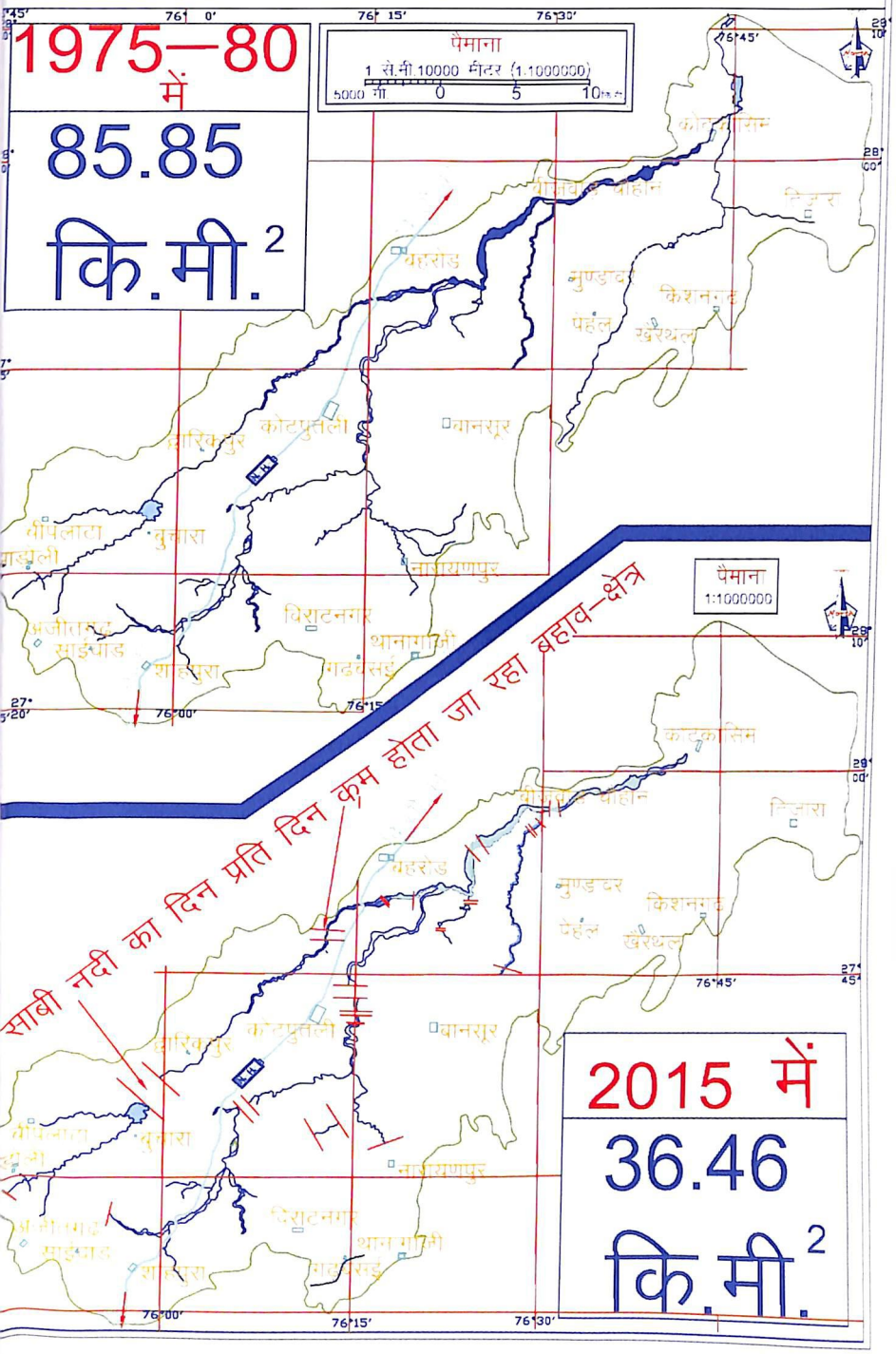

साबी नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण संरचनाएँ

वर्ष 1985 से 2016 तक

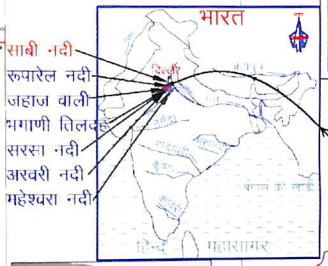

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1.	कुल जलागम क्षेत्र (दिल्ली तक)	4442 कि.मी.^{2}
2.	जलागम क्षेत्र (प्रस्तुत मानचित्र में)	4350 कि.मी.^{2}
3.	कुल जल–संरचनाएँ (त.भा.स. द्वारा निर्मित)	269
4.	नदी की कुल लम्बाई (यमुना संगम तक)	300 कि.मी.
5.	नदी की लम्बाई (राजस्थान सीमा तक)	175 कि.मी.
6.	साबी नजफगढ़ संगम (GPS)	28 31 00 N, 76 45 18 E
7.	साबी–यमुना संगम (GPS)	28 42 28 N, 77 13 50 E
8.	उद्गम में (समुद्र तल से ऊँचाई)	540 मीटर
9.	यमुना संगम मे (समुद्र तल से ऊँचाई)	210 मीटर
10.	साबी में आखिरी बार बाढ़ आई	1977 ई. में

राजस्थानी जल दोहा

जठे–जठे जळ है वठे, जीवण री मुसकाण।
बिन अनजळ मिटता दिख्या, साँसाँ रा सैंनाण ।।

पाणी सूँ मूँघो नहीं, सूँघो और न कोय।
बिन पाणी जाणी नहीं, जीवन–रचना होय।।

पाणी सूँ फसलाँ पकै, फळ–फूलाँ रो ढेर।
पाणी जद रूठै परो, तो धरती अन्धेर।।

पाणी सूँ रितवाँ बणै, पाणी तीज–तिंवार।
पाणी सूँ आभौ हँसै, धरा करे सिणगार।।

भाँत–भाँत री वनसपति, जीव–जन्तु चौफेर।
पाणी रै परताप सूँ, दीसै साँझ सबेर।।

पाणी सूँ पी पणपिया, रहण–सहण रा ढंग।
पाणी सूँ प्यारा लगे, इन्द्रधनुष रा रंग।।

पाणी सूँ परळे मचै, बिन पाणी दुसकाळ।
पाणी रै परकोप री, कर तू सार–सँभाळ।।

बाँधे चतुर सुजाण नित, पाणी पैलाँ पाळ।
पाणी गुजर्‌याँ सीस पर, कदै ढब्यो है काळ?

पाणी जद पागल बण्यो, नर ही नाखी नाथ।
राजा भागीरथ पत्यो, लायो गंगा साथ।।

पाणी सूँ मरु मुळकियो, महिमा बढ़ी अपार।
कण–कण सोनो निपजियो, खूब भर्‌या भंडार।।

आभै सूँ इमरत झरै, हरण धरा री पीर।
दाग लगावे क्यूँ भला, क्यूँ व्है दावणगीर।।

पाणी रै उजळास में, मती मैल तू घोळ।
मूँघी पड़सी बावळा, जिन्दगाणी समूँ रोळ।।

जे पाणी विष बण गयो, हरसी सबरा प्राण।।
रक्षक जद भक्षक बणै, मिले कठा सूँ त्राण?

पाणी घणो अमोल है, मती अकारथ ढोळ।
बूँद–बूँद कारज सरै, ऐसो मारग खोल।।

काळा मेघ न देखिया, धोळा कीधा केस।
एक बार तो बरस जा, इन्दर म्हारै देस।।

पाणी सूँ दोआब है, पाणी सूँ पंजाब।
बिन पाणी रा थार नै, ढाब सकै तो ढाब।।

मोती रो तो मोल ही, पाणी री पहचाण।
बिन पाणी मोती रुळै, भाटा संग समान।।

आब रही तो आबरू, रहसी आपूँ आप।
आब गई तो सब गयो, आब मिनख रो माप।।

– भगवती लाल व्यास

साबी नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण संरचनाएँ
1985 से 2016 तक

क्र. सं	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
1	खेड़ा वाला बाँध	गुवाल्दा	28	06	00.00	76	28	00.00
2	गिदावड़ा वाला जोहड़	इन्दोर	28	04	36.73	76	56	34.33
3	कँकरोट वाला बाँध	अभनपुर	28	01	06.96	76	51	47.45
4	भरथरी वाली डूँगरी की पूँछड़ी का जोहड़	भटकोल	28	00	54.43	76	52	02.71
5	पचवीर वाला जोहड़	शादीपुर	28	00	09.47	76	55	53.51
6	शादीपुर का बाँध	शादीपुर	27	59	50.89	76	55	39.65
7	सोहन नळा का ऊपरला बाँध	दमदमा	27	59	17.09	76	55	17.15
8	डोडी वाला बाँध	दमदमा	27	58	58.01	76	55	21.25
9	घासोली वाला बाँध	दमदमा	27	58	32.09	76	55	15.71
10	मिहिलाळा बाँध (महामइया वाला बाँध)	ढाकपुरी	27	58	22.69	76	55	11.53
11	नक्की वाला बाँध	ढाकपुरी	27	58	11.71	76	55	12.18
12	'कलुवा की' का बाँध	ढाकपुरी	27	58	09.01	76	55	11.10
13	नाहर खोळा का बाँध	रूपवास	27	57	47.63	76	54	43.45
14	कमरू सक्का की मेड़बन्दी	हमीराका	27	58	54.12	76	53	11.82
15	मियाँजी की ढाणी का बाँध	अलापुर	27	58	12.47	76	53	12.48
16	खोली वाला जोहड	अलापुर	27	57	58.75	76	54	02.05
17	इलियास की ढाणी का जोहड़	अलापुर	27	57	20.59	76	53	50.57
18	घदगन का बाँध	बेरियाकी का बास	27	56	58.38	76	52	32.59
19	बड़े नाले का जोहड़	मेव बास (सरहटा)	27	55	39.61	76	55	26.29
20	बड़ा जोहड़	मेव बास (सरहटा)	27	55	14.77	76	55	19.81
21	स्कूल वाला जोहड़	रहमत नगर	27	54	47.16	76	55	40.87
22	पहाड़ी के ऊपर का (काला पहाड़) जोहड़	रहमत नगर (लपाला)	27	54	45.47	76	56	00.92
23	काला पहाड़ का जोहड़	लपाला	27	54	09.15	76	55	48.76
24	खेड़ली का जोहड़	बाघोर	27	52	36.41	76	55	02.03
25	कैमली वाला जोहड़	बाघोर	27	52	26.94	76	54	29.95
26	गामका जोहड़ (गिदावड़ा में)	बाघोर	27	52	19.20	76	53	55.39
27	समसू की मेड़बन्दी	हसनपुर	27	54	20.23	76	52	25.43
28	ताजू खाँ का एनीकट–1	हसनपुर	27	54	28.91	76	52	42.42
29	ताजू खाँ का एनीकट–2	हसनपुर	27	54	31.25	76	52	39.54
30	सरदार पूरण सिंह व अमरसिंह का बाँध	एलाका	27	54	50.94	76	52	39.54
31	पचवीर वाला जोहड़	नया गाँव –खेड़ा	27	54	56.95	76	43	50.16
32	घाटी वाला जोहड़	माँचा	27	51	06.76	76	46	12.72
33	घुप्पा वाला जोहड़	माँचा	27	50	20.11	76	46	01.56
34	कटी घिरसनी वाला जोहड़	ओदरा	27	50	05.06	76	45	53.64
35	सूकल घाटी वाला जोहड़	देवता	27	48	01.37	76	45	02.88

क्र. सं	जोहड़/ बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
36	मँढी (छतरी)वाला जोहड़	तरवाला	27	50	38.72	76	41	18.24
37	मोथरिया वाला जोहड़	तरवाला	27	50	09.30	76	41	58.56
38	घाटी बीच वाला बाँध							
	(रामपाल, धन्ना गुर्जर का)	तरवाला	27	50	00.92	76	41	48.84
39	स्कूल के पास पचवीर वाला जोहड़	रायपुर मेवान	27	48	14.26	76	40	59.16
40	पचवीर वाला जोहड़	हासपुर खुर्द	27	49	57.29	76	36	18.00
41	पचवीर वाला जोहड़	हासपुर कलाँ	27	49	58.62	76	35	54.60
42	बनैठी का बाँध	बनैठी (सबलगढ़)	27	49	17.00	76	32	42.00
43	उघाड़ा जगमाल का बाँध (बूचा का)	बाझोट	27	43	11.03	76	39	46.44
44	लाम्बी पाटी का बाँध (प्रभु का)	बाझोट	27	43	01.27	76	39	43.20
45	बेड़ा वाला बाँध (प्रभु का)	बाझोट	27	42	52.42	76	39	43.56
46	थोराना जोहड़	कटारियाँ का बास	27	42	03.89	76	27	59.33
47	फूस्या चमार का बाँध	मुकुन्दपुरा	27	42	47.77	76	25	32.41
48	राम कँवार मास्टर जी का जोहड़	लाडपुर	27	43	28.02	76	24	33.73
49	शीशम वाला जोहड़ (खूँटळा नीचे)	लाडपुर	27	43	51.67	76	25	10.63
50	गूणीवाला बाँध	गुवाडाँ	27	44	33.61	76	26	00.13
51	भोमिया वाला बाँध	गुवाडाँ	27	44	39.84	76	26	21.95
52	पीपळी वाला बाँध (हरदेव का)–1	नारोल	27	45	01.73	76	27	07.49
53	राधेश्याम, बाबूलाल स्वामी की मेड़बन्दी	नारोल	27	45	00.00	76	27	13.32
54	पीपली वाला बाँध (हरदेव का)–2	नारोल	27	45	02.88	76	27	10.73
55	पीपली वाला बाँध (हरदेव का)–3	नारोल	27	45	06.23	76	27	09.43
56	पीपली वाला बाँध (हरदेव का)–4	नारोल	27	45	00.11	76	27	09.18
57	पीपली वाला बाँध (हरदेव का)–5	नारोल	27	45	03.60	76	27	06.23
58	कूण्डली वाला जोहड़ (शीशराम का)	देवसरण	27	45	47.70	76	25	08.29
59	धवाड़ी का रोंध वाला जोहड़	देवसरण	27	45	42.19	76	25	00.66
60	जगदीश की मेड़बन्दी	मुगलपुर	27	45	48.66	76	23	38.40
61	पूरण की मेड़बन्दी	मुगलपुर	27	45	42.72	76	23	06.06
62	मुगलपुर का जोहड़	मुगलपुर	27	45	46.01	76	22	53.11
63	ढाणीवाला जोहड़	मुगलपुर	27	45	51.12	76	22	41.77
64	रोहताश की मेड़बन्दी	बबेड़ी	27	48	13.38	76	22	30.00
65	बोदू का बाँध (एनीकट)	बबेड़ी	27	48	41.10	76	21	31.50
66	गुरुदयाल का बाँध	बबेड़ी	27	49	45.06	76	20	26.16
67	छींतर का बाँध	बबेड़ी	27	48	57.42	76	20	37.44
68	धनसी का बाँध	बबेड़ी	27	48	52.14	76	20	32.16

क्र. सं	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
69	मातादीन स्वामी की मेडबन्दी	बबेड़ी	27	48	49.32	76	20	41.40
70	रामतलाई	बबेड़ी	27	48	33.60	76	20	42.42
71	रामशरण कबाड़ी का बाँध–1	बबेड़ी	27	48	39.48	76	20	32.58
72	रामशरण कबाड़ी का बाँध–2	बबेड़ी	27	48	40.68	76	20	32.94
73	श्योनारायण का बाँध	बबेड़ी	27	48	40.20	76	20	13.50
74	मातादीन मास्टर (खाती) की मेड़बन्दी	बबेड़ी	27	48	36.36	76	20	03.48
75	भम्मू का बाँध	बबेड़ी	27	48	33.48	76	20	20.10
76	गणेश की मेड़बन्दी	बबेड़ी	27	48	31.92	76	20	21.72
77	जयदयाल का बाँध	बबेड़ी	27	48	29.10	76	20	20.34
78	डोक का नाला में गीदा का बाँध	बबेड़ी	27	48	18.42	76	20	23.10
79	काली घोड़ी की जोहड़ी	बबेड़ी	27	48	16.44	76	20	54.72
80	पीर बाबा का जोहड़	बबेड़ी	27	48	00.00	76	20	44.34
81	जसवंत सरपंच का बाँध	बबेड़ी	27	48	05.70	76	20	03.78
82	लालू की मेड़बन्दी	बड़ा कुआ की ढाणी	27	48	00.90	76	19	54.01
83	रोताश का बाँध	बासड़ा	27	47	26.70	76	17	26.28
84	विक्रम सिंह की मेड़बन्दी	मोरोड़ी	27	47	01.03	76	18	50.83
85	धानका वाला जोहड़ (गोघाट)	मोरोड़ी	27	46	58.26	76	19	30.07
86	बनवारी लाल कप्तान की मेड़बन्दी	मोरोड़ी	27	46	46.85	76	19	20.28
87	छावड़ियों का बाँध	छावडियों की ढाणी	27	44	51.60	76	18	36.00
88	विशालू का जोहड़	विशालू	27	37	14.22	76	21	55.44
89	नीमला का जोहड़	लेकड़ी	27	37	56.21	76	23	03.59
90	बाजणी भाट का एनीकट	कल्याणपुरा	27	36	40.55	76	25	28.61
91	पचवीर वाला जोहड़ (स्कूल के पास)	कल्याणपुरा	27	36	56.27	76	26	04.74
92	शिम्मूड़ी वाली जोहड़ी	गुढ़ा कल्याणपुरा	27	36	31.21	76	26	31.45
93	पीपळी वाली नळी का बाँध	गुढ़ा कल्याणपुरा	27	34	13.51	76	27	25.45
94	बाँसकुआ का जोहड़	गुढ़ा कल्याणपुरा	27	34	09.41	76	26	13.81
95	राम तळाई के ऊपर का बाँध	रैयाँ की ढाणी	27	34	04.08	76	23	01.50
96	शिम्मू की मेड़बन्दी	गढ़ी मामोड़	27	33	05.62	76	20	39.12
97	मामोड़ का जोहड़	गढ़ी मामोड़	27	34	05.40	76	21	06.96
98	मामोड़ का कुण्ड	गढ़ी मामोड़	27	34	11.58	76	21	03.18
99	विमला की मेड़बन्दी	गढ़ी मामोड़	27	34	08.34	76	20	39.30
100	हीरा की मेड़बन्दी	गढ़ी मामोड़	27	34	09.24	76	20	35.64
101	गोगड़ी वाला जोहड़ (स्कूल के पास)	गढ़ी मामोड़	27	34	14.22	76	20	18.48
102	हवाड़ा का जोहड़	गढ़ी मामोड़	27	34	55.14	76	20	55.86
103	लूल्याळी का बाँध	गढ़ी मामोड़	27	34	54.60	76	20	30.06

क्र. सं	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
104	प्रभू स्वामी का बाँध–(बालहड़ा)	गढ़ी मामोड़	27	35	00.66	76	20	24.60
105	शिवलाल चमार का बाँध	गढ़ी मामोड़	27	35	08.88	76	20	15.18
106	चौथमल की मेड़बन्दी–1	कोठ्याँ	27	35	10.93	76	19	18.84
107	चौथमल की मेड़बन्दी–2	कोठ्याँ	27	35	13.49	76	19	16.07
108	चौथमल का एनीकट	कोठ्याँ	27	35	12.01	76	19	11.39
109	बाबाजी का जोहड़– (फूट्या जोहड़ा)	बासदयाल	27	38	03.60	76	16	03.96
110	दगचन का नला का बाँध (हनुमान रावत का)	बुर्जा	27	34	18.77	76	16	22.73
111	छींतर व लीला की मेड़बन्दी	बुर्जा	27	34	12.11	76	15	42.23
112	किरसन का बाँध	बुर्जा	27	33	51.84	76	16	35.76
113	देवकरण की मेड़बन्दी	बुर्जा	27	33	49.50	76	16	25.07
114	गढ़ी वाला बावरिया की मेड़बन्दी (हजारी की)	बुर्जा	27	33	45.11	76	16	31.26
115	काँकरिया वाला बाँध (शीशराम का)	बुर्जा	27	33	30.78	76	16	26.51
116	ओम प्रकाश जोगी का बाँध	बुर्जा	27	33	20.70	76	16	27.73
117	लाला जोगी का बाँध	जोगी की ढाणी	27	33	12.71	76	16	22.98
118	बावरिया की मेड़बन्दी	बावरिया की ढाणी	27	33	10.80	76	16	39.54
119	रमेश बावरिया का बाँध	बावरिया की ढाणी	27	33	07.92	76	16	33.50
120	श्रीराम का एनीकट	बिलाळी	27	32	58.09	76	15	19.08
121	धूणीलाल शर्मा की मेड़बन्दी	बिलाळी	27	32	53.16	76	14	06.90
122	घटोकर का जोहड़ (स्कूल के पास)	बड़ा गाँव	27	32	53.63	76	12	57.13
123	रोताश का एनीकट	नारायणपुर	27	30	39.48	76	17	20.40
124	पुरुषोत्तमदास जी का एनीकट	नारायणपुर	27	30	57.36	76	18	20.10
125	महादेव जाट का एनीकट	झीड़ा की ढाणी	27	28	56.17	76	19	22.33
126	छाजू गुर्जर का एनीकट (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	48.61	76	19	33.35
127	माँगीलाल की मेड़बन्दी (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	34.97	76	19	26.87
128	झूण्डाँ का बाँध (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	29.89	76	19	13.80
129	कान्हा का बाँध–1 (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	29.17	76	19	14.23
130	कान्हा का बाँध–2 (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	28.31	76	19	13.87
131	कान्हा का बाँध–3 (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	27.55	76	19	13.37
132	झूण्डाँळी का बाँध (माँगीलाल का) (बसई जोगियान)	रामा की ढाणी	27	28	25.61	76	19	22.80

क्र. सं	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
133	मार्या का जोहड़	तिबारा	27	27	26.55	76	18	29.41
134	गाँव नीचे का जोहड़	दुहार माला	27	25	40.00	76	20	43.48
135	खुर्रा की जोहड़ी (सुरजनपुर)	बसई अभयराम	27	26	58.20	76	17	26.16
136	मानकोट का जोहड़	मानकोट	27	26	20.15	76	15	53.28
137	पीपल वाली जोहड़ी	मालूताना	27	27	38.45	76	15	33.35
138	मतादीन का एनीकट	मालूताना	27	27	50.04	76	14	53.67
139	रावल वाला जोहड़ी	मालूताना	27	28	09.23	76	15	03.42
140	झूँतराँळी जोहड़ी (गोयल्याँ की ढाणी)	मालूताना	27	29	40.20	76	15	04.68
141	बागाळा का बाँध	रड़ाँ (मनफर)	27	27	47.77	76	13	49.73
142	काळा खेत का जोहड़	काँखराणा	27	29	04.68	76	11	19.92
143	नीम वाला जोहड़	तालू का बास	27	29	39.60	76	11	24.90
144	स्कूल वाला जोहड़	तालू का बास	27	30	27.48	76	10	50.40
145	कुण्ड़ केरा का जोहड़ (भोजपुरा का जंगल)	भोजपुरा	27	29	47.33	76	09	24.30
146	बावरिया वाला जोहड़	देवली	27	29	18.00	76	09	58.02
147	भैंरूवाली जोहड़ी	टोरड़ा ब्राह्मणान	27	31	11.22	76	08	46.44
148	टोरड़ा वाला जोहड़ (ब्राह्मणों का)	टोरड़ा ब्राह्मणान	27	30	52.38	76	08	32.16
149	ग्यारसा की मेड़बन्दी–1	बरड़ा में गूजरों की ढाणी	27	30	31.38	76	08	25.80
150	ग्यारसा की मेड़बन्दी–2	बरड़ा में गूजरों की ढाणी	27	30	29.22	76	08	25.14
151	ग्यारसा की मेड़बन्दी–3	बरड़ा में गूजरों की ढाणी	27	30	26.40	76	08	25.02
152	घीसाराम, पालाराम का बाँध	बहड़ा की ढाणी	27	30	35.04	76	07	55.08
153	बावरिया का बाँध	टूँटाला की ढाणी	27	30	35.40	76	07	33.90
154	नयाबासी (अहीरों का जोहड़)	जयसिंहपुरा	27	30	34.44	76	07	17.82
155	हरभगत का जोहड़	जयसिंहपुरा	27	30	37.32	76	06	59.46
156	चन्दर की मेड़बन्दी	जादू का बास	27	29	57.37	76	08	37.02
157	काँकड़ वाली जोहड़ी	मक्खन की ढाणी	27	29	53.64	76	07	58.80
158	रामचन्दर की मेड़बन्दी	बरड़ा की ढाणी	27	29	54.90	76	07	56.94
159	ठाकुरों वाला जोहड़	बरड़ा की ढाणी	27	29	52.44	76	07	52.68
160	शंकर बळाई का बाँध	बरड़ा की ढाणी	27	29	46.14	76	07	47.10
161	देवकरण गुर्जर का जोहड़; (खाळ का जोहड़)	बुर्जा की ढाणी	27	29	34.56	76	07	31.98
162	नाई वाली जाँटड़ी का जोहड	खरबूजी	27	29	31.56	76	07	31.02
163	टाण्डावाला जोहड़–1	खरबूजी	27	29	28.02	76	07	13.02
164	टाण्डावाला जोहड़–2	खरबूजी	27	29	26.58	76	07	10.68
165	जरखाँ वाला नाळा का बाँध	खरबूजी	27	29	21.00	76	07	09.42

क्र. सं	जोहड़/बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
166	पाटीवाला बाँध	सूरजमल की ढाणी	27	29	18.42	76	07	04.26
167	पाटीवाला जोहड़ (स्कूल के पास)	सूरजमल की ढाणी	27	29	20.52	76	06	46.14
168	बुँगला वाला जोहड़	छींतोली	27	28	57.06	76	07	09.54
169	धूणीलाल गुर्जर का बाँध	छींतोली	27	28	49.50	76	07	10.44
170	डूँगरी का ठोड का जोहड़	छींतोली	27	28	29.84	76	07	41.76
171	कोठी पीछला जोहड़	जादू का बास	27	28	31.08	76	08	48.66
172	दरबा वाला बीणाँ का बाँध	जादू का बास	27	28	16.32	76	09	03.84
173	बामणाँ का कुआँ का बाँध	देवली	27	28	18.54	76	09	23.94
174	पारसा वाला नाला का बाँध सोठ्याना	जादू का बास	27	28	07.20	76	09	34.50
175	घाटी वाला बाँध	सोठ्याला	27	27	46.92	76	09	47.16
176	काळा खेत का बाँध सोठ्याना	जादू का बास	27	27	37.92	76	09	18.36
177	मस्तराम बाबाजी का जोहड़–1	जादू का बास	27	27	43.92	76	09	00.72
178	मस्तराम बाबाजी का जोहड़–2	जादू का बास	27	27	47.82	76	08	53.94
179	कुण्डाळा का जोहड़	जादू का बास	27	27	54.18	76	09	09.84
180	झोंपड़ी वाला बाँध	जादू का बास	27	28	01.32	76	08	58.56
181	सुरजा की मेड़बन्दी–1	जादू का बास	27	28	07.92	76	08	54.96
182	सुरजा की मेड़बन्दी–2	जादू का बास	27	28	07.98	76	08	56.22
183	जयराम की मेड़बन्दी	जादू का बास	27	28	08.94	76	08	51.12
184	हीरा की मेड़बन्दी	जादू का बास	27	28	12.96	76	08	49.32
185	शैतान की मेड़बन्दी	जादू का बास	27	28	13.55	76	08	29.84
186	भौंरा की मेड़बन्दी	जादू का बास	27	27	58.86	76	08	35.52
187	कैरड़ा वाली जोहड़ी	जादू का बास	27	27	45.18	76	08	38.40
188	सड़क के मोड़ का जोहड़	बहरामपुर	27	27	48.72	76	08	25.08
189	काळा भाटाळी का जोहड़	गोगेरा	27	27	39.12	76	08	21.78
190	कुण्ड्याळा की जोहड़ी	गोगेरा	27	27	17.04	76	08	21.96
191	राम तळाई	गोगेरा	27	25	51.42	76	07	47.64
192	कजला वाली मेड़बन्दी–1	गोगेरा	27	27	19.35	76	07	57.27
193	कजला वाली मेड़बन्दी–2	गोगेरा	27	27	20.75	76	07	58.12
194	नाई वाला बीणाँ का जोहड़ (खारया का जंगल)	छींतोली	27	27	38.28	76	07	24.06
195	चौड़ का मुहाळाँ ऊपर का बाँध	छींतोली	27	28	00.18	76	07	45.12
196	बमणाळा जोहड़ (भैंरू डूँगरी के पास)	बाण्या का बास	27	28	06.35	76	06	51.73
197	कुआळा की चौड़ का जोहड़	निंझर	27	27	20.45	76	00	00.00
198	गणेश जाट का बाँध	बयावास	27	26	47.83	76	06	03.00

क्र. सं	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
199	शंकर माली का बाँध	बयावास	27	26	10.61	76	05	34.68
200	डूँगरी वाला बाँध	ढेरड़ा की ढाणी	27	26	08.70	76	05	03.78
201	जगदीश वाला बाँध (डूँगरी)	बयावास	27	25	59.27	76	05	04.08
202	सुन्दर लाल गुर्जर का बाँध	बयावास	27	25	45.01	76	04	39.96
203	बीलूण्ड़ा में मातादीन का बाँध	बयावास	27	25	39.54	76	05	52.68
204	प्रभु शरण का बाँध	बीलवाड़ी	27	25	23.63	76	05	51.48
205	प्रभु शरण की मेड़बन्दी	बीलवाडी	27	25	25.21	76	05	58.20
206	देवी माता का जोहड़	बीलवाड़ी	27	25	18.95	76	06	34.68
207	सुवा फार्म का जोहड़ (घाटी)	बीलवाड़ी	27	25	10.13	76	06	50.70
208	फूट्या जोहड़	बीलवाड़ी	27	24	39.78	76	06	06.36
209	श्याम बाबा मन्दिर के पास का जोहड	चतरपुरा	27	25	22.91	76	03	50.28
210	रामनाथ सरपंच का बाँध की ढाणी	उदय सिंह	27	24	09.25	76	04	28.74
211	पीळी जोहड़ी	बूजा	27	24	40.43	76	10	56.10
212	सुकलाळा की जोहड़ी	बूजा	27	24	56.70	76	12	04.25
213	रामतळाई	बूजा	27	24	27.80	76	11	43.33
214	बूजावाली जोहड़ी	बूजा	27	24	15.91	76	12	12.49
215	पीठाळा की जोहड़ी	बूजा	27	24	18.90	76	12	21.60
216	किशन गुर्जर का एनीकट	बूजा	27	24	03.53	76	12	21.64
217	गोपाल गुर्जर का एनीकट	बूजा	27	23	38.83	76	12	19.33
218	नई जोहड़ी	बूजा	27	23	30.55	76	12	10.80
219	भीण्डीरुख जी के ऊपर वाला एनीकट	नाँगलबानी व गढ़ बसई	27	22	34.32	76	12	15.05
220	भीण्डीरुख़ जी का कुण्ड़	नाँगलबानी व गढ़ बसई	27	22	35.51	76	12	15.01
221	नई जोहड़ी (भीण्डीरुख जी की)	नाँगलबानी व गढ़ बसई	27	22	33.87	76	12	18.89
222	भीण्ड़ीरुख जी का नीचे वाला बाँध (बोध गाँव)	गढ़ बसई	27	22	41.27	76	12	40.21
223	गुरु–सागर (रींछी वाला बाँध)	गढ़ बसई	27	23	40.31	76	13	30.72
224	रूड़्या काण्याँ की चौड़ का जोहड़	गढ़ बसई	27	23	47.11	76	13	48.90
225	बीड़ाँ वाली जोहडी	गढ़ बसई	27	23	45.85	76	14	13.81
226	बीड़ाँ वाला बाँध	गढ़ बसई	27	23	46.75	76	14	16.01
227	श्यामी की बावड़ी	गढ़ बसई	27	23	52.98	76	14	20.87

क्र. सं	जोहड़/ बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
228	भोमिया वाला बाँध	गढ़ बसई	27	24	00.29	76	13	52.43
229	बावा वाला बाँध	गढ़ बसई	27	24	02.34	76	13	50.52
230	नारेठा का नीचे वाला एनीकट	गढ़ बसई	27	24	05.47	76	13	45.55
231	नारेठा का ऊपर वाला एनीकट	बाली की ढाणी	27	24	13.57	76	14	27.60
232	बाळी की जोहड़ी	बाली की ढाणी	27	24	39.67	76	13	46.31
233	मनसा–सागर	गढ़ बसई	27	24	08.89	76	14	10.39
234	कुण्ड–(ब्रह्माणी माता के नीचे)	गढ़ बसई	27	24	13.79	76	14	14.03
235	कुण्ड के पास वाली जोहड़ी	गढ़ बसई	27	24	14.33	76	14	14.03
236	लीलाराम धानका का एनीकट	गढ़ बसई	27	23	52.37	76	15	10.80
237	कालीदास जी की मेड़बन्दी	सालेटा–बसई	27	24	06.66	76	15	06.66
238	चरी वाला खेत की मेड़बन्दी	सालेटा	27	24	20.81	76	14	57.73
239	बीस बीघा वाला खेत की मेड़बन्दी	सालेटा	27	24	21.49	76	15	00.18
240	बावड़ी वाले खेत की मेड़बन्दी (नो बीघा वाला)	सालेटा	27	24	24.01	76	15	04.03
241	कालीदास जी का बाँध	बोड़या की ढाणी	27	24	30.00	76	15	01.00
242	काळीराड़ी में कैलास की मेड़बन्दी	हींसला	27	25	02.93	76	15	27.61
243	ढिगारिया का जोहड़	ढिगारिया	27	24	39.35	76	16	05.41
244	जाळखी वाला जोहड़	नाथूसर	27	24	05.22	76	17	13.74
245	बावड़ी वाली जोहड़ी	रूपू का बास	27	23	20.58	76	16	06.17
246	गळगटा की जोहड़ी	झाँकड़ी	27	22	06.75	76	14	42.91
247	बिहारीदास जी का जोहड़ ढाणी गुढ़ा	मालियों की	27	21	27.00	76	15	49.00
248	खारकाँ वाली जोहड़ी	नाँगलबानी	27	21	51.37	76	12	49.25
249	अरण्याळी जोहड़ी	नाँगलबानी	27	21	47.23	76	12	16.63
250	बहणक्याळा बाँध	नाँगलबानी	27	21	28.98	76	12	40.03
251	रामल बाँध	नाँगलबानी	27	21	39.78	76	13	07.03
252	माँड्याळा बाँध	नाँगलबानी	27	21	38.81	76	12	42.66
253	बाबाजी वाली जोहड़ी	नाँगलबानी	27	21	18.11	76	12	43.96
254	हालाळा का बाँध (रघुवीर सिंह का)	नाँगलबानी	27	21	15.01	76	13	13.01
255	धाड़क्याळा बाँध (शैतान सिंह का)	नाँगलबानी	27	21	07.99	76	12	52.67
256	सुकलाँ वाली जोहड़ी	धाबाळा की ढाणी	27	21	03.89	76	12	29.45
257	कचोळी वाली मेड़बन्दी (कल्लू, बालू की)	धाबाळा की ढाणी	27	21	00.36	76	12	38.88

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशांतर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
258	नेताळा की मेड़बन्दी (कालू की)	धाबाळा की ढाणी	27	20	53.99	76	12	36.00
259	काळा पापड़ा की जोहड़ी (सड़क के पास)	काळा पापड़ा	27	20	51.54	76	12	43.56
260	खोरी वाली जोहड़ी	खोर्याँ की ढाणी	27	20	32.53	76	12	37.73
261	मलगम वाला बाँध	मिलकपुर तुर्क						
262	दावीवाला बाँध	मिलकपुर तुर्क						
263	साँकड़ा बाबा का बाँध	मिलकपुर तुर्क						
264	रहमान खाँ का बाँध	मिलकपुर तुर्क						
265	भांजा वाला बाँध	नंगला						
266	भलेसर का एनीकट	भलेसर						
267	सफ़तखान की मेड़बन्दी	भलेसर						
268	ककराली मोड़ा का बाँध	भलेसर						
269	स्कूल वाली जोहड़ी	बीजकहेड़ा						

हमारा संकल्प

पानी जहाँ दौड़ता है, वहाँ इसे चलना सिखाना है।
जहाँ चलने लगे, वहाँ इसे रेंगना सिखाना है।
जहाँ रेंगने लगे, वहाँ इसे ठहराना है।
जहाँ ठहर जाये, वहाँ इसे धरती के पेट में बैठाना है।
ताकि नज़र न लगे सूरज की और जब कभी सूखा और अकाल आये तो मर्यादित होकर इसी जल से जीवन चलाना है।

लीडरों की धूम है, फॉलोअर कोई नहीं।
हैं सभी जनरल यहाँ, आख़िर सिपाही कौन है।।

मेवात में जोहड़

सुँतरौळी जोहड़ी, गोयल्याँ की ढाणी (मालूताना)

मनसा सागर गढ़ बमड़ई

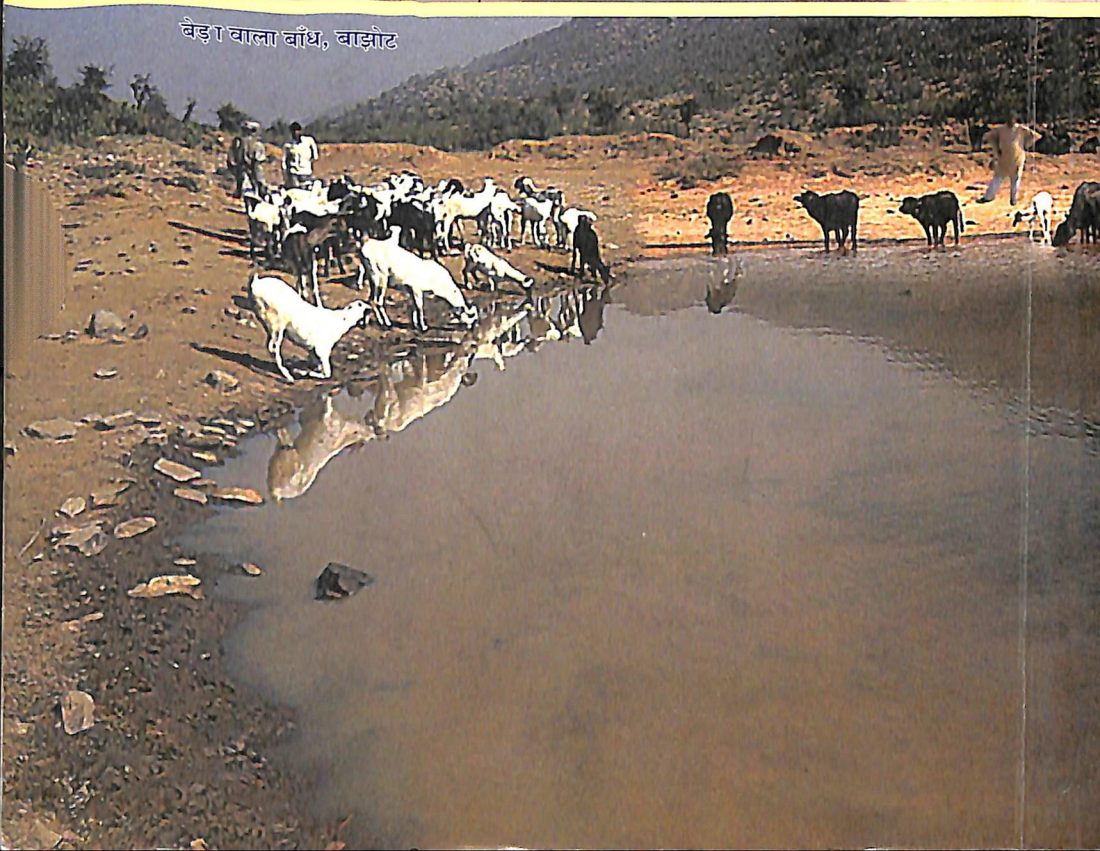

बैड़ा वाला बाँध, बाझौट